

रेत से हेत

१

शिक्षक दिवस, 1986

राजस्थान के सृजनशील शिक्षकों की राजस्थानी रचनाओं का सङ्कलन



शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए

कृष्ण जनसेवी एण्ड को.

दाऊजी मन्दिर भवन, बीकानर (राज)



रेत रो हेत

सम्पादक
हीशालाल माहेश्वरी

शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर

प्रकाशक	शिक्षा विभाग राजस्थान बीकानेर के दिग्गज कृष्ण जलसेवी एण्ड कोटा दाऊदो मन्दिर भवन बीकानेर
मूल्य	छात्रों के लिये पचास पैसे
सावधानी	पारम भस्माती
सम्बरण	शिक्षा दिवस 1986
मुद्रक	साधना प्रिन्स मुगल निवास बीकानेर

रेन रो हल सम्पादक हीरालाल माहेश्वरी (राजस्थानी विविद्या) मूल्य 16 25
RETRO HET Price Rs 16 25

आमुख

शब्द अपनी यात्रा स्वयं करते हैं, पर आज जो बुद्ध छप रहा है, वह बच प्रासंगिक होगा, इसे बाल के अलावा कोई नहीं जान सकता। साहित्य में अभिव्यक्ति बाधित निएया से ऊपर हाती है। पक्ष विपक्ष की यात्राएँ अपने युग के साथ उपराम ग्रहण करती हैं, तब साहित्य में केवल वही शेष रह जाता है जो मानवीय हाता है। मानवीयता के इसी सावभौम पक्ष को विविध रूपा में उजागर करने के लिए हमारे राज्य में शिक्षक अपनी रचनाधर्मिता को सजोय बपों से आगे बढे चले जा रहे हैं। मुझे बताते हुए खुशी है कि हमारे सृजनशील शिक्षक साहित्यकारा की अब तक 96 पुस्तकें विभाग द्वारा प्रवासित हो चुकी हैं।

5 सितम्बर, शिक्षक दिवस के रूप में पूरे राष्ट्र में मनाया जाता है। राजस्थान में शिक्षक के लिए अपनी लेखन क्षमता का अभिव्यक्ति देने का यह अवसर है। इसी दृष्टि से आज के पुनीत पव पर शिक्षक की पाच कृतियाँ आप लीगा के हाथा में लीपने का गौरव मुझे मिला है। हमारे प्रात के मनीषी साहित्यकारा ने इन्हे सपादित किया है। य सभी

साहित्यकार भारतीय साहित्य में अपनी अनुपम देन के लिए विख्यात हैं।
ये पाँच संग्रह इस प्रकार हैं—

- | | | | |
|---|----------------|------------------|--------------------------|
| 1 | ढाई जखर | कहानी संग्रह | सपा आलमशाह खान |
| 2 | रेत का घर | कविता संग्रह | सपा प्रकाश जैन |
| 3 | रेत के रतन | बाल साहित्य | सपा मनोहर प्रभाकर |
| 4 | रेत रो हेत | राजस्थानी विविधा | सपा हीरालाल माहेश्वरी |
| 5 | बूद बूद स्याही | गद्य विविधा | सपा पुरुषोत्तमलाल तिवारी |

उक्त कृतियों में जो कुछ प्रकाशित हुआ है उसकी शक्ति और सामर्थ्य उन लेखकों की है और वह इन कृतियों में निहित है। मुझे केवल इन्हें प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मैं साहित्य सत्कार के समक्ष इन्हें विनीत भाव से प्रस्तुत करता हूँ।

तारा प्रकाश जोशी

शिक्षक दिवस, 1986

(तारा प्रकाश जोशी)

निदेशक

प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा

राजस्थान बीकानेर

दो आखर

राजस्थान र मृजनधर्मो अध्यापका रा अ चितराम पाठका न सूपता धका माँ घणो हरग अर कोड है । अध्यापका रो र्वास दर राज र गाँवाँ ताँई है । राजस्थान री जागी धरती री माची मत जाणणियाँ धी र मुग दुग नँ गुगतणिया—अणभ नरणिया अर आखरी म माड र सगळा ताँइ पूचावणियाँ अ अध्यापक ई हुवै । आँ री साधना अर अभाव तो साव चीड ई है । नदे वदाग माँय गाँरला अर ईनला-वीनना दवाव रव जिवा मारा । मासा सारु वी न की पढणो इ घघ री नियति है । ओ सगळा जुग धम निभावताँ धकाँ वँ आपर अतस न आखरी म उजागर वर आ घणी सरावण जाग वात है । अणभ अर कथ्य री ईमानदारी सिरजण री अमूच दात है । अ दोनू विणी चितराम री आत्मा है । अणभ हीण वात धोयी हुव अर बिना ईमानदारी वा विसवास्त जोग वण कोनी । अणभ अर ईमानदारी साथ अध्ययन रो उजास वाणी न निम्मार देव । आँ रो आसरो ले र जद मजेडी, कटेडी छटेडी साप सुयरी भापा म वध र कोई चितराम सामी आव, तो वो घणो महताऊ हुव । मुरसरी री माळा रो वो घणो अणमोला मोती वणै ।

इ सगह री रचनावाँ, सवा सौ र नडी तडी रचनावाँ माँ सू टाळडी है । पोधी र पाना री सीव देगता धका घणी सातरी फूटरी रचनावाँ छोडणी पडी । उ रो मन म घणो दुख है । मानीता जूना लिखारा र साथै साथै नूआ लिखारा भी आपरी कलम रो चमत्कार दिवा रया है अर घणो चाखो दिवा रया है । आ सगळा री, सगळी विवावा मे एक एक टाळवी रचना भी लेवाँ तो इस्यै एक सग्रह सू पार पड कोनी । घणा नही ता दा इस्या सग्रह—गद्य अर पद्य रा—छपणा चाईँत ई । 'त्रिविधा' छपा'र राजस्थान सरकार रो शिक्षा विभाग राजस्थानी र

सवधन रो घणो मह्ताळ अर सरावण जोग काम कर रियो है । अब एक और सायरो साल म दो पोच्चा काढण रो मिल ज्याव बै सू, तो ई साहित्य रो जोर घणी नेवा हुव । शिक्षा विभाग न जा मेरी अरनाम है ।

गद्य र पेट जायेडा चितरामा रो बात ।

'सातू सुख' कहाणी मे भवरलालजी 'भ्रमर' दिमावरा म विणज गोपार करणिय बाणिय रो जोडीदार हीरा र अणकैय, अणबोलेय दुख न परगास्यो है । लोका र साम तो सासू'र नणद हीरा रो जी-घाप'र बडाई कर पण माय ई माय वी न कोस । ई रोसण रो न छेकड आपरी खिमता पिछाणण रो जीवतो चितराम, भ्रमर' माडनी है । हीरा जिस्ती बीनण्या घणाई इस्या घरा म मिळ ।

एक पाव दारू' म नसिहजी राजपुरोहित नश मू हुई बरवादी अर तिहाज-मरम न काण कायदा र मिटत बीहार रा माडणा माडना है । फतजी दारू र नश मे तेजिय रो मद सारू जाव अर खून कर वठ । इ रो फळ भुगतता भुगतता वी रो जिनगाणी आधमणी होज्याव । गांव रो टेढी पाधरी धरती माय कोरेडा ज माडणा सोवणा लाग अर चितन सारू मजबूर कर ।

नीम रो छाव' म शिव मृदुल जाज र सरकारी दफतरा र काम काज अर रीत नीत रो साचीणो र सागीडो खाको खीच्यो है । इ मे काम चोरी अर बेईमानी रा जवरा हाका न ईमानदारी रो सिसक्या सुणीज ।

'आसवासण' (जाशवासन) आज रो राजनीति रो पै ता गुर है । आ एक सायरा है जिक सू नेताई रो डोल बाजता रव । हनुमानसिहजी पूनिया ई नाम रो कहाणी मे इ बाजत डोल रो पोल चाड कीवी है, साच र दो आखग मू ।

विणज गोपार अर कळ कारखाना रो धुरी ईमानदारी है अर होवणी चाईज । ईमानदारी—मालिक रो, चाकर रो न चीज रो । ई सू ई साल जम । ईया ता ईमानदारी रा पहाडो गोपारिया अर फकटी—मालवा न ई रटापो जाव, पण सबक' कहाणी म छगनलालजी व्यास भिवक रा दूजो पासो उजागर करघो है । मेठ नटवरलाल आपर कारिद हरिय न आपर कारमान र तेल म पाणी मिला वतो पकडत्य, पण आज र पुलिस तत्र मे साच साव उतटीज । एगे सरा विवरा कहाणी म दियो है ।

'गिरमाधारी' म वृष्णकुमारजी कौशिक आज र अध्यापना र काम काज, आपनी व्योहार अर गुमान मगज रो बोलतो बतळावतो चित्राम माडघो है । इस्कूल तो हैडमास्टर अर बूजा मास्टरा र रळ मेळ अर स्नेह प्रेम मू ई चोगी तरा पाल । आ र अभाव अर किणो गिरमा रो टक रा काद नतीजा नीकळ आ र कहाणी म साव दरमायो है । फक्त इ अर इम्य अध्यापना विष मावरजी दग्धा रो ग्य पाघो एक दुनिया म्हारी' सामे आ तुकी है ।

मिनख रा रूप यारा यारा हुव । नात रिश्ता सू, घघ सू, कुर्सी सू, पोजीशन मू-आद । छोदूसिह पुलिस हाळा है वर्दी प'र'र बो घणा आकड अर आपर डब पडणिया सागळा माथ हुकम चलाव । पण मिनख रं रूप म यो प्रिस्तोई निमळो, सहज अर सेवाभावी है । आवरण र नीच दवेड मिनख र मन रो, बी र साच रूप रो सातरो चितराम भीखालालजी व्याम 'छोटूमिध' कहाणी मे माडची है ।

दायजो ममाज मे कोड दाड बधतो ई जावँ । ई कारण गरीब रो ता हाल ई बेहाल होज्यावँ । केसू गाव मे निरसाणी करतो अर तुषको मिस्तो लावतो हो । पण दायज र कारण बी नै सो' की बेचना पडघो अर जैपुर म बो रिक्शो चलावण न मजबूर हुयो । केसू र मम न उजास्यो है श्री रामस्वरूपजी 'परेश' 'दायज रो घाव मे' ।

'भाग्योदय' मे पुष्पलताजी कश्यप दपतर म काम करणिय एक साधारण आदमी अर बी र परिवार रो मादी हालत दरसाई है । अभावा म जोतक्या मू आपर भाग जाणण रो लुगाइया री मनसा उल्टा अभाव ही वधाव, आ ड सू साव लग्गाव ।

कोई मोटो बगलो चिणा'र वी मे रवण मू ई सुखी कोनी हुयँ । मोट बगल र घणी जीवण काक न वी रो छोरो आय दिन बूट । इ बात रो कारण अर वी री जोडायत घणो समझ । दोनू-लुगाई आदमी हाड फोड मजूरी कर, आपरो पेट काट पण आपर छोर ताजूर्सा न पढाव । फळ आहुगो के एक दिन ताजूर्सा डाक्टर घणग्या अर वी न रवास सारू सरकारी बगलो मिल्यो । आगली पीटी रं निर्माण नै वी र सुख माथ अभावा री जिनगाणी डबीजज । 'मोटो बगलो' कहाणी म मुहम्मद जी बुरणी ओईज लेखो योग्यो घणै प्रभावी ढग मू करयो है ।

इस्या भी गाव है जठ लूठा छोग लाठी रा राज चलाव वाँ र टावरा न नूवो वायरो के लाग्यो, स' मरजादा न मान काण तोड नाग्यी । गाव र स्य छोरे रामलाल री बहण री इज्जत रलियामेट कर दी । 'अधारो' कहाणी म मीठालात जी खत्री रामलाल र मनर री दूखती रगा, समाज'र पुलिस र ढाळ रो सैजोर विवरो दीयो है ।

'माटी भय जिनावरा, म जनकराजजी पारीक एक नूई जमीन माथ सिरजणा कीवी है । 'सीगी लवा, जोका लवा' रा हलो गाव मू ल र बडा बडा सहरा ताइ आज भी बदे बदास सुण न मिल । ई तरा 'गोदणा गुनात्यो, नाव मडात्यो' री मादी मोटी जवाज भी बद नदास काना म पड ज्याव । आ तागा री जिनगाणी, रवास, रीत-नीत अर सुख दुख रा सातरा'र सरजीवण चितराम पारीकजी माडघा है अर वा री निन्नू बोलचाल री भाषा रा दरसाव देता घका

माड्या है। आ घणी महताऊ बात है। ई कहाणी री पिछाण यारी ई ज है। कहाणी रूप म ता नही पण दस्य पेशवर लोग रा सावणा चितराम निरा बरसा पली मुरलीधरजी व्यास 'जूना जीवता चितराम' मे माड्या हा।

रूपसिंहजी राठोड 'दूजो व्याव' म कहाणी तो नही कहाणी री विगत—टावडी र व्याव री विगत—घणी ओपती' र फवती माडी है। इ रा अर रामस्वरूपजी परश' री कहाणी रो विप तो एक इज है पण शक्ती' र दीठ यारी यारी है।

'धामीराम गगाराम' म अरविंदजी चूटवी णा मास्टरा र काम बाज अर सुभाव रो विवरा देता धका आ दरसाई है के कामचोर, बेईमान अर सिफारिशिया लाग जापरा चावो करत्य। मूळ बात ईमानदारी अर बेईमानी माथ है। 'नीम री छाँव' रो जिकरा पली करघो ई है।

'विकलाग' लघुकथा मे माधवजी नागदा विकलागता र उळाव माथ जबरी चोट करी है।

'म्हारा पाचूलालजी' म ओमदत्तजी जोशी इस्कूल मास्टरा रा प्रभावी' र फवता चितराम माड्या है। इ अर 'गिरमाधारी' री कथा धरती एक इज है। इ तरा ई जमोलकचंदजी जागिड री 'ताजूसाँ' ताजूसाँ रो घणो मावणो चितराम है। इया लग्गाव के इम्या आदमी कठई देग्यी है।

व्यग्य चितरामा म निलोवजी गायल र कागलावाद री यारी ई पिछाण है। इम्या महताऊ चितराम घणा कोनी कदे कदास ई देखण में आव। गोयलजी मे व्यग्य माडण री लिमता है मरी ममभ म कविता नाळें बत्ती। वा न इ न नितारणी वधावणी चाइज।

शिशा रो मारजा जुग म सावरजी लइया चालीस पताळीम सान पनी गी राजस्थान र गावा री पढाई माथ व्यग्य करयो है। दो आक जाणणिया थोडा-घणा पढ लिख र मतई मास्टर बण जावता कक्को वारखडी पट्टी पहाडा मिमावता। एक ई इस्कूल एक ई मास्टर। टाबरा न ठोकणो कृणो वा रो एकल दखार। इ माथ जो सातरो व्यग्य है।

घग्घ रो कारण अर मूळ सुधार है, जा बात म' जाण है।

'ईरस्या (छाजूलालजी जागिड) अर पिणघट' (मोहनतालजी प्रजापति) म लिखारा केई भात मू आपरा विचार माटता धका वा न चोखी भात स्पष्ट करणा है। 'मिन्नस रो बळतो सम' म नानूरामजी मस्कर्ता आपर अणभ न प्रनास्या है। न रो लाभ सगळा न लेणा चारज।

गद्य री भात इ म सबळित कवितावा विप भाव उद्देश्य अर रूप रग आद री दीठ मू यारी यारी है। जा म गीत, गजन क्षणियावा—तुजात अर अनुकात

ववितावा है। आज री राजनीति, ईं रं प्रभाव, फलाव अर परिणाम माथ व्यग्य, वविता रो सगळा सू ऊचो अर तीखो सुर है। इ र इतावा इयाय, शोपण, गरीबी, दबाएडा सताएडा मादा मिनस, गाँव अर वा री हालत, मिनस अर मिनस र निमळ चरित्तर, स्वयभू नेता अर नारा, खेत अर करमा, उद्बोधन अर चेतावणी आद माथ घणी चावी, ठावी और सँजार ववितावा है। तीन च्यार ववितावा म मनड री मनसा गुणगुणाइजी है, आ रो भी आपरो मोल तोल ह। मन अर माथ न साचण विचारण अर की करण, छोडण अर ग्रहण री प्रेरणा देवणो वविता रो घम है। आ ववितावा मे ईं तरा री प्रेरणा है।

लिखारा अध्यापका री आ राजस्थानी साहित्य संवा घणी महताऊ है। इ सू सखेप मे आज री दशा अर दिशा रो सातरो पान हो सक। भापा विप इत्तो ई ववणो है के लिखारा आप आपर खेतरे मे ईज चालू वाली र सबदा रा की माह छोड देव ता ठीक रैव। राजस्थानी साहित्य री घणी लाम्बी, अखूट अर सँजोर परम्परा है। घणा ईं ग्रंथ छप्या है। लिखारा आ रो भी अध्ययन कर तो आज दूणा वध। साथ ईं वा न और और भापावा री महताऊ रचनावा न भी पढणा चाइजें। जका वण ईं की लिख्या है, वो सगळो छपण जोग ईं है, आ बात साची बानी। विचार माथ विचार जर काटणो छाटणो, जोडणो घटाणा ता चालता ईं रवणा चाइजें। अर ईं पछ ईं कोई चितराम महताऊ वण, धी म उजास फूट, बा ओप। जे लिखारा भाइ आप आपरी रचनावा न ईं दीठ सू भी फेरू दसता तो मन भरोसो है के थ मत्त ईं की न की काट छाट अर सुधार करता। ईं बार तो जिक रूप म रचना मिली बी रूप म ईं आपर सामी है। घणी रचनावा आपर सामी आवें, ईं वास्तं एक लिखार री एक रचना ईं टाळ र लीवी है।

एकर फेरू शिक्षा विभाग न घणा घणो धयवाद अरपू-दा कारण सू। एक तो इ 'विविधा' न चलावण प्रकासण सारू अर दूज मन इ री सम्पादक माळा म जाडण सारू। विभाग बानी सू जे थोडा टम और मिलतो ता स्यात की और सातरो काम हावता। अेन बखत पर जा की हो सक्यो, आपर सामी है। अरदास इत्ती ईं ज है के आप लिखारा री वूख न देखो वूक न नही।

हीरालाल माहेश्वरी

(हीरालाल माहेश्वरी)

बो 174 ए राजेन्द्र माग,
बापूनगर, जयपुर 302015

अनुक्रम

गद्य खण्ड

1	एव पाव दाट	नसिंह राजपुराहित	17
2	सातू सुख	भेंवरलाल 'भ्रमर'	24
3	नीम री छावि	शिव 'मृदुल'	32
4	आसवागण	हनुमानसिंह पूनिया	36
5	सत्रक	छगनलाल व्याम	40
6	गिरमाधारी	कृष्णकुमार कौशिक	45
7	छोटूसिंह	भीखालाल व्याम	51
8	नायज रो घाव	रामस्वरूप परेश	56
9	भाग्योन्म	पुष्पलता कश्यप	60
10	मोटो बगला	मुहम्मद कुरशी	64
11	अघारो	मीठालाल खत्री	69
12	माटी भन्ने जिनावरा	जनक राज पारीव	72
13	हूजो व्याव	रूपसिंह राठौड	78
14	घासीराम गगाराम	जरवि न चूम्बी	80
15	विक्लाग	माधव नागदा	82
16	म्हारा पाचूनालजी	ओमदत्त जाशी	83
17	ताजू खाँ	अमोलकचन्द जागिड	86
18	कागलावाद	त्रिलोक गायल	89
19	शिक्षा रो मारजा जुग	सावर दइया	95
20	ईरस्या	छाजुलाल जागिड	98
21	पिणघट	सोहनलाल प्रजापति	100
22	मिनव रो बळतो सग	नानूराम सस्वर्ता	104

कवितावा

1	क्यू घाव हाचळा घाळो हो	ए बी कमल	107
2	इक्कीसवो सक्ती नै म्हारी टाणी	रामेश्वर दयाल श्रीमाली	108
3	मुक्क-मुक्क	मुमरसिंह शेखावत	109

4	गडकडो	वामुदेव चतुर्वेदी	109
5	गाव	जितद्र शबर बजाड	110
6	जूनो गांव	रमेश मयक	111
7	गाव री याद	हुकमचंद कांत	113
8	गम्भीर समंदर	सुरेद्र अचल	115
9	आज री कविता	अशोककुमार दवे	116
10	बिकाऊ लोग	तारासिंह	117
11	कविता	मोहम्मद सदीफ	118
12	मारी धरती री पिछाण	अमृतसिंह पवार	120
13	लोभ	दीपचंद सुधार	121
14	चोपदचा	शिवराज छयाणी	122
15	गळगचिया	दीनदयाल शर्मा	123
16	गिदगिद्या	दीनदयाल शर्मा 'दिनेश्वर	124
17	नानक्या	ओम पुरोहित 'कागद'	124
18	क्षणिकावा	घनश्याम राकावत	126
19	अध्यापक	गणपत सिंह	126
20	अयोक्ति	श्याम सुंदर श्रीपत	127
21	आपर मिलण मू	मालचंद्र कमल	128
22	गजल	गोविंद कल्ला	128
23	गजल	अजु न 'अरविंद'	129
24	कुण केव	श्री श्री घोष	129
25	कविता	विश्वम्भरप्रसाद शर्मा	130
26	नारा	भगवतीलाल याम	130
27	हेरो दे धरती माता खेत मे	घनजय वर्मा	131
28	बटाऊ चालता रीज	रामनिवास सोनी	132
29	माणम	कल्याण सिंह राजावत	133
30	गीत	केशव पथिक	134
31	अम्बर सू पमीनो बरस रे	मोंबरलाल गूजर 'छल'	135
32	कोयल वयू	निशांत	136
33	म्है जघेर न गळ लगाऊ	सत्य शकुन	136
34	लिछमी	कमला जैन	137
35	नानजी डामोर	शनिवान दशोरा	138
36	सपना सजोती म्हारी अधली	न० किशोर चतुर्वेदी	139

रेत रो हेत

गद्य खण्ड

अेक पाव दारू

नूतिह राजपुरोहित

उण दिन शहर मू गाव आवणा हा । बस म नीड अणूती रव । पण मजाग मू बारी बानी मीट मिळगी । गरमी रा मोगम अर टेट ताई बाची रूट । जीव अमूभण नाग जाव । इण वास्त बारा पन रीट मिळ जाव ता गगाजी म हाया । पण मरूद आ दूर्ई के म्हार वन अेर रवारण आयन वठगी । देरी कई महीना मू डीन र पाणी र नी अढायी होमी । 'अेवडिया अेमें री पमगाळ मू नाग री दाश नाभण लागी तो म्है मूडो वार काट निवो । इतगाव म अेर डोकरा बाजी गाठता लोडना उग बानी आवता निग आया । उन आय न हाथ मू लिनाट री परमवी पूछता बाया—

'पोटनिया बस मविम आदज ह ताड मा ?'

'हा आइज है मा, अपर कठा ताड पधारणी है ?'

गमपुर ताट जावणी ह मा, माटरडिया रा निरा र गोमा ऊभा वळ । ती टा ड कोनी पड के निमी कठ जाव ।' बाजी आनी आयोडा लगाव हा ।

मायने पधार जावो ।' म्है रह्यो ।

अव पधारणी वाड ह, भटनी म घुसणी र । डाटवरियो मीट माथ वळ गावें ता पछ माया आवणी रज है । थोडी ताळ तो मोरी मास लेयला ।'

एतराव म फिल्मी अदाज म लटिया बिनेरिया कडकटर आयग्यो अर कान माथ फम्योडै पॅमिन र नन टुकड नै हाथ मे लेय र टिगट काटण लाग्यो । रवारण री बारी आई तो उणन ठा पडी के वा गळत वम म वठगी है । अे माडनी ।' बँवती वा कूवी अर उतर नै भाग लूटी ।

म्है वार ऊभा बाणी नै इशारी कियो के मीट खाली होयगी है फुरती बरी । चळपळ री भेती अर वेळा पुळ री दान । चूका पळ चौरामी ह । डोकरा मायन जायग्या अर रवारण न आसीम देवता बोल्या--भनी वरजी भगवान

निष्कामी धारी । मू टावर बानी लरी मीन म लयो । उमर गाठ-गमठ र नव
 टग । मटिया पात्रिय रा आग ब्रीन पड्याडा हाकी वध्यानी हाथापया रा
 नाच निरळयोनी अर वपन मीना घाण । नवणां मू अमनी दग हान ज्यू लाग
 हा ।

वपरा न वमाई पान निजावनी वगल गाडी म भय ज्यू उम जण उपर अर
 नीच धवाधव भरीजगी ता मुमागरा रा गाड सतम हावण लाग्यो । पण टाईवर
 रो हान पना ई नी हा । दगजी रा वटा न जीवणी जितर मीवणी । ओ तिमो
 जेव तिन रो वाम ह । मू हायजपो वर ता वा नीज तिन मर जाव । रायरी वरसो
 मुमागर जापरा ररमा नै । वाम ता वाम र दग म हामी । टाईवर मतीमची
 चौम मू ई नी गिणीज । वम स्टण रो टैम पान वज्या रो हा पण जद माडी पाव
 वनण लागी ता च्याहमर वुनाराना माचग्यो । लुगायां रो तीवो मुर टावरा रो
 चीचाड अर आदमिया रो हाकाहूरी । वान पडी बात नी मुणीज ही ।

राम राम करता छेवट वम खान हई ती वी जीव म जीव आयो । डोवरा
 बाजी उबानी पावला बाल्या— आज ता नाठा दौड म अमल ई बोनी ऊगो
 फेरू लवणा पडमी । म्पारी अदाज मही निवळयो । डोवरा अमन रा मोटा
 प्रयाणी हा । बातचीन म ठा पडी ते दिन भर म ताडी भरियो अराम जाय ।
 ववण दाम्या— अमनगर हा सा उग्या पछ ता जावाम रा तारा उतारना पण
 नी उग जितर की वार रा वानी । मार्तन जाण आज मरिया । बाजी नमीज र
 मायनी जेव म मू पनाम्पिन र दुवळ म वग्या अमल वार वाडयो । नहच अर
 मुवरा माग चाकू सू विया प्रणाया । पछ वूगच वूगच जितरा दो विया हवाली
 म नयर म्हनै मनवार जरी । ई हाथ जोर दिया ता बाजी मुळन र दानू विया
 जापर मट म नाग्या अर मिसरी र जय चावता धका जोर मू मेवारी वियो ।
 पछ अमन रा वग्याण करता बाल्या—

रट पुराणी पर मगपण पण मू इह मही ।

कुण वई पणनै जेहर आ वागी दमरत विमनिया ॥'

म्हण बाजी रो बाता म रम जावण लाग्यो । अमनिया रो बाता रो
 ठरवी अर मठाठ = धारी ।

'जापरी नाच ?' म्हें पूछया

'नाच ईश्वर रो म्हारी नाच पतिवो ।

किसा सरदार ?'

राजपूत ह ।

गाव किमी जापरी ?'

निशनगढ = सा राजडी ?

म्है जोळ्खाण दीवी तो बाजी राजी होवता बाया—'नाव तो आपरी वइ दिना मू मुण्योडो पण दरमण आज इ हुया ।'

'दरमण दीनानाथ रा ।' म्हें नरमाड मू कह्यो ।

इण र पछ अठी उठी री निरी ज्ञाना हावनी रही । पतजी र वन जीवन र अनुभवां नै लूठी खजानी हा ।

वस सूबडी नदी पार करी तो दिन टगूमगू रयग्यो । मार्ग मे मोक्ळा नना मोटा गावडा आव । दो अेक घटा म वस रतनपुरा र गारव जाय पूगी । दीवा वत्ती री टैम हुयगी ही । अठ वस स्टैड तळाव री पाळ नीच जायोडो । अेक कानी जाम पणघट री मारग दूजी कानी बाया शाळा तीनी कानी दारू री ठेकी जर या सगता र बिचाल वस स्टैड ।

रतनपुरी यू खाती पीती वस्ती । उपजातू जमीन चाखी पदावार । जिण वरस वरमात आछी हाव अठ अनाज धूड री गळाड पाव । सबज सू गेह चणा री धम लाग जाव । अठे रां करमी मारी सुखी । शायद इण कारण इ गाव मे दारू री बेसी चलण । यू अेवर कोड वस्ती जिण भेड पड जाद उण मारग वुई जाव । नुवी पीढी जूनी पीढीसू गुण ग्रहण करती र व अर इण भात जा परपरा चालती ज र व । इसी ठौड फन फिनूर होवणा मुभाविष वात । वाम पडया दूज तीज वरस कोई माटा कवाडो इ हाव जाव । इण रान् रतनपुर री इण इलाक म विशेष म्याति ।

तूड रा उडता गतूल माग वस आपन रकी ता जेवर अधार घोर हायग्या । पण थोडी तात म भेवटो वस पडया । अळगी चाय री दुकानडिया माथ पीळी पीळी अर मादी राशनी म फिरता धिरता मिनख प्रेत छाया ज्यू राखावण तग्या । इण वयत जठ दा तीन वसा भेळी होव इण कारण मुसाफरा री जमघट लाग्यो रव । वस र वने अेक कानी नुगाया री भूतरी वंठी वतळ वर हो अर वने ई माटयार वठा चित्रम री फूक घाच हा । इतगव म दारू र ठेक कानी मू दो तीनेव दारूडिया जावता निग आया । मगला आछी तरिया घाप नै पीघोडा होवण सू वत्थन शली म निरत करता चाल हा ।

वा न देख र वस म वठयो जेक रमिक मुसाफर गुणगुणावण लाग्यो—

'जे करती करतार, मरवरियो ई मद तणो ।

(तो) माहे छोडता नाय पडिया ई पडिया पीवता ।'

पतजी पाछळ फर न अेवर उण मुसाफर कानी खरी भीट मू देख्यो अर पछ मुळकवा लाग्या । मूछा र अळभाड म दव्योडा हाठ बाकी भगिमा मे वार मन री वान भागण लाग्या ।

वस र वने नुगाया री भूतरी वंठी लेख र दारूडिया फाग री राग म बोलण

नाम्या । घाडी ताऱ ता 'योगदां भूः माऱी पण जः वे अगो' मधे चर मास उतरग्या ता माऱ्याच ताऱियां तय र उठया । ज पतनी अर दूजा की मुमाणर गिर म ता पद ता बांगी तऱ्यव निरन माऱ्याग दहवन म पदन जावता ।

पतनी घाद्या म्हार कां आयरं बठग्या अर तिमामा तागता थीमर मर म ताऱा— ताऱ टुगिया र अरग्या तर ताऱी । तऱिग्या, पतनी मास भर प्ता पण माऱ्या री जाग ती उषद । व म्हार मूः काऱी दगता आग ताऱ्या— पुराहित जी आगरी जजाण र हुनारी दिगवू-पगत अर पाव ताऱ र वारण म्हागी जिग्या वरग्या हृयगी । म्ह जाद्यो तरिया मुग्याडी हू । तऱ वामन तऱ रा मगता गुण अरगुण चाऱी तरिया जाणू ।

म्हारी तय र व गरी मोट मू अघार काऱो तऱण ताग्या । म्है ममभग्यो व व जापर अनीन म टूग्या है । घाडी ताऱ ता म्है वा री दऱया काऱी पण छेऱट मून तुडावण वामन वा न वनऱावणा पडया ।

दीव री बलती वाट नै वमी उजाम तऱण वाम्त घाडी घाऱावणी पड । म्है वां र अमन छऱडता पूछधी— पगत पाव भर दाऱ आगरी जिग्यो तिया वरवाद परती पतनी ? आपन कां अंतराज ती हाव ता म्है विगतवार वात मुणणी चावू ।

व अनीत र ऊड बुव म उतरन वालण ताग्या । म्हन तऱी तऱ्यापो जाण वारी जावाज पनाळ म मू जायरी है अर म्है बुच री पाज माथ वठी मुण रह्यो ह । वे हाळ हाळ बोसण ताग्या— टावरपण री बु वर पदाई म वीत्योडा व तिन आज इ याऱ वरू तां आरया म पाणी जाय जाय । वारण उण मुग्याऱ जीवन मारग म थोडो मीक आग बढता जचाणचक जेव तऱी मोड आयी व म्हारी पूरी जीवन धारा इ बलनगी । मुग्य रा दिन सुपना होयग्या अर जीवन दुस्य र धार अवार म डवग्यो । जाज जाप म्हार शरीर री हान तऱ्यो इ हो । पण टेट मू इणरी दीदार तऱी नी हा । टावरपण अर जवानी म तऱणरा ठाठ की जाऱ इ हा । जा ता तऱिनी जव फकीरा जागी हुई है । म्हारी मा म्हन कयवो वरती— वेऱा अने कठई निजर नी लाग जाव । अर मा री बाल नीचो नी पडयो । म्हन साचाणी जमान री निजर ताग्या अर म्हार मुग्य री मसार उजडग्यो ।

माइता री अेका अेक औवाद हावण सू वार मन म म्हार ब्याव री घणी चाव हा । तऱ वारण होठ सावळी पडता ई म्हारी ब्याव होयग्यो । जिकी राजपूत कऱ्या म्हार तार आऱ वा माखियात देवनामी ही । उणर रूप अर गुणा रा म्है काई वग्याण वरू । वा काड श्राप ग्रस्त देवात्मा ही जिकी इण धरती माथ दुस्य भागण खातर इ जतमी ही । म्हार सांग उणरी घरवाम पूरा तीम वरस रह्यो पण म्है भे यू जणा मरुपात म पगत दो त्रम भेला रय सग्या । म्हारी उमर रा बाकी

अटठाईम बरम ता जल मे ई बीता ।'

'अटठाईस बरम जल मे ?' म्है फतजी र मूड रानी दगता कृष्णी ।

हा पूरा अटठाईम बरस जल म 'वे निमासा नापता बोया—'म्है बीम बरस री जिण जाव जवानाया न धरा छाड र जेन गयी हा उणे पूरा अटठाईम बरम अेक तापमी री जीवण बितायी । या धरती माथ भूवती रही । जीवी जितर ई मीठी चूठी जवान माथ बानी दियो वे बार तिवार ई नु वी कपडो अग र बानी अडायी । म्है जेळ मू छूटने आयी ता वा टी वी म ब्यावर हुयीडी धरती माथ उधराण पडी ही । म्हार आया पछ ठीक पनख दिन उणे शरीर छाड दिया । जाण म्हारी लाध वास्त इज उणर गोल्लिय म प्राण अटपघोडा हा ।'

यम री डाईधर आपरी सीट माथ आय जावण सू मुसाफरा इ आप जापरी ठायी पकड लियो । फतजी हाथ री बीडी बार पक'र वात थाग बढावता बाया— ता आपन अरज करू । गाव म मंदिर हाव उठ उणरडा ई हाव । भना मूडा परपरा सू हावता आया । म्हार गाव म दारुडिया री अेक लूठी जमात ही । जवान छाकरा नै आपरी जमात म दीक्षित करणा व जापरी पत्रिच परज समभता । कोई आपर मस्कारा सू इ बच जावी ता भनाई, बानी बारी ता काशिश पूरी रवती । मिनय जात री जा परपरागत बमजारी है व वा गुण ता सीखती सीख पण अबगुण तुरत साग लेव । नैनी टावर आछी बाता ता सिवाया ई बानी सीख पण गाळा बालणी जिना सिवाया इ सीख लव ।

'कुसगत र कारण म्ह ई दारुडिया मडली म दीक्षित हायग्यी । गधा पच्चीस, री उमर ही । ऊडी अक्कल ही बानी । गरू हाटा र लाग्यी ता लाग ई ग्यी । उण जमाने म दारू उत्पादन रा काम आजकान कुटीर र ज्यू उद्योग र रूप म ता ना पनप्यो हा पण ठका माथ चावा दारू माकळी ई मिलती । उण म आज जितरा गगाजल ई बानी भेळीजती । इण कारण दारू तज हा अर थाडा पीधा ई जवरी नशा आय जावता । म्हा बाळो जमात रात पडता ई तळाव री पाळ माथ पूग जावती अर सुरापान री कायत्रम शुरू हाय जावती ।

जेकर चादणा रात म म्हारी जाजम जम्यीडी ही जर डाडी मनवारा चान ही व म्हार गाव री तजिया भाबी उठ जायी । तजियो म्हार सरीखी साइणा माटयार हा अर मीध सुभाव री गरीब छाकरी हो । उणरी ब्याव बनना गाव रटूजा म हुयाडी हा । यार आपसरी म काई टग पड जावण सू तेजिया री जुगाई नै उणर पीहरिया सासर भेज बानी हा । इण सारू यात पात ई भेळी हुच पण काई मामला बढी को नी । इण वास्त तजियो चाफेर सू थाक न म्हान बन आयी हा । वा हाथ जाड न दीनता सू बाल्या— फतजी भावा । ब्यारूमर सू हार न अब आपरी शरण मे आयी हू । आप म्हारी लाज राखी तो बातडी बण । नी

ता म्है जीवती ई मरिया जिमी हू ।”

म्है उण त्तिन पाव भर दाह पी ७ त्तिर हुयाडा बठी हा । तजिया री वरण पुवार अर दयामणी मुग मुद्रा दगन म्हन जाण आयग्यी । म्ह मायीडा न कह्यो—‘ परण्योडी लुगार्ई न भज काना आ ता तजिया री वाई पूर गाव ग तीहीन हुइ । आपा नै इण मामल म तजिया री मत्त करणी चादज । धारी वाई राय ह ?’

‘सगळा जेवण सुर गू माया— बहर जर १ आपा तजिया री मद न वरस्या ता दूजी बुण वरमी । आ ता मुगणी वाम ट । पूर गाव री र्जित जावह री सवात है । धारा हुनम हावै ता म्है सगळा मरण मारण न त्तिर हा ।”

मूडा मूडी बापडा रा जिमी परण्योडी लुगार्ई न मासर नी भेज । थू चाव म्हार साग —म्ह तज न कह्यो अर नश री टर मलाठी वाठी पडली ।

म्हारी हावल आग—धी री वाम विषी । सगळा साथीडा पवन र घाड असवार हा । हावल मुणतार लाठिया, धारिया अर फरसा लयनै बहीर हायग्या । रात चाण्णी ही अर रदूजी गाव नैडो इ हा । हावरता उठ पुगग्या । भाविया रा माहत्ती गाव र वार ई आयोडो हो । लोग वाग ब्याळू करनै निवडया इ हा अर हाव चिनम री जुगड म लाग्याडा हा ।

तेजे आपर मामरिया री भूपा बताय दिया । भूपार जाग आगणा र स बोच तजा री लुगार अर उणरी मा बठी वतळ कर ही । आदमी कोर्दे घर नी हा । म्हा बाळी पीज जचाणवक उणरी गुवाडी पूगी ता मा वेटिया घवरीजगी । नी ता वे नाठ मकी अर नी वा सू हावो इ हुयो । म्है तज नै कह्यो—‘ दख कार्ई ह । हैर नादार, धारी परणतर धारी निजरा सामी बठी ह । भाल बाहुडी अर ले चाल । दया किसी माई री छाल आडा फिर ?” तज आगण जाव र लुगार्ई री वाहुडी पकडया अर घसीटण लाग्यी । मा अर वेटी तोनू जोर जोर स क्वण लागी । छिनक देर म सगळो माहत्ती भेळी हायग्यी । तज रा मुसरो अर मोटघार साळ लटठ लयनै आया अर म्हान मचकावणा शुह क्रिया । म्हार सामी उघाड माथ तज री साळा लटठ लिया ऊभो हो अर वार करणा ई चाव हा, व उण पलीज म्ह म्हावाळी लटठ घुमाय न मचकायी उणर माथ म । माटी री हाडी पूट ज्यू पट्ट करती उणगे गापडी पूटग्यी अर वा हटो पडग्यी । जीभ वार आयगी अर तो तीन वार लडपडाय न प्राण छाड दिया ।

अेव र पडताई दूजा म भाग छूटा । जाण चिडिया म डळ पडयो । म्हन अचूभी इण वातरा हुया व म्हारा सगळा साथीडा ई भागग्या । चादणी रात म पगा वन तास पडी अर म्है सपा जेवली ऊभा । नशी उतरग्या अर हकीकत समभ म जाई । गजय हायग्या । हाम वरता हाव वळग्या जव वाई आत्ता ना

आवं । म्हारी आरया सामा जळ रा फाटक अर फासी री पदा घूमण लाग्यो । माईता री हालत साच'र म्हारा वाळजो वापण लाग्या । रात हाल आधी सू ऊपर गावी पटी ही अर च्यार मील माथ छप्पन री भाखर वार काम री भूई म पसरधा पडधा हा । इण मिवाय दूजो काई मारण नी हा । म्ह ई उठ मू ततीसा मनाया अर रात थका भाखर भेळी हायग्या ।

माकळा दिन भाखर रा फळ फूल खायन अर भरणा रा पाणी पी पी नै काढ दिया । पुलिस म्हार लार लाग्योडी ही पण म्ह दिन री वखत गुफावा म पडधा रवता अर रात पडधा वार निवळती । इण भात कर्क दिन काढ'र जद भाखर मे की खावण न नी रहधा ता रात री वखत बनला गावा र घरा म घुस'र खावण री सामग्री चारण लाग्यो । पण कहधो ह के सी दिन चार रा तो अेक तिन साहूवार री । मो अेकर गाव वाळा म्हनै घर न पकट ई लियो ।

'पुलिस रा कागदा म म्ह फरार घापित हा । पत्रडीजता ई मुकद्दमी शुह हुयो अर म्हनै जाजीवन कारावाम री सजा हुयगी ।'

वस वरणाट करती दौडी जाव ही । रामपुरी जब दूकडा ई हा । फतजी निसासा नाखर आपरी थलो सभाळधी अर म्ह जाण नीद म सू जागी । □

सातू सुख

भवर लाल 'भ्रमर'

हा म्हें हीरा री हीज यात वर रया हें । हीरा जिव रा नाव आत गाव री जयात माथ । जद सगळा ही उणरी चरपा वर ता पछ म्है ई लार क्या र वू ? हीरा विणी हीर मू कम नी है । रूप रग इगा, क ल्या ता दगता ई रय जावा । पूटरी परी परी हुव जिया । तिमोइ परावा पराय दा आपावण री जमरा वानी । उणर डील माथ हर वाई गाभा फत्र जाव । उण रा नाव नवम घडण म विधाता न वित्ती टम लागी हुवला । म्है उण चरपा म इत्ती रम नय रया हें इण रा आप कोई धीजा अरथ मत लिराइजा । म्हारा ता मतनव फगत इत्ता हीज है व आत गाव म उण री शाभा हुय रई है ।

गाव रा घणखरा वाणिया दूर दिमावर म आपरा विणज बोपार वर । दजा लोग किरमाणी वामा म लागाडा आपरी टम काट । हीरा रा धणी ई बलकत्त वमाव । वठ आर वपड रा घधो ह, चाल ई चाखो । दा तीन साल सू अेकर गाव री मुसाफिरी निठा ताव आव । जी र ऊपरयावर तीन चार मइणा चौमास रा काढ इत्त दिसावर सू संडा आय जाव । इणरा अेक कारण ता जो ह व दूजो कोई काम सम्भाळणिया कोनी । हीरा रा सुसराजी ई आजवाल अठ हीज रव । वान बुडापा आयग्यो । विया ई जेक आत्मी घरा चाईज । औस्था आयगी जण धीगाण बठा है नी जण अ ता राक्या ई नी रव ।

म्है इण गाव म लारल वरस ई बदळी हुयर आया । आया जद मू ई सठा र घरा रय रया हें । सठा सू इ नी, म्हार तो आर सगल घर परवार सू चाखा सम्प्र ध है । आज ता हीरा सू ई म्हारा मम्बध निजू जर हेताळा हुयग्या । पण जाया जद एकी वरा म्है सू छव सात मइणा ताई धी निजर ई का मिलार्ई नी । वात करणी ता किसी क हुव ? हीरा रा रूप रग न डील-डाल दग र देवतावा रा ईमान डिग सब तो म्है किसी चकारी म हो ? म्हार ई उण मू बाता करण रा मन

हुवता पण वा भल घरा री व्हू वेटी ही । इण कारण मनरी मन मे हीज रयग्यी । सठा र घर री वागळ ज्वीत बडी । वासळ मे ई अके साळकी, धीम म्हारो रवास । स्त्रूल टम र अलावा म्हारो काम कितावा पढणा ईज र व । काई पत्र पत्रिका या उपयास पढती वेळा ई छान-ओल म्है चुपचाप हीरा री दिनचर्या देखता न उणरी गतिविधिया न निरख्या करतो । वा दिनुग सिझ्या दोनू टम गायान नीरती, पाणी पावती न दूवण रा काम ई उणने ई करणा पडता । पाटठा उठावणा अर थपडया धापण रा काम ई उण र जिम्म हो । सासू नणद तो कदेई छठ छमास गाय डागरा नै सभाळ । मायलो काम ई नगळो वा ई कर । क्यो नी कर ? वा इज तो इण घर री व्हू ह । भाभरक तारा थका उठणो अर रात न सगळा र सूता पछ सूवणा । फूस वारी मू लेय रसोई पाणी तवात सगळा ई काम उणी न-करणा पड । ऊपर सू छाटी टीगरी री मा हुवण र कारण रात रा पूरो सूवणो ई नसीव मे कोनी । इत्तो काम करता वका ई मूड सू चुमकारा नी कर । काई काम भाळादो, नटणो तो हीरा र सभाव म ई कोनी ।

ओ ईज कारण ह गाव सगळ म हीरा री शाभा रो । कठई सुणला अंडी कामेडी न सणी वीनणी म्हा ता आज ताई का देखी नी । लाधू जी रा मोटा भाग जिवा र इसी लाखीणी वीनणी आई । दमवी ताई भणयाडी पण माट मिजाज नडा आगो ई का'नी । गावाळा ता शोभा कर जिकी कर ई ज ३, इण री सासू रो लाड ई कम को नी । कवत ई ह क मा र सराया वेटी को मराइज नी । पण अठ तो हीरा रा माटा भाग जको उण नै मासू खुद सराव, आव्व गाव म । हीरा री सासू न कोई लुगाई कठई मिल जावो । व्हू सारू वा अंक ई वात कंव, 'म्हारली वीनणी री होड हुव ? वापडी घणी ई सणी है, आम मे घाल्या ई कानी रडक । भल घरा री वेटी है । वाई, म्हार ता घर सगळ रा काम वा अक्लीज कर ।'

'माइता री पु याई आटी आव ह ओ । नी जण अजकाल की किसी वीनणी काम कर'र छाती ठार है ?' इण तर वात सामळी लुगाई वन सू सुणण न मिल जण उण री मासू भळ वमी, 'हां आ, आता है इज । महारली जेठाणी जी रई देखलो, घणा र चोखा घराणा देख र टावर लाया । पण छाती सा राधली जेठाणी जी री । व ता बापडा मैणा है जण घमीडा सब ह मायरा माय । नी ता इसी व्हू रो चुटिमो, भातर र धोळ दुपार वाढद, घोळा आळा'र । 'दयाई है आ । अजकाल ता ढाळा ईज विगडग्या । ऊचा चढ चढ देता, घर घर ओईज लेता ।'

काम प्यारा लाग है आ, काम रो काई ? दिन-रात राडिया करती रव है, जण वण ई मन ई दया आ जाव बाई । म्ह तो घणी ई दफ कया कहे कें फूस-ममोता अर गाय डागरा खातर काई आदमण राखळ । पण वा ता वा इज है, सफा नट जाव । कया कहे क आपा र कित्ती पइसा री वमी है वीनणी । जण वा

उपल्ला देव व घणा गुड भीता रं थथडणनं वा नी । हाड रा गाने लाड ? म्है अठे काय वास्त आई हू । हुव जिसे पारी चाररी बजा दू ई म मन घणी आणद मिल । पईसा अळया कोना जाव, मच्याडा काम ई आमी । इण तर वा तो उलटा मन ई सीख देव ।

‘म्है उणन मायरा लेयण रा साच र वाड काम र हाथ लगाऊता वा भट दणी मना कर द । कव म्हारो पछ काई मुग है ? थ इण उमर म काम करता चोखा थोडी लाग सा । मूड रा ठीकरा मन पाती आसी । कसी-बीनणी म सफाई हया दया बानी । बूड सार माईता न अवेई आराम को देव नी तो कद देमी ? ये आराम करो, म्है म्हार हाथा मू काम ध धो करनी रसू तो हाड गौडे निरोग ई रसू । राणी बठया डील मे बादी भरीज जाव । बापडी घणीई सर्णी हू म्हारा ता घणाई काण-कायदो राख । जिमा नाव है विसो’रा विसो वाम । सगा परसगी ई बापडा संगा । टावर न जिसे सीख माईत देव विसोई काम करया कर । जाजवाळ आठी छारया दाड वाछेडी को नी ।’

छव सान मईणा वा र घरा रवता हुय्या जद वा र आगण ताइ म्हारो आव जाव हुवण लागया । हीरा री मासू अर उणद मू ई म्ह घुळ मिल्यो । हीरा र मुसर जी मूई रामा सामा हुय जावता । पण व घणा बालता का नी । मिलता ई अेक ई मवार पूछना, “क्या राजी हा ?” जण म्ह छाटा सो पडूतर देवता, “घारी आमीम चाईज । हीरा री सासू नै ता काई न काई हथाईदार मिलणा चाजता । बांगे बाता रा काई निवेडा ? दिनुग मू सिध्या पड जावती पण व पण पाछा कोनी देवता । बाता खूटनी ई बानी । तिसी ई बारी जायोडी । जेव नम्बर वातरण । क्या नी हुव । जद घर रो काम काज सगळो हीरा र जिम्म हा, ता आर पाती म ता हथाई आवतो । सर ! आपारा काई लवें ही । म्हारो ई टम की सोरा कट जावतो । जी लाग्याडो रवतो । गाव म तो म्है घणा निकळता वा नी । गाव री राजनीति मू डर हा । सगळा मू बतळ हुवण लागमी जण हीरा ई क्या लार रती । उण मू पाडी घणी बोलचाल सरू हुयगी ।

उण मू बातचीत सरू हुई ता ग ई नाटकीय ढग मू । सरम शका की जाता ई रावती ही । पण अेक दिन वाड हुया व व्याण रा वा गाया दूवण न आइ ता उण माग उण री छोरी ई आयगी । वा रोवण लागमी । गाया बानी दूवण दी । या छोरी न राजी करण रा घणा ई जतन कर तिया पण वा ता रावता इज रयी । अडी हालत देव र मने उण माग दया आयगी । म्है टावर न चुचकार र गातो ले ली । लाग नशामा, वा चुप हुयगी । जा पछ बीसू वार घारी न म्हार वने छाड जावती । छोरी म्हार हीड हुयगी ।

अंबर बात बात म म्है पूछ लियो नणद चाई काट कर । व कानी राखे छारी न ? आ रोजी न दुग देव । गाया दूवण न आवी जिते घडी मायत वान ई राखण दिया करो ।' पण बी उथळा को दियो नी ।

दो चार दिन आडा घाल'र म्है ओइज मवाल फेरु कर लिया । जद उण कया 'रमाई री बेळा चाईजी राटी बीजी कर अर सामूजी वा न भलावा भेना कर । जण कुण राख ? ताई सामूजी ता वापडा राखण न त्यार है । पण छोरी ज इसी बळे जकी वा वन रव को नी । रोवण लाग जाव जण काइ करू ? साथ ई लियावूर हुवा । जठ था कने रमवा कर । था सू आ घणी राजी रवे ।'

हीरा री इण बात मे मन की कूड लखाई । क्या क म्है चोखी तर्या जाण हा क राटी टुकडो, दुआरी करया पछ हीरा न खुद न काम करणो पडतो । पण म्ह वात न नी वधा र इतोइज कंवता, 'आ तो की को नी । मन खुद न ई टावर रमावण रो घणा काड ह, टावरा म भगवान विराज । घर ई म्है टावरा सू घणो राजी रवू ।

'धारो व्याव हुयग्यो काइ ?' उण पूछया ।

'हा, तीन साल हुयग्या । अक छारा ई हुयग्या ।' म्ह कया ।

'जण ई धा न टावर रमावणा आव । वा मुळक'र वाली ।

इणी तर कद कदास हीरा सू अक आध मिनट बात हुय जावती । घणो मौको तो हाथ जावता वा'नी । पण इण बातचीत रा टुकडा मू मन ललाया क इण र हिवड म कठइ की है । वार सू दीख ह बी सू की यारो निरवाळो । की न की पीड है, काइ न काइ टीस है, पण आ आपरें हाठा माथ नी ला रयी है । म्हार आ इ अक शाध विप हुयग्यो ।

ज्या ज्यो म्है उणर अतस म भारुण री कासीस करी मन ललाया, क इण हिवड म लावा मुलग रयो है । म्है घणी इ दफ, फित इ तरीका मू बात न उळट-पुळट पूछया, पण हीरा बात न हस र टाळ जावती । उण कदइ आपर घर री बात म्हार सामे नी' करी । पण खासा दिना पाछ उण न म्है माथे पको भरोमा हुयग्यो क जो म्हारी बात न अठीन वठीन नी करला । मन आपर भाइ री ठीड समभण लागगी । जण कणइ कणै आपरा समभर र घरविद री काइ बात सुणावती । इण तर उण रो जी हळका हुय जावता ।

जेक दिन वा घणी अणमणी सी दीखी । म्है पूछ लिया । 'आज काइ बात है, वाइ ? जी सोरो कानी दीख । इत्ती उदासी किया ?' जण पला ता उण इन विन दरयो अर पछ अकाअक फीसगी । म्ह कयो, 'राव काइ है, गली । बात वता मन । काइ हुया ? जण वा वाली, 'कोइ एक बात हुव तो वताऊ, बीरा । पूरबले जलम रा करयाडा पापा रा फळ भुगतू हू, वठी । घायल री गत घायल जाण ह । म्हारी हालत न दख'र कोई साच ई को नी सक क हीरा न ई काइ दुस हुय सक ।

सगळी ई जाणै तं हारा त तावा पर मित्र्या न तमात्र वर मित्रयो । गातू
 सुय ह हीरा र । काः वमी ह ? पण त्रिणई मन तई मू दगी ? ? माय रा माय
 त्रिता धमोडा मयू हू म्हे ? मा जाय भाई त ई म्हे म्हारा दुगहा को वताया
 नी । वदई म्हे म्हारी जामण (मा) र आय मामर रा राजणा रा रायानी ।
 वाई वर म्हारी मा र जाइ ज तीग दिवाडी ई । ती ना हीरा रो वडाया
 मोळीज हुन । भाई त ठा पन जा त वात ई आय र आ मू वात करे जिमा है ।
 राड वधता तिसा वरम लाग ।'

ताई वाई वात हुई वता ता मरी ?' म्हे भळ पूछया ।

वाई वतायू । ताई जेक हुव ता वचू । त्रिनुग मू मिश्या ता- जेकल मशीन
 दाड वाम वरुं । तो ई जग वा नी । गामू अर नणद वाई ताना दे द'र छाती म
 छेक्ला वर हान्या । रावू ताई त्रिण आग ? मिनग ई रा र वया वया गाव ।
 रा री सुणता म्हारी वद सुण । वा ई म्हारी पीठ नै समझी ता मर्न वाय रो दु ग ।
 उणन काइ ठा म्हे म वाई वाई वीत । पण उण रो ई वाई वसूर । ताई दा प्रसा
 सू अंकर आय वी मे ई अ लोग अंधा सु वा न वूडा साचा दमा भिडाय व व वव
 जिवी हरेक साची अर म्हे किती ई साची वव पर वूडी ईज लपारै । वता वता
 उणरी आल्या रीस म लाल हुयगी । वालीज्या वा नी ।

ठर'र भळ वांनी । पण अबकाळ थावम मू । अपार व आयाडा है जण को
 तो ववा मुणा वम करे । मन म जणूता सावचेत रव । वठई वेत न वम नी हुय
 जाव व तार सू लुणई न हुल देवै । दिन भर घाणी रे वळद दाद मटू तोई आरा
 जी मोरा का'नी । वदई त्रिणी वाम म त्रिनी व डील हुय जाव ता सुणावणा मरु
 वरदई भाई आ ता वडे घरा रो वेटी है पी र म तो वदई वाम र हाय ई लगावणा
 किता व हुयै । नीकर चाकर चौईम घण्टा हाजरी मे रव । अठ वापडी न वूव म
 ह्याव वी जण इतो राडियो वरणो पड । लारली तो सगळी वना ऊन घरा गड ।
 इण रा ईज भाग फूटया जको म्हासू पानो पडया । वठळ सर म जावती ता राजस
 करती । जद व म्हे वदइ ओ अणसा वा लाइनी मन म व भइ म्हन म्हार माइता
 वूव मे न्हायवी । तोई अ दिन रात साव मन । वदई वाई हाथ मायला काम
 सळटा र जाव जित घाडा ताळ लाग जाव तो ताना माथ ताना । वात रा वतगड
 रणा द । अक त्रिनी रो वात हुव ता गई करा, मम इ गावा पण जा ता राज रा
 राडी रावणा है ।'

हीरा जाग की जार ववती वीसू पना म्हे उणन टोक र पूछ त्रिया, अक
 वात वता । तू वच जिकी ता साळ जाना माची है पण पारी सामू अर नणद र
 मूड ता वदेइ थारी मूड रा त वात ई वांनी मुण्या ।

आईज ता वात है भाई सा व । वा र मूड नी सुणी ता त्रिण ई म्हार मूड ई

वा री मूड मुणी है ? आ तो मौक री बात है म्है, था आगे रा र जी हलकी कर लियो । नी तो चिठी रो जाया ई को जाण सकै नी म्हारें दुख दरद न । मार ई ले जर रोवण ई को दनी । तडपा तडफा र मारणा आर कीबर हया कू है ? गळी गवाड जाया-गया नै कडूने आळा आगे म्हारी उतो बडाया करणी अर घर म इमो सलून । काई माच मव । बडाया आपरी नाव न करै । यारी करयोडी, बजाया वा वास्त ढाल रो वाम कर । कव है नी—कुठीड लागी न सुसरो बढ । साची यताया भाई साव । म्है निणी आगे म्हारा दुखडा राय दू ता कोई न पतियारो हुमी । म्है वनै सू जे चुपचाप मुण ई लेसी ता लार सू काई कमी ठा ह । आ ईज कमी नी क सामू तो बापडी इणरी बडाया करती ई वा थव नी ताइ इणन देयो दीरव जिसी वा है नी । अजवाळ री टीगरया इमीज हुव जब म फेर भणयाडी यारी ह । 'एण वरताव रा काई कारण नो हुवला ।' म्है पूछयो ।

'कारण ?' जार ता की वानी । आ म्हार बाप वन धन देख र सगपण कर्या है । हमियत मारू वा व्याव चागो कर लियो । देज लेज ई घणोई करयो । पण आ रें मन मुतायिब वा ह्यानी । आ र आय हेठ न वा आयोनी । धन रा नाभी कदर राजी हुय सर । मजे री बात था है क म्हार मा बाप सू बात करण री सरघा आ रोइ बोनी । लोवा न कव घणाइ दियो है । दिया लिया तो डूम राजी हुया कर । म्हान तो टावर चागो चाइज हा जिवा मिलग्या । पण मन मुथाया बिना को चुक नी । ब साच चुपा चुप इ आ की लयात्र तो चाखा रव ।'

घणी इ तप म्है हीरा न उण री नणद र वार म की पूछणो चाव हो पण कइ पूछ को मक्यानी । पण उण तिन बात मे बात आयगी जण ठा पडयो क हीरा री नणद आपरी हलकी जबान र वारण सगळा सू राड माल लेवती रव । इणी कारण वा सामू सुमरा सू रीसाणी हुय र जठ बठी ह जम र । नणदल बाइ रा जिद है क उणरा वीन मुमर सू सीर काढ र यारी निरवाळो घ धो कर अर सगळ धन री मानवण वा घण । पण उण रो मिनग्य बाना म वानी आयो जद आ अठ बठी हुकम हलाव ।

थार सागे ता नणद रा वरताव चोखो इ हुवला ?' म्है पूछ लियो ।

काइ बतावू वीरा । बतावता सरम आव । काल रीज बात है । म्है वाइसा सू अरज करी म्हारो माथा दूख है जाज, रोटया थ इ करलो नी । जण व काइ बातया ठा है ? मूडो मचकावता थना कयो, "चावो सामरा मिलग्या जण बाता आव । म्है म्हार सामर मे दिन रात काम करू, चाय कित्ती माथो दूखो, भलाइ नाव तप हुवा काम ता सगळो मन इ करणो पड । जर अठ ? राणीजी कय रया है आज म्हारो माथा दूख, काम थ करना । बाइसा वाइसा नी हयर थार घर री नोऱरणी हुमगी जाण । हुह ! टीक है म्है आज न मा नै कसू ।

मैं अठ विण ग ट सुवायू वानी । मा म्हार मातर वर वरणा । मैं जन ता
 वयू ही न मातर ग गटता ता अठ क्या आवता ? पण गड ो रभायणा टीर नी ।
 मैं पुण ई र ।

र मैं गमर पूरी ररणी मामूजी । व जानाई गडा घोया रानी रूती
 ठिठवारयाठी । काम वर ना काज । वारी छती छाम म्हारी । ऊपर म मातर
 गमरा आर ? म्हारी छारी ग आज क्या है आडा क्या ता थारा भना वुग
 मान तिय । उपरता वरती ग मरम ई वानी आय । जीभ मा गीन वू ता वार ।
 जीवाटा वरणा भूल जामी । दूध म राध र थो म गाय ता ई काम वरतां जा
 दारा हुय । दूती वाता हीरा जे ई गाम म क्या । की ठर र भळ प्राची, 'कवा
 भलाई पण म बडा वैया ई वर । पण क्याण री ई वा ता हन हुया वर । मानी
 पूछो ता मैं काम ई काम म म्हारी मगली वाया गा ट ली । पर वरतां ताव है
 अ । ओर तो वाई वयू भाई, म्हार दायज म आयाडी मिगार पेटी न गोन र
 वदई म्हारा वोड पूरा को वरयानी । वरई वाजळ टीची वरणा ई विगोर हुय ।
 वाजळ टीकी तो ना कुछ सुगाया ई वरया वर । मा थी वास्त ई सुणणा पड
 हम राणी जी सिगार वर र वठ जामी ? विणन देवाळ सी जा मिगार । वो
 थारो वुण रीयो तो अठ वानी । हीरा री मगली वाता म्हार हाडो हाट वठगी ।

साचेई हीरा इण घर म वीत ई दुगियारी है । विचारी वरई रातो आत्या
 न ताता थायो । ता ई धोळो जोडा र वाण री धमकी थारी । हीरा री नण
 जर सामू सू म्हार गोजीन ई थोडी वीत बनळ हुय पण मजान है क वार मूड मू
 हीरा री कुसाभा हुय जाव ।

वारल वेई दिना सू हीरा री सामू म्हारी जान थाव ही क वाइ चोखो
 जातवी वताओ जिको डोरा जतर जाणतो हुय । पण मैं क्या दियो 'इण टग
 विद्या मे म्हारो विमयाम को नी । जा वन ई की हुय ता रवता घर घर क्या
 फिर ? म्हारी मानो ता मास्मा अ तो तुटेरा है आ सू जळगा ई क्या ।' पण
 वा न म्हारी बात दाय नी जाई । क्या ह नी जठ चाह वठ राह ।

आज म्हे किणी काम सू हीरा र आगण पण धरियो तो मन हाळ होळ
 बालती हीरा री सामू री बोली सुणी जी बहू र पीर जाळा वन अपरम्पार धन
 है । वाइ इमो उपाव करो क उण धन माय सू की जापा न इ मिल जाव ।
 वीनणी न घणोट समभावू पण म्हारी बात उण र पाल नी पड । जाप को चोखो
 जतर बणावो । परईसा भलाई किताई लाग जावो, चाखो हुवणो चाईज । आपणो
 काम वण जाव वम । जेक बात भळ माराज छोरो इ जळकाळ की वीनणी र
 दमारा माय नाचण लाग रया है । उणन वम म करण रो ई डोरा वणा दा । इत
 मे हीरा री नण ई आपरी डिमाड राख दी होळ सी क इमो डोरो तो म्हार

करायद मा, क म्हारा ई व म्हारें वस मे ह्य जाव । हीरा री मासू बोली, 'हा हा अेक डोरा त्रायली र ई बणा दिया ।'

आज बात रो निर्वंडा हुयग्यो । शाध पूरी हुयगी । बात साव माची है । हीरा भेडियां र बिचाळ यठी है । बा रो वम चाल तो व इण री बोटी रोटी काट'र या जाव । हीरा भाटा सू फाडीज रया है ।

इत्त मे मन हीरा बार सू आवती दीखी । उण र सधयोडा कदमा न लगा लग देख तो रियो जद ताई बा म्हार नड नी आयगी । म्है उणन हाळ सी क मायन चालण जाळ पडय'त्रा री भणक देता थका बोल्यो, 'म्है आज मानग्यो तू साव माची है हीरा ।'

उण उधळो देता थका इत्ती दज कया 'जब म्है ई देख त मू वान । बा म्हारो असली रूप कानी दरयो ।

मन लखायो क उण र जी लावो मुलग रैयो है अर ओ लावो जाज नी तो काल फूटमी । हीरा त्रिकराल रूप धार'र आ सगळा स् हैसाब पूछ लती । जा जबान तो अवार नी मई पण जेक दिन तो खुळणी ही ह । ज्वालामुखी है, फूटण री देर है । हीरा री माम् अर नणद ज्वालामुखी रै अन मूड माथ वठया है ।

□

नीम री छाव

शिव 'मृदुल'

दफतर रा बतराई बाबू तो तीन बज्या ही बणा रा स्कूटर माथ बैठ'र घ मनाग्या पण म्हूँ दस बज्या सू ल र छ बज्या तक टिक र काम करयो। जेठ रा महीना री तपत मू जीव तो घणो घबरायो पण करतो नई ? सात्र रो हुकम टाळू भी तो किया ? कुर्सी मू उठ र साइकिल सम्भाली तो पाछला पहिया री फूक निक ल्योडी ही। पिचर ठीक करान साहू जेब टटौली ता मायन फूगे छगम भी बोनी हो। दफतर रा चपरासी भोला काबा ने पूछयो तो वो भी गम नारायण। बोल्यो, सरकारी नौकर बन पच्चीस तारीख ने पइसा कठा सू मिल बाबूजी।

अब म्हु रीस करू तो बणा प र ? गम पीता पीता तो उमर चौपा बरस री होगी। साइकिल न दफतर म ही पटक'र पग गडती घर पूग्यो तो मिइया रा सान बजग्या। पसीना सू तर-बतर हा। कमीज न उता र सूटी माथ इयां टाग्यो, जिया आज र मिनत मिनताचार न छूटया टाग राग्यो है।

गेला म चलती बेल्या नौकरी मू जुडी आरला घरमा री याद आई। कतरी हो बाता रो कळमाट्ट पिया चौक म नीम रै नीचे टल्या माचा प रै आडा हुवण रे सिवा कई तो सूइयो।

आडी तो होग्या पण विचारा रो वेग हाल थग्या नी हो। मोचण लाग्यो-जणा री नौकरी लाग्या ने पाच बरस भी बानी हुया बणा र बगना रेडियो स्कूटर, सोनो चादी, गिरस्थी री जरूरत री समली चीजा है। म्हन नौकरी करना छतीस बरस होग्या पण भाडा रा मकार मे र रियो हूँ। केबत्र मूरज न परणायो है उमा रा पीला हाथ करणा तो हाल बाकी है। तिलक डायजा बाप र बाप। समभ बोनी आव। ईमानदारी सू काम कर हूँ। माव भी म्हारा पर ही भरोसो कर है। न्यत्र भर म म्हान ही जिम्मदार समझ र समझा काम र वास्त म्हाने ही कवे है। दूसरा बाबू तो मरजी होव जन् जात्र अर मरजी होव जन् जाव। पण

वर्षान चू तक कोनी कवे । आवते बरम तो पेसन भी हो जासी अर म्हारी जलम भोम विजेपुर जाणो पडसी । उमा रा हाथ पीळा करणा रो किम्बर ब दोबस्त होसी ?

अ विचार मन म उठ ही रिया हा अर गली रा नुक्कड सू एक सत री जोर री आवाज वान म पढी अ ल ख ?

'अल्म' री आवाज सुण र म्हान वो दिन याद हो आयो जल् हू म्हारा बापू र सागे विजेपुर गाव रे बारे एक चवूतरा माथ उभा नीम री छाव म बठयो हो । वणी वगत म्हारी उमर पाच साल ही ।

जेठ रा महीनो सोमवार रो दिन अर सिङ्घ्या री बल्या ही । गाव रा नामी सेठ साहूकार अर पटेल-पटवारी नित री भात वणी चवूतरा माथ बठा एक महात्मा री बाट देख रिया हा । अ महात्मा गाव सू आधूणे वाजू रा मगरा म बण्या शिवजी रा जुगातरा मिन्दर सू हर सोमवार ने आवता अर भविश्य मे आवण वाली वगत री बाता बतावता हा ।

बाट जोवता चवूतरा माथ बठा सगला जणा वाना मे लाग्या हा । बाता र बीच डमरू बज्यो । एक तिरसूल हाथ म लिया एक जटाधारी महात्मा डमरू न बजावता जोर री आवाज मे बोल्या—अ ल ख ।

'अलख' री आवाज सुण'र हूँ उछल पडयो पण म्हारा बापू म्ने चुप रवण ने कह्यो । महात्मा रे सगला जणा घोग दी । म्हूँ भी पाछ कोनी रियो । महात्मा मृगछाल विद्या र चवूतरा माथ बठ गिया । एक बार वणा कर तिरसूल पर बध्या डमरू ने बजायो अर जोर सू अलख बोल'र बवण लाग्या, 'भाया वगत वणो खराव आ रियो है राकड नाकड म खेती होवेला । धोवा मे धान त्रिकेला । खेता म मकान अर कूडा रा फरा म चारी उगला । सुरग री भात जमी जगमगावला—दीवी कठक निजरया आवला । मिनख पागळो हो जावलो—आदमी आकाग रा तारा तोडेल । मगरा रा जीव जिनावर मिनख वण'र कीडी कुजर ज्यू फरला । मिनख कठक निजरया आयला ।'

महात्मा बोलता चालता रक्या । जोर सू अ ल ख' बोलर मृगछाल उठाई अर चालता वण्या । सब लाग देवता रक्या । बात करण लाग्या—महात्मा ने आज कई होग्यो । हर बात बतुकी, उल्टी अर बिना हाथ पगा री करी, जणी रो मूठ है न मथारी ।

आवता दो चार सोमवार तक सब सेठ-साहूकार अर पटेल पटवारी वणी चवूतरा पर आवता रिया पण वणी दिन रे बाद महात्मा आज दिन तक पाछा कोनी आया ।

आज वणी बात ने उनपचास बरस बीतग्या । सज्जनता अर ईमानगारी ने ओढया आज म्हूँ जिनगाणी री दौड घूप म उल्ल्या अणा बेथाक मिनखा मे

मिग्याचार हक नो लागी क यणां मटारुया री गगणी बागं वगत री बसोती पर गी टन मांती उार है ।

मगरा रा रूग सि सि कटना जा रिया है । रांरु काण्ड म गरी हावण लागी है । मुगारा भागे बघनी क घोवा म घात बिकरियो है । गहर अर गांवा मू जुष्पा उपजाऊ रोगा म पमना ऊभी रेवण र बजाय डेर मकान ऊभा है गणा म घात र यत्राय टापर पना हा रिया है । जनमन्दा रा तत्री मू बघोपा हा रियो है । बल वग्दा बघ्या पर रिया है । ट्रेटरां मू सन हक रिया है । माटा माटा बाधा मू जावण लागी गरांमू अर रिजनी री मोटरा मू मिचाई हावे है । चडस जीवन री राम कानी पड जिण मू कू उा राफ रा म चागे उगण लागी है । कई गाव अर कई शहर भा जमी बिजली मू जगमगावण लागी है । हकीवन म दीवो तो कठन निजग्पा आव है । रिगान रा आविष्कार—माइकिल मूल र स्मूटर मोटर बार रेल हव गाडी अर राकट तक मिनत न पागळा करदघी है । पैन्ल मानता वणा रे माथ मल चड है । अणी भान पगां मू पागळा मिला र दिमाग अतरो बढ़गी त वी गेजट म बठ र चद्रगा मू मिट्टी गाल लागी है । सोचू हू क आवाग रा तारा मोडण म फाई बगर बाकी है ?

सडका पर बेयाक मिग्या न आता जाता दग र लागी है क रूग कटबा मू मगरा तो टाटला होग्वा अर वणा रा सगळा जीव जिनावर मिनता जूण म जागिया है । अणा वारते ही कोई गेर ज्यू गुराव ता कोई चीता ज्यू छळ कर । काइ बानरा जिया दात्या करण साम आवे तो काइ नोमढी री भात वासा पट्टी कर । ओर तो आर काउ तो कृत्ता ज्य काटवा न रपट है । कतरा ही बिडवा चिरखत्या री भात ची-ची कर न चुप र जावे है । हा सगला जाण क सांप सांप रो दुसमण नो ंह्या कर पण आज मिनत-मिनत रो दुसमण है । आज जमी परे कीडी कुजर ज्यू बयाव मिनत फिर है, पण सही माना म मिनत कटक निजरघा आव है बाकी सगला मिनताचार ने खटवा टाग राखयो है— खूटी माथ ज टग्वा म्पारा पोपलोन रा कमीज री भात ।

वी ए पास कर न आज रा पात्र बरस पली म्हारा त्पतर म बघ्या बाबू— जणा न कलम पकडणा म्है सिखायो— वे काई टेनिविजन खरीदणा री बात कर तो कोई फ्रीज खरीदण री पण असगता ता वी ए पास कर न बाबू बघ्या है । अणा म जरूर ज्यादा अकल होसी । म्ह छतीम बरस पेल्या री मिटिन पाम बाबू अणा री बरावरो क्थिया कर सकू ? म्ह तो आज भी भाडा रा मकान म र रियो हू । पेगन रो एक बरस बाकी अर उमा रा पीळा हाथ करणा ।

अणी दीच उमा आई जर वाली—पापा भाजन अगेगो नी रागी ठडी नो जासी । सुवह नो बड्या रोटी जीम न पवारघा हा भूम कानो लागी कई ?

उमा री बात सुण'र अतीत मे खोया बिचारा री दौड एकदम थमगी । नीम र नीचे ढल्लया माचा सू उठ'र बोल्थो-चाल वटी भूख तो वदी की लाग री है ।

हाथ धो र भोजन करण ने बँठयो । घाली म मूग री दाल अर रूखी रोटी । मू पूछ बठयो-“घी खतम होग्या कइ ?”

“हा, एक तारीख ने लावागा । आज पच्चीस हागी है । पाच दिन निकल जासी ।” उमा री मा कहयो ।

भोजन कर नै मू चोक मे आयो ही हो अर भोला काका हलो पाडयो-मतोप बाबूजी ।

मू बोल्थो-“आओ भोला काका, कइ बात है ? नी बजण वाली है, किया तकलीफ करी ?”

“साब हुकम आपने सुबह नी बज्या दफतर बुलाया है ।”

“असी कई बात होगी ?”

“साब सुबह दौडा पर पधार रिया है । कुछ जरूरी फाइला लेणी है ।”

“ओर कई कयो ?”

“कवे कई ? मू आपने साब'रे लारे, दौडा परे ले जावा र वास्ते पूछयो पणा सदीव री भात साब कह्यो नी सतोप बाबूजी दौडा रे काम रा कोनी । वणा न दुनियादारी रो तजुबो कम है । दौडा पर तो लारे लक्ष्मीचंद ही जावे । उठे तो चलता-पुर्जा री जरूरत है ।”

'अच्छा, कई बात नी । साब हुकम न अरज कर दीज्यो क मू सुबह नी बज्या पैलो दफतर आ जाऊला ।”

“हा बाबूजी आणो तो पडसी ही पणा आप भी भोला भोला रग्या । जिन्गी भर फाइला तोल'र सतोप करयो । दिन भर फाइला सू मगजपच्ची तो आप करो अर मौजा लोग माड खावा म तो खेमली और नाचबा मे पेमली । मू जा रियो न सुबह वेगा पदारज्यो ।”

भोला काका चल्था तो गिया पण वणा री बात म्हारा काना म बार बार गूजण लागी-खावा मे ता खेमली और नाचबा मे पेमली । पण सोच्यो-प सन मे तो एक बरस बाकी है । उतरियो काल क्यू जोगी होणा ?

इया अणी कडवी घूट ने भी पी'र चौक म नीम रा नीचे बिछया माचा परे सज नता अर ईमानदारी री चालर ओडया जाडो ह्यो ही हो अर म्हारा पाडोसी रो छोर । रतन हाथ म ट्राजिस्टर लिया म्हारा मकान री फाटक रे बारे सू निकल्यो । ट्राजिस्टर म गाणो आ रियो हो-देख तेरे ससार की हालत क्या हो गई भगवान

□

आमवासण

हनुमानसिंह पुनिया

अकाळ र कारण भूखमरी रो पीटा स्यू मोटोटा अकसरा अ र उतावां रो बोलती पीकी पडती जा रई है। दरमेस ई भूख अ र तिस र कारण मिनता अ'र डागरा र मरण रो खबरा रो पीड स्यू भरीपोटा छापा पडण सू राज र मालगां अर माटोटा सावा र अग आराम माई खळवळी माचगी है। जब रो घजा सू लीडर लोग आप आप र चुणावी हत्का माई कूडा सगा त्वासा त्वेण र वास्त दौरा माथ आपर बगला स्यू मौज छोट र निसर पडया है।

दौरा करती बरिया नेतावा रो सोचणू ओ है कि आपा न तकलीफ तो अवस होमी पण आगल चुणावा माथ आपा रो बान बणी रसी अ र सागेई टोभत्ता रा रिपिया मोखळा मिलसी। इ वास्त सगळा नेतावा ई आप र चुणावी हत्का माई प्रोद्याम रा खाकी बणा र आप र चमचा कुडछिया खन खबर पूगती कर दीनी।

आपर नेताजी र पूगण रो खबर सुणता ई लोगा रो बाछा गिल पडी। सई लोग आ र सोच रिया हा के इव ता भूख अ र निस स्यू लाग छूट जागी अर नी ता की न की मुभीनो जस ई हो जागी।

नेताजी साव आप र आण द भवन स्यू मोटोटा आराम रो लारी माई बठ र खान होवता ई गाम र माई सभा रो उ दाबसत अ र ज बोलण र वास्त पुलस अ'र चमचा इया डोलण लागया जिया अकाळ रो मार स्यू डागरा र मरता इ गिरज कावळा आया करै है। जा हवाल देख र लोका सोचियो के अकाळ तो पल्याई हो ज दूजो अकाळ रा वारट गी आया है। लीली छत्तरी र घणी तो सेना माई अकाळ पटकियो हा अ र राज रा घणी बस्ती अ र घरा माड अकाण पटकमी। आ स बात मोचण र पाछ ई लाग नेताजी साव र आवण रो तावड तो इतजार कर रिया हा।

नेताजी साव रो लारी नीगताई अकेस पताळ ज ज र रेळ सू गू जण न

लाग्यो। नेताजी साब लारी स्यू हेठ उतरता ई भोड भडाक न तोडता हुया जियाई मच र माघ पूगिया पूला री माळावा स्यू लाद दिया गिया। नेताजी साब हाथ जोड र स लोका री आगत नी बोल्या ई माणती कीनी। माळावा गळ स्यू आतर मेलता यकिया आप री घडियोडा भाषण बोलियो—' भोत सर्म र पाछ था लोका स्यू मिलर हूँ घणमान राजी हायो हू। म्हार हिवड रा मिठियास भाया अ'र वना। अकाळ रे वजह स्यू आपा स न घणमान दुस ऊचाणू पड रियो है। राज ई वड सोच माई पडयो है। ई वास्त काई करणो चाहीज। ई हरमेस पडण आळ सूख स्यू किया लार छूट। मू गाई रो ओ जमानो जके रा की जावतो कानी। इ टेम सै इ मोटोही अटचना रे रैवता इ लाक डट र अकाळ स्यू पूरो पूरो बावडो कर रिया देतर हूँ घणमान राजी होयो। राज अकाळ राहत रा घणा घ'घा खोल्या है अ'र आजू ई खोलती। स ई गरीब मजूर लोका न घ'वो मिल जासी। सुस्त धान री दूकाना ई खोलण रा अजाम कीना है।' भातण र बिचाळ ई सभा र एक खूण स्यू एक सीधो सपाट मैल अ'र पाटयोड चोळिये माई अळजियोडो गरीब बोलियो, "साब चूकटीव धान मिल है, जकोई बेजा मू गो है। मजूरी ई रिपियो, आघो रिपिया हाथ जोडी स्यू देव है। कणाई कणाई तो देव ई कीनी। ई मजूरी अ'र ई धान मू तो एकर ई आ पापी पेट भर सक कीनी। याकी मि है र दिना म्है अर टावरी काई खार गुजारो करा। ओ राज तो इया ई तिरमा तिरसा मारलो आ काई याकी आजादी है। ये तो लालचिट ह्वै रिया हो अ र म्हाका तो पिजर ई सुलग्या।' इ मिनख रा मिनखपणा बोलता इ मानीजत लोका ई री बालनी रोक र कियो 'भाया पत्या बात तो सून पछे ई की वेवणो है जको कह दीज्यो। बिचाळ ई काइ दाळ दळ है।' इत माइ चूक गिटर होठा माघ जीभ फेरर नेताजी साब ओजू बोल्या, 'इ भाय रो वणू सवा इ सोळा आना साचो है। पण अकाळ री वजह अ'र माटोड खरचा र कारण राज रो करचो करचो हाग्या है। हैण काइ करा म्हाक इ खरच माघ रोक लगा र कमी कर दीनी है। फेमिन हैड स्यू भत्ता इ इव नी मिल सकेळा। फेर इ आपा र सइ दुखा न भेटण वास्त मोटी मोटी येजनावा वण'र आव है। ये अ र म्है स इ सुखी होस्या। धान ठा नी पड है। अ राज र खिलाफरी पाल्टिया भोत घणी गडवड कर रइ है। जिया कइ केइ दळा रा नेता केवता रव है 'दारू ब'द करो'। कित्ती पागन्धणै री बात है। राज र रिपिये पिस्त रा घाटो घातणू, अ'र पिबणिये भाया र रोक लगावणी अ र ठकेदारा रा गळा मासणा।' सभा माइ स्यू ठीक अ'र गलत री आवाज नीसरता इ राक दी जाव है।

इत माइ नेताजी साब पाणी री डच्छा दिखावता चुप ह्वै र सास खीच्यो। सरवत रा गिलास आवण स्यू पत्या द एक भूखमरी स्यू मुखाय चहर र गरीब

मजूर आप र पीवण रा पाणी नानी गु टाली भर र नताजी साव र हायां माइ द लीनो । नताजी साव र जिवा न पाणा पीवां जीभ र माथ माग्यो, मूढा सारा जर होग्या अर गील गील पाटग्या । नताजी गाव गालबम हुं र बयो, "इ बंगूण र बच्च न लान मार र आ तर गग्या । जिवां छ धी पावराट मिग न घबरा देर आतर जिवा तो सभा र माइ चोतरफ लोबडा बालण लागग्या, "गाव म्ह तो ओ जेर जिवांवाला गारा पाणी पीव र जीवना रया हां । ओ मू पीवा जको इ पाणी ये नी पी सवाता । म्हाका बाद गुयारा कराला अर बाद म्हाका दुपडा दूर करस्यो । स्मा बहरा ता पावां न आं द पाणी पीवां । जे ओ पाणी दला जेर इ है ता ये हरमम इ जीतर गुलमला करता रया हो जका न आज चालीस वरम हावण लागग्या । मीठाइ पाणी राये अत्राम बसू ती करया । घान तो हरमम ई कूडिया घेटा देण रा काजी बाण पगी है । अर म्ह घां सारा माई हरमम ई इयां अळभ जाया हां जिवा मक्डी जाळ माई मरण री वेळा ताइ अळ्ळी खै है । ये हरमम इ आसवासण देर जाया हां । इण याक वूडिय दणाडा सू काइ भला हासां । गेरेग मिनन तो वूड बालण सू इ मर जावता । ये कारा इ वूड बोलता रया हो, जका रा की ती विगाडा हाव । पट फूनाया मुगटण्ड जिवा बण्या घूम रिया हा । ' जताम करणिया उमचा अर चार पाच पुल्स रा सिपाइ सडा होया अर भीड भडाक न दरा घमका अर सागोइ शासापट्टी दर स्यान करता घकिया पाछा जमाया ।

इतो ताळ माइ ता नताजी साव री स पोल री गोघळी गुल घुकी ही । व लोका आजू बोल्या राज राहत देसी अर आपणा हुग दूर करसी" । अ लच्छा बाळी वाता बनार भरसा दिरावण माइ फल व्हे गिया अर लाका भरमावण माइ कच्चा पडग्या ।

सभापति स लोका न घनघाद लेवता थका कया 'स इ भाइ आप आप री तकलीफ वागद माथ माइ र नेताजी साव न द दये । साव पचात भवन माइ ओजू थाडी ताळ आराम करसी । थावयाडा है अर बठई चा पाणी पी र जासी ।

पचात घर माइ तो बरपी, पडा, कतल्या, ललाक न, रसगुल्ला अर तरिया तरिया रा मवा खावता अर सागइ दारू पीवता देख र लोका री बच्चो खुच्चो भरोसोइ निसरग्यो । ओ पाटक देपर भीड माइ सू एक भणियोडो मोटय्यार बोल्यो, ' भाया आ मोटाडा न आपा छोटाडा री काइ फिरर है । एक खानी ता आपा भूख अर तिस सू मर रिया हां दूज खानी अ गुल्छररा उडावता थक कोनी । वाता सू मिठियास उगळं अर घट माइ खोटा घड । इणा सू आपा री भलो नी ह्व सकली । ज लोक ता अकाळ र माइ इ मजा लूटं है अर जमाने रो तो केवणु इ काइ है । हालो आघ मिनख र आग रोबणू अर आपरा नण गमावणा

है ।" इत माई वीचाळ इ एक दूजाडो मोटघार वाल्या, "बल्याड डील माथ लूण गांसणो अ'र पूरस्याडो थाली न ले'र नासणो आ धोलपोसिये नेतावा रो घ घो इ है । अ कांइ गा घो वाघ रा चेलका घोडा " है । अ तो फरजीडा, घासेवाज, गोडवाजिया अ र किरकाटिया है ।" इत माइ जका लाग आप रा दुख लेर रोवण आया हा जका पाछा इ आपर घरा सानी भीर हो पडघा अ'र चमचा कुडछा ता की आळा गिळा बणिया इ । ज ता राज री नीव रा पक्काडा मजवूत भाठा है जका माथ इ राज टिकियाडा है ।

नेताजी साब ता भोजा लूट'र आपर आण द भवन यानी दूर भीर पडघा । थोड दिन पाछ भणियाडा मोटघारा कया के छापा माइ छप्या है ' नेताजी साब फेमिन नू वूड मिमटरोला र रिपिया रो आपरो बडो सारा हिस्सा अ'र टी ए भत्ता र सागइ फेमिन हैट स्यू माटी मागे रक्म उठा र डकार गया है ।" हा, आ आपा रो भलो बरणिया मिनिस्टर अ र नेता जका न चुणावा माथ जनता न भीठा आसवासण देवणा जर ह्यासा पट्टी देवणा न वूडिया दौरा करण रो लोकत प्र रा वेम सो बणियाडो है । लाग तरसता इ रह जाव है । हरमस इ भवर चकरी माइ उळयिया रव है । □

सवक

छगनलाल व्यास

टेलीफून री घटी बाजी ।

'हैलो ! बेवता नटवरलालजी फून उठायी ।

हैला ! म्ह अमृत एण्ड कपनी मू प्रवीण बोल रह्या हूँ, आप ?'

म्ह भारत आयल कम्पनी सू नटवरलाल बोल रह्यो हूँ। फरमावो ?'

फरमावो काइ ! आप सू अेरु शिकायत है। सामी सू आवाज आइ ।

शिकायत ! केडी शिकायत ! ! सेठा रो बाको फाटो रो फाटो रेंय

ग्यो ! घोळा आयग्या कद ओळम री काम नी अ र आज आ केडी शिकायत ?

इण बार तेळ रे पीपा मायने पाणी रे भेळ री शिकायत उपभोक्तावा सू लगातार मिल रही है ! थोडो ता भगवान माथ भरोसा राखो । हळक तेळ रो भेळ तो सुण्यो पण कोरो पाणी आटे मायने लूण खट लूण मायने आटो किणकर चाल सक ?' सामी सू आवाज रीसा वळता री साफ सुणीज रही ही ।

'सारी ! बेवता सठ नटवरलाल जी फून नीचे राख र कनक्सन काट दियो ताकी नी बास रे वे नी बासुरी बाज । रात भर सेठा रे काना मायने फून वाळी आवाज भूजती रही अ र आरया मायने ऊष नी । सठ नटवरलाल धानी इमान दार आदमी । दोय मिनखा मायने पूछ पूरे राजस्थान मायने तेळ सप्लाइ कर पण कदइ शिकायत नी पण आज सुब स्याणी शिकायत सुण र माथो चकरीजण लागी ।

दूज दिन अगरबत्ती कर दुकान माथ बठया के' मुरलीधर जी वाहा चढावता आय पूग्या अर पछे कुण केवे विवाह भूडी । नीठ कर मनाया नीतर महाभारत मच जावतो । अ र असबाग र मुख पृष्ठ माथ वेइज्जती हुवती जिको तीन पीडी खप जावती ता भी वळक नी उतरतो ।

अब सठ नटवरलाल जी री हालत कूवो बाव दूर जिमी रहेगी । आखर जो

लूण हरामी है कुण अक दाय गदी मछळिया र लार पूर-ताळावरा पाणी गदी
 व्यू व्हे । अब घणी सावचेती राखण लागी । ब्यापार तो जाव धड मायने पण
 वरसा री जम्पोडी पेठ माथ घक्को लागी । आखर जाच पडताळ खातर निजर
 फॅकणी सुरू कीनी ।

अक दिन सेठ नटवरलाल जी मोटर साइकिल माथ सूरु अहण लिये रग्या
 हा । बीच मायने पडे हरीये री ढाणी । घोरा रे बीच सडक सूरु च्यार कदम आघो
 हरिये रो झूपी । हरियो बाळपण सूरु सेठा रे कारखाना माथ काम कर जिण सूरु
 विश्वास जीत्योडो, अर मूछा रा बाळ । उण माथ व्हेम आवण रो सवाळ इ नी ।
 पण जद मोटर साइकिल माथ सूरु चूप रे वारं तेळ रे पीपा रा ठेळो निजर चढयो
 तो माथी ठणक्यो । देखू तो सही पूत मायने कर काइ है । ओ सोचर सेठ
 नटवलालजी दब्या पगा झूप रे खन पूग्या अर मायने झाक्यो तो अकळ कही नी
 करं । हरियो पीपा रे ठीडा कर र मायने सूरु नोयक किळा रो डिब्वो भरं अ र उणरी
 ठीड पाणी घाळें । हरियो रगे हावा पकडीजग्यो अर ऊभो ऊभो घूजण लागी ।
 सेठ नटवरलालजी हरिये ने आछी तरिया आडे-हाथा लियो । अर पछे समझावण
 लागा—'लूण हरामी ! मजदूरी कम पडती तो केय देवतो । यू म्हारी रोजी अ र उण
 सूरु भी मोटी पेठ माथ ठाकर मारं यनं शम कोनी जाव । अक घर तो डाकण
 भी टाळ अे करतूत चोखा नी । अवे धन म्हू भी टक्के ब्याज छोडू नी कोट
 कचेडी दिखाय देवू ला जद थारी अकळ ठिकाण आवेळा बाल आ हरामखोरी
 कद सूरु सीखी ?'

वो चुपचाप सुणतो रह्यो ।

'हरिया ! यू मूड रे ताळो लगाया पार नी पडेल साची बात बत्ता दे के
 यन आ नान कुण दियो अ र जा घघो कद सूरु सुरू कीना ।

। वो तो साव यू गो बणग्यो ।

सेठा ने दया आयगी मूळ वामण माथ री साग घ खायी तो माफ पण
 आखरी धमकी सुणायी 'अवे ओ ठेळो पाछा कारखान लेय जाव अर थारा पिताजी
 ने बुलाय लाव दोय मिनखा मायने थारी माजनी ती पडावणो इज पडेल ।
 पछे धनं ठेळो मिळेला नीतर समझ लीज ओ जन्त । जा अवे कर दीज थारी व्ह
 जिको अे घोडा अर अे मदान ।'

ठेळो कारखाना माथ छोडर हरिया तो सीधो थाणे पूग्यो । अक दोय घाव
 वरर थाणेवाळा ने इण भात एक आद आर दज करवायी—

'वाळ दोपार री टेम सठ नटवरलालजी मोटर साइकिल सूरु म्हार चूप आया
 अर म्हारी लुगाइ री इजत लूटण लागी । भळा जोग सूरु म्हू उण टेम घरा हुवण
 सूरु बीच पडयो तो म्हारा माथ भी हाथ उठायो । नीठ पड तडकर उणा रो

मुनाबलो कीनी तो अये म्हारो ठळा वज्ज कर गरया हे अ'र वव जद ताइ पारो तुगाइ री इज्जत नी तूटण देव था पारो ठळा ती मिळळा जा कर तीज पारी व्ह तिचो जे घोडा अ र ज मदान । वावत्री म्हार गरीब री इज्जत अवे आपरे हाया है ।

थाणेमाळा तीज च्यार सां ग घोळ हरिय मू करवाय लिया अ'र पछे दारु रो गुटकी तय'र थाणेदार साव जीप मू सीधा भारत आबल क र कारखान पूग्या साथ दाय पुळित नाळा भी । जीप कारखाना रे जागळ रोक'र थाणेदार साव कारखाना रे तपनर पूग्या ।

सेठ नटवरलाल जी थाणेदार न देत'र हक्का बकरा रयग्या । इतरा मायन थाणेदार साव रोमा बळता मू छा रे अणूती वट्ट भरता बाल्या—

सेठ साहब ! आजकाळ तो कानून कायदा मगळा खुट रे हाथा इज लेव सीना है पइसा घणो कमायो दिले जद इज तो घोळा दिग ग तुगाइया री इज्जत तूटण रा प्रवास करो अ र ऊपर मू डाट फटकार । यात राखजो म्हारा भी नाव मवरनिघ है—सायोडा अेक जेक पदमा निकळा लवू ला अ'र परायी लुगाई मागी देखणा मुलाय देतू ला बुडाप मायन अे करतूत डाकणी मायने नाक दुवाय'र मर जावो । बाणिये रो बेटा हुवता जा थाणेदारी वद मू हाथ लागी ?

सेठ नटवरलालजी सोफ माथ बठया बठया धूजण लाग्या जिण मू हाथ जाड ऊभा ह्या पण पया री तपकनी वद नी 'ही । लडखडावनी जुवान म् बाल्या—

पण अ नगना हुयी काइ । म्ह हाल ताइ बात नी ममक सवयो आखर अडी भयकर गठनी का हगी ?

मळनी । दूजी हुवता तो डडा मू बात करतो । घाळा गिन रा हरिय रे हूप मायने घुम र उणरी लुगाइ री इज्जत तूटण रा दुस्ताहस कीनी अ र जट सर रो सवा सर मिली तो बिचार रे ठळ ने वज्ज कर र रोजी माथ लात मारो घान शम नी आय । म्हार एरिय मायन आ हरकत सेठजी ? आम ने टोपाळी जित्ती मत समझी खुद भी जीवो अ र दूजा ने भी जीवण दो । घर गुवाडी अर पठदार आदमी हुवता घमकी मू बात चाल नीतर हयकडी पराय थाण मायने इज समझायतो ।'

सेठ नटवरलाल जी रो माथो चकरीजण लागो । पळग माथे थाण री जीप अ र मिनखार मळ न देख'र पूठे लाछन रा सुण र आख्या आगळ अधारी आवण लागी अ'र आतमघात बँ री सोचण लाग्या बाकी चारो इ' काई । आखर हिम्मत कर बोल्या—

'आप पूरो हकीकत तो मुणाया ।'

'हकीकत बाईं मुणणी हाथ बगन ' आरसी री कठ जरुरत पड़े । छारे री सोय घ राय'र बेय देवो वे हरिये रा ठेळो आपरे बब्ज मायने नी अ'र काळ दोपार रा उण रे झूप नी ग्या ।'

'घाणेदार सा ! झूप भी ग्या अ'र ठेळा भी कब्ज, पण ।'

'पण बाइ धाडा साच वूड करणा है आ र'न वात ?'

'नी सा हरिये री वात माव वूडी हे । (इत्त मायन मुनीम माव री कचोरी अर बाजू किममिस री ता'तो लेय आयो) । आप धिराज'र पैली ताशना बरावो पछे भळे इ' म्हनै हथकडी पराय दीजो ।'

'सठा म्ह कोइ रमकडा सू रमणियो टाबर तो नी, रात दिन अे इज वधा करू ताशना बरा'र क्यू लाजा मारो ।'

ओ तो आया रा आवकार है 'मुनीम बीच बोल्या ।

सेठ नटवरनाल जी अवे मुद री कथा गुणावण लागा ।

'घाणेदार सा ! म्हारे आ वारमाना लारळा कइ वरसा सू चाळ पण कद'इ थोळमो नी चोखा वाम अर चावो दाम आ इज सिद्धा त । जिण सू आ तळ नाम मू बिब । हाळी दीवाली नगळा न राजी भी राखू । पण लारल महीम शिकायत आइ तेळ म पाणी रे भेळ री ता काना न विश्वास नी व्हिया । पण जद आरया नेली तो झूठ भी विणकर ?'

जेक दिन शहर जावता हरिये रे झूप पूग्या ता पूत पीपा रठीडा कर तळ रा टिब्बो भरै अर उण री ठोड पाणी घाळ रण तर हरिया रग हावा पकडीजग्या तो घमकी दीनी वे धारे बाप ने लय आव जिण सू दाय मिनखा मायने थारी माजनी पडावू अर ठेळो वारखान पाळाय द जिण मू मिनखा र थारा वरतूत वताय सकू । आ वात ।'

'म्हू ता उडीवती इण रे बाप न अर आ पूगो आप खन । अ'र जा झूठी रपट लिखवाय ली । उल्टो चोर कोतवाळ रे इज डाट । जे विश्वास नी व्हे ता आप पीपा दख सको ।'

ता सठा आप आ शिकायत घाणे सू क्यू नी कीनी ? क्यू कोट कचेडी घरा इज खोल गली है ?'

'जेक गरीब माथे शिकायत रो मन नी मा या ।'

'याव मायन चाव गरीब 'हो चाव अमीर बराबर तेळ मायन पाणी घाळ जन् तो पछे इण सू ज्यादा लूणहरामी कुण न्हे राव । पण आ शिकायत आप नी कीनी इण रो अथ अे सगळी वनावटी बाता है कर एो सठजी ने गिरफ्तार गरीब माथ झूठी लाछन लगावण अर उण री लुगाइ री इज्जत सू खेळण रे कारण ।'

गाव रे तामी सठ १ गिरणतार करतां काळजी बाप पर नियम सगळ्या
गातर अक वास्तव्यल भाग बडयो दस तो सठजा रो मुनीम अक हजार रिपिया
लय र हजार ब्या ।

अर सा तरावो गळती व्हेगी ।'
विता है ।

अक हजार

ऊट र मूढ मायन जीरो घाळणो बंद सीरुया

पण हुयम ऊण मायन रतीभर वूढनी है । आप आरुया देगो तो सही

सेठ नटवरलाल नी गिडगिटावण लाग्या ।
पण इण री रसीदा पयवी है व माळ सही सळामत पूग्यो । बाणिय री

आरुया मायन धूल भीवण री इण री औकात नी । मजूरदार आप हो ।'
मुनीम सौचाताण कर घाणदार ताव न राजी करया अर हरिय रा ठेळो
छुडवाय लिया ।

सठ नटवरलालजी हरिय न वारसान सू निवाळ दियो । अडे लूणहरामी रो
बाइ वरणो ताव उठ इज फोडे । हरियो ठळो लय र मजुरी सातर ऊभो

पण कुण घर मायन घाळ काठ री हाडी अकण बार इज चड ।
सेठ साचे—पेट ने भाडोनी मिळेळा तो हरिये री अकळ ठिकाण आय जावळा ।

अ र आछा सबक सीख जावेळा । हरियो सोच—सठ तो जिदगी मायने भी
विणी मजूर सू मायापच्ची नी करेला अडे सबक सीखाय दियो है । पण आ
म स सबक कुण सीखियो । भगवान जाण ।

□

गिरमाधारी

कृष्णकुमार कौशिक

“टणन्ऽ ऽऽऽटणन्ऽऽऽटणन्ऽऽऽ ।’ तीन ढका लाग्ग्या । अवे ताईसुमाट छापोढी ही । ढका लाग्गन पाण पडेसरी टाबरा री आपस री बतळावण स्यू राळो-रोणोमाचग्यो ।

महादेव जी तामऊ घोळ्सीज्योडा हाथा ने भडवावता वाई जाणे विसे वसा रे कमरे स्यू निसर’र जाव । कितावा बास म दाव्योढी है, अर हाथा ने इया छोदा वर राख्या है’क जाणे छिन एकपली थोड भेम विवाण र आया है ।

पोणे छव फुटा छरहरा जवान । सफाचट गोरो मूडो अर गन्रापोडो सरीर । अपूठा वायोडा छल्लेनार बाळ अर घोळा घप्प गाभा मे फिलमी हीरो सा लाग । उमर आई कोई तीस’क र नेडे तडे । स्टाफ रुम म बडया अर काय मे दाव्योढी कितावा भेस’र गुमलयान बानी चलेग्या । टूटी स्यू हाय थोय’र मटके वने आय ज्याये । पाणी पीवणा चाव हा’क हैडमास्ताव बठीने ही ज आग्या ।

पाणी उमर रा श्री गगागम चोधरी अठे रा हैडमास्ता’व है । टटा स्यू कोई डटे’क’ इच ऊचा घोळो पायजामो ना ही चोकडीदार आसमानी कुर्तो अर पगा म पम्प झू । मुह टोडिय ज्यू उबकाय राख्यो निजरा नीचे पडेहि नी । घमडीज्योडा दूता’क सावळ मुह कीने ही नी बतळावे ।

वा, महादेव जी न देसता इ कालज दूकयोडा रटया रटाया सबद उगळ थिया ‘मास्माच आपरो घटो नी छोडणो चइज ।’

महादेवजी ने वात आकरी लागी । पण चुप्पी खाच रे बोलया, हण’इ जाऊ सा । पण हैडमास्ता’व धीरज किस्सोडे आळे स्यू त्यावे, जावो’क नी ।’

महादेव जी रे जाण मिनिथ बटको भर लियो । एकर ओरू खीची, हण’इ जाऊ सा” अर पाणी पीवण लाग्ग्या ।

हैडमास्साव र काळजै लाय सी लागगी । पय पछे भो ढीठ होय'र पाणो
पीवण लाग्यो । वान हूम उदूनी मय र चिढाळी चरगी । वाको पाड'र गरगा
जाओ व नी ाळ देर कीड वान री है । 'घान खाताळ काड वात री है ।'
माग्यो जाओ देव र मिनय र हाय स्यू वाण वयदे रो पल्ला छूट ही ज्वावे ।
घारी वक्षा म हाका हावण लाग्या है । अर अठे ये मटर गस्ती बरता
फिरो हो ।

पाणी पीवण त मटरगरनी तव काइ ।'
इम्मरजेगी है मास्ताव खीच्या हि की नीमरोला ।
पाणी पीवणे माथे भी इम्मरजसी है । पाणी पीवणे म विसा दस बी
मिनट लाग ।
हू किसो घर माड'र वठयो हू । जे नो तरी करणी है तो वक्षा म जाणो
ही पडेला ।

नटे पुण है । पण नो तरी कर सका । गुलामी को होव नी ।'
जे मानखे रो वत्तो इ घणेवो है तो नो करी भी नहीं करणी चइजे ।'
आप घणा भणिज्या पण प्रेमचन्द तही पटिया । नो करी अ'
गुलामी म हाडो - अळगाव हूव सा । करमचारी अर अधिकारी दोनू एक ही
कायद स्यू वध्योडा हूवे ।'

अव थ काड वात पूछो । हैडमास्ताव रे वळिनो सो लाग्यो । आख्या
गाजर स्यू लाल हैगी । तरणायटा खाय र बोल्यो म्हाने कायदा सिखावो,
भाडो आवे नी अर वाडागर वणो । मास्ताव ये वक्षा म जाओ परा । म्हारे'ऊ
अवे जोर सेण कानी हो मक ।'
तलवारवाजी चौखी पण दातवाजी मोटी । इस्यो हाको पाटयो व बीजा
मास्टर इज वठ आय र भेळा होग्या । चौपेर स्यू पढेसग्घा री निजरा बीने इ
तकाव ही । महादेव जी रा मन खाटो होग्या ।

हैडमास्ताव भी आपरी उज्जत रा सवाल वणाय लियो । जे आज
निवग्घा ता कदेइ ऊबराला ही ज नी । मादा मिनख ने तो मरिया
नी घारे ।

दोनू इ जाप आप र मानस सारु जड'र उभग्घा । सगळा टकटकी लगाय
वान ही तकावण लागरया हा । जे कोइ लार हट ता तिया हट ।
आप त्राओला व नी । बुताप म वस बळ लववण नी । नहीं डूवतो

सीवाळा म हाय घाल । नो करी जाती परी ना काट हासी । सोने रा सली पट म
रावण न ती हूव । हण इ हाड गोटा थोडी हूग्घा तगारी हाय र माय मवा ।
मेनख तो मानस स्यू इ जीव । प्रेमचन्द रा सव वीरो मापडी म यू जन लाग्या ।
6/रित रो हा

अपमान तो गुलाम'इज सँण कर सक। वीरी दिमागी गुलामी पली हुव अर सरीर पछ। चपडासी ने एक कोरो कागद त्यावण रो कय'र महादेवजी स्टाफ रूम मे चलंग्या।

हैडमास्सा'व भी आप रे दपनर माय गया पग। घटी रो टरणाट उपडग्यो तो एव चपडासी बटी न भी भाज्यो।

चाण चक्की जिदोरो होवण री लिख'र महादेव जी छुट्टी सारू अर्जी दपनर माय भेज दी अर आपरे घरे आयग्या।

इमे दो बात नी हु सक'क मदरस रो माहोल जे सातरो हुव तो पडण पढाव-णिया ने कोडापला वणा देवें।

मइ पिचोत्तर म्यू पली इ मदरसे रा ठाठ की जबरा हा। दिनुगी मूणी सात बजे र टेम। जन् के अगुण पासे लाल मूज र पल्लके म्यू पल्लपळाट करते मन्तरसै री दावळ मे पडेमरी टाबरा री टोली कतारा मे खडो प्राथना मावती। फला री ख'वु म्यू महकयोडी मीठी-मीठी बयान आवती तो पछी तकात रो मन गावण लाग ज्वावता। डागळ मोर न आपगी पारया गे छला ताण र नाचता देख'र मन रा मोर इज नाचण लाग ज्वाव।

हैडमास्सा'वथी नित्यान द जी सगळा मास्तरा री सलाह मसवर म्यू योजना बणा'र माइ चारे म्यू काम करावता। हेव री हाती हथाळी मे ही भली। मदरसे मे पूरो लोकत तर हो अर पढाइ लिखाइ सातरी। पढेसरघा मे नी तो घरमे'दर कट हा अर नी राजेस कट। घणबरा गाधी कट ही'ज हा। इतजाम इसो सुणो क रामराज ही हा। सगळा जागी सेन म्यू समभता।

अर जद गमिया री छुटटी र पछे जुलाई म मदरसा खुत्या तो भचाके ही नित्यान'द जी रो कम्पलरी रिटेरमेट रो ओडर आय'न माथ लग्यो। बारा कसूर ईतो हीज हो'क वे लुगाड नेतावा गी धिगाणपणी मदरस मे नी चालण देवता। अवे वारी एक 'यारी जमान वणगी ही अर राजकाज रे आगणे ताई बाह पसरती ही। सगीक मिनख तो बात म्यू ही मारयो ज्वाय। नित्यान द जी रो मूडो ही'ज उतरग्यो।

बारें बल्ल ज चोधरी भा'व आय घमक्या। पाच रिपिया मे चरितर परमाण पत्यर टी सी दीठ दस अर भर्ती रा पचचीस। एकोएक रा भावनाक थरीज'या। चू चपड माय इम्मरजेसी लाग्योडी।

हर हो जठे ई दिा थमग्यो। फूनियो पियोन बुक र साग लिफापो लिये खडयो हा।

'काई बात हे रे फूलिया।'

'सा'व हैड मास्सा'व ओ कागद भेज्यो है।'

महादेव जी कागज बांध र नाम लाया । बी टेम ही गुप्त सू उपनिजोग
मरम पूचा । आधी छुट्टी होवीहो ही अर घणतरा मास्टर ई भमन मारु इ
वतळावण करण लागरया हा ।

महादेव जी तावा-तावा ढग भरता गीघा त्पार म जाय बडया, हेड
मास्टरा व इ राठ न वाउ दवण मारु छुट्टी लय र गयो हा नी'क बढायणन । ये
बळनी म पूळा तातियो है । वाडिय रा लाय म बाद बळनी । जिरा रे बांच रा
महल माळिया हूय व दूजां र पर माथै भाटा नी बाय । आ नी साच्या व इमर
जती र हवै सू द याव र सामी लगणिया डर ज्यावैला । इमरजती बोड हाउ
वोनी व जिबो ता ज्यावैला । म्ही तो वहाव रे सामी तिरणा ई ज सीरयो है, पाणी
रे साग साग तो ल्हासा वव । इमरजती के सगई स्वता । आ वादलां री छिपां
किताक दिन री । बी बगत लारला मगळा हिस्माव तूकीजेला ।
आप मरे सामी शेको गाटण आया हो ।

डाका वास री हाट घोडा ही कर सक । वापरला जठ तो विमरैला ही ।
ये म्हारे लारे कागदी घाटा तौटाओला तो म्ह बाईं चूटयां पैर राखी है म्हारो
ढरावण घमकावण रो बोड मतो नी पण आपरो बात रागण रो हक ता म्हान
इज है । कसूर आपरो है । आप गळत तरीचै सू म्हां ढीठियो । म्हें पर ई
वैची । आप म्हारी नरमी ने कमजोरी जाण र उलटा माथे आय चढया अर म्हारो
मानखो मूडणो सरू कर दियो । ये जे इण असलियत न मान ल्यो तो राड अठइ
मुक ज्यावली । आग धारी मर्जी । कय र महादेव जी स्टाफ रुम मांय गया परा ।
कागद न एकर औरू वाच्यो । वारी अर्जी ता मजूर कर र हाजिर होवण रा
हुकम हो ।

वाकी सगळा मास्टरा आप आप री अटवळा लगाइ पण बात रो बतगडू
ही ज वणयो । निरी नायणा जापो इ विगाड ।

आधी छुट्टी पछै महादेव जी कशावा म आवण जावण लाग ग्या । पण पढा
वण न मन की रो कर । दिमाग तो उळमण म उळज्योडा हो । उल जलूल
वाच्या सू माथा मरणाव हो व औरू पीयोन युक्त माथ चढ'र कागद आय गियो
आपने प्रधानाध्यापक के गरिमामय पत्र पर आरूढ निम्न हस्ताक्षरकर्ता को
अपमानित किया अचना की अय अध्यापका का जवना करने के लिए उक्-
साया छात्रो व समक्ष अनुशासनहीनता का उदाहरण रखा क्या न आपक
विरुद्ध अनुशासनात्मक कारवाही की जाव ।'

ई इमा घोड इ मानला जो हुबला सो देखा जाव'ता' वडवडावता उडवडा
वता महादेवजी कागद कलम ल्या र निवण वठग्या अर कागदी घोडा री नौड

सहृ होयगी । अब तेरा बध के मेरा । हैडमास्सा'ब आरोपा री लडी लगाय दी । महादेवजी, आपरै बचाव सारु दलीला देवण म की ओछ नी घाली । सतरज रो स्थाल मडग्यो । बदेई बारा पदल, बदेई घोडा अर बदेई वजीर तकात श देव । ठाकरां रा हुनका कुण नी भरै । आ रा माहरा बद न देव । अतो वादशाह न बचावण सारु ही लिया फिर । एबर पासा इस्मो पळट्यो'के एक ही चाल स्मू दा काम होग्या । आपरी श भी बचग्यो अर सामल र श भी लागगी "आपने विभागीय अनुमति के लिए बिना जनता से च दा एकत्रित किया और उससे बिना निविदा के कुसिया सरीदी । मैं शिक्षा निदेशक जी के लिए इसे अग्रेपित करने की कृपा करें अग्रिम प्रतिलिपि सीधो प्रेषित ।" हैडमास्साव न श बचाणो ओखो होग्यो । पानी बाचत'ई हाया रा तोता उडग्या । माटी रो भीत पडतां जेज ही नी लागी । इस्या फस्या'क सबडी गळी अर मारवणी गाय । सातवो डको लागत पाण मास्टरा नै स्टाफ रूम मे भेळा होवण रो नू तो आयग्यो ।

स्टाफ सेन्ट्रेटगी वेगो सो आय'र महादेवजी स्मू मिल्यो 'अर भाड हमै बात न नीच ता पडत देऽ ।'

'जाट म जापोडी स्लेह सेवट ही टूटे, आप फिर ई नी वरो ।' महादेवजी बयो ।

समूळी छुट्टी रो टणटणी बाजगी अर थठक सहृ होयो । सेन्ट्रेटरी जी बोत्या 'भणज्या गुणज्या साधियो, आज दिनू ग स्मू दोफारै रो बयत घणो'ई भू डो तपियो । जब सिझ्या ताई जाय'र ठड पडी है । हैडमास्सा ब बडेरा है, इण सारु आस्मू ही आ अरज है'ब 'क्षमा वडन को चाहिये छोटन को उतपात आळी तुल्सी बाब आळी बात न हिवड म राख र ई बतगड नै मुकावणा है । अबे हू महादेवजी स्मू अरज करूक ब आपरी बात न सगळा साध्यार बीच कव ।'

महादेवजी ऊभा होय'र चाल्या, 'मानीता साधियो, बक्षा म जावणो म्हारा काम है पण मन जिण भात बयो गयो, म्हारो मानखो लेवण री बोमिस करीजी, धीस्मू म्हारै बाळजै म ठैस लागी । जे अ मन आप'र परिवार रा जाण र की बेवता सो ईया बात रो बनगड नी बणतो । हू गफा वेरमूर हू, पण राड मुकावण सारु आ बात दोना न ई मानणी पडैला'क, की गळती म्हारी ही अर की धारी अर की दोना री ।'

महादेव जी र बठता पाण हैडमास्सा'ब जापू-आप कुसी माथ बठयाई बोलणो सहृ कर दिया 'साधियो, किस'ई काम न करण सारु आपर नीच काम करण आळा न बदन बदन की न की केवणी'ई पड ज्याव । इन हू गळती नी मानू पण कया कर क ठाड रो ठिगो सिर माथ । हू बात र ए बतगड न रफा-ल्फा करण सारु सगळी कागती कारवाड पाट फेंवण री, जापूजी न बहू देस्मू ।'

कृष्ण मृदालिनी बालक सासु गुरुवा क्षीयण स्थाया व गार मास्तरा
अपत्'र विद्यापतिना, 'भांग म्दारी साया, कूटल माघ मृद नाया । ताळिनी म्दू
वमरा गुजराया ।

हर वगत टावरा म रेवणिना गिरमाधारी टावरा उयू म्दू'र पूठा रात्री
होश्या । □

छोटूंसिध

भीखालाल व्यास

मोटी मोटी मूत्रा, गठीळी मरीर, मुरमो जाग्योडी आग्या छाटा छोटा बाल, साकी बूट साकी पॅट मे सौम्याडो साकी कमीज—य मारा ईलपण जिका के एर पुनिमहाळा म व्हणा चाहिज छोदूमिध म ह । हाथ म छाटोमीव बुतकी लियोडो अर माथा माथ टोपी घाटयोटा छादूमिध एक माम्नी मिपाही भला ई व्हो पण मुण न वो हमेशा थाणदार रो बाप रज ममभ ।

छोटूमिध बंद म छोटो है रण वास्त स्यात् उणरा मा बाप वातपण म उण नै छोटियो बेय'र बुलाया व्हैला अर इसकून म नाम निखावण री उळा उणरी वो ईज नाम हाजरी रजिस्टरा मे चढग्यो व्हैला अर यू छोटियो छोटूमिध वण ग्यो चैना । हम मिनखा म वो छोटूमिह र नाम मू रज जाणीज ।

दुनिया रो स्यात काई नमो टमो नी व्हैला जिको छोटूमिध ती करियो व्है या नी करनी व्है । भाग हाळा भेळा पक्को भगेडी दाहहाळा भळो पक्को पाह दियो, अमन धावा च्यार पी जावँ अर ऊपर मू फेर किरकी' यारी पन्नाव । पण इतरो नमावाज व्हैता थकाई उण हालताई एक पडमो ई नसा माथ परच नी बरयो । उण रा सिद्धांत व—ममाण बंद ई नी उळ जाया गिया मुडदा रज वळमी ।

म्हार मवान मालिक जद नीचलो एक कमरो छोटूसिध न रेवण वास्त भाड लियो ता म्हन एक रात नीद नी जाई । आ कडी खानी पीती डाकरी अर घर म घाल्यो घोडो । कडी दण व्हो । चारा रा अर पुलिसहाळा रो काई पतियारा । ए तो जाप र मग बाप रा इ नी व्है । मापा र कडी मामिया ।

उण न जाया त च्यारव दिन पछ री वात म्है सीटिया चढता हो के उण आवाज दी—

—नमस्कार मास्माव

—नमस्कार। का सा मुसीबी कार्र है। नी चावता थवाद मृत
मुळर पडूतर खणी दन पडया।

मुसीबी मवाधन गुण र वो पून न कुणो दग्गो। आपरा बाल म मिसरी
घाळती वो वो-वो—उम मै र बानी ह। आपरी त्रिया चाहिज। पधारी वू नी
मा। जर उण पीळा पीळा तान काडया।

मैलीतीक पाजामी जगरजी रा जाठी वणियोडा उतारयो ज्यू ई पडियो घनी अर
एक मत्री घिस्ट लूगी छूटी माथ लटकती जग जग बीडिया रा अधवळिपोडा
दुवडा फेंक्योडा। एक जूनी बूटा री जाडी खुणा माथ उतारयोडी। बस आ इज
उण री सामान। ताय तीन जकटराणिया रा जधनागा पादू भीत माथ टरयोडा।
महन उण माचा माथ वठण रा बहूघो अर बीडी घामी। म्है माचा माथ
वठग्या। माचा माथ विछियाडा गूदडा माथ मू मल अर तल री बदवू म्हार नाक
माथ भरीजण लागी अर साथ ई भरीजण लागी कमरा माथ गटाटोप हियोडी
बीडिया री धु आ।

—किबर जमग्या म्है सिप्टाचार निभायो।

—हा जमणो हम कार्र डीर है तिन काडणा ह अर उण रा मूडा
माथ पीवी हसी जायगी।

—टावर छोरू त्रेय आवो हम म्है जान न जाग बढाई।

—टावर छोरू ती हमे निण रा लावा एकला जीव हा वठ ई पडियो
खणी है उण हाथ हिलावता कहया।

—क्यू लुगाई टावर?

—कोर्र कानी। वो उतास नैग्यो।

म्है हालानि प ला परिचय माथ घणी नी घुलणी चामती होपण वात अ डी
छिडगी के त्तरी वाता पूछीजगी।

—फेर आवूला कर्र ई केय र म्है उठण लाग्यो।

—चचाय मगावू

—नी बस हमे चालू थोडो जल्मी म ह केय र म्ह उठायो।

—फेर पधारजो केवता उण म्हन हाथ जोड दिया।

जो छोटूमिध स म्हारी प लो परिचय। उण पछ ती मामी अपूठ कई बार
मिलणी हियी पण म्है उण सू घणी वात करण री कोसिम करी कानी पुलिस
हाला सू ती आगा इज भला राजा जोगी अगन जळ।

छोटूमिध छोटा व्हैता थवा ई उण री मान घणी माटी। बसकोल र सन हाळी
जाळ र नीच जठ न पत्तवारीजो दाय माचा विछाय अर आयो तिन वान-वाछ

सू माथा पच्ची करता रव, छाटूसिध एक माचा माथ टागा पसार'र सूता रव ।
आयौ गियो इण घाट रा देवता न ज माताजी री जरूर कर । जो कोई खन हाय'र
जावण री कोसिस कर तो छाटूसिध उण न आवाज देव—कुण जाय रह्यो हेर ?

—आ तो म्ह हों सा भावनिया !

—मा व नि या ?

—हा सा ज माताजी री सा ।

—ज माताजी री यू जागा आगा किवर चाल भाइ ववती केवती
छोटूसिध सूता सूतो इज घाटकी ऊची कर न ओडी मीट मू देख ।

यू कितराई चालण हाळा भावनिया यन मू वी वीडी, सिगरेट, अमल अर
दूजी चीजा री वसूली करे । मिनख ई जाण के इण चाकी माथ चुगी चुनाया
बिना पार नी पडला ।

छोटूसिध म एक गुण फेर है—वा घर री ममस्यावा सू लगाय र राजनीति
ताई सगळी वाता माथ लेक्कर देवण न हर टम त्यार रव । दोय तीन मिन'प
मेळा व्हेता ई वी आपरी टेप सरू कर देव—भोपजी । आ मूरख इज इसी
ह के र सिवाय मान वज नी एजाण राज आयग्यो अरे राज करण
न अक्ल चाहिज, हुसियारी चाहिज न थार अक्ल वठ न थार माय
कुण पढ लिख'र हुसियार वण्यो ? जाज ताई राज ती इज करयो । हजार
वार गगा नहाया सू वदई घोडी वणी काई औ वाली क्यू नी राव जी अर
जीमणी आख मीच'र सामला कानी देख ।

म्ह वठ थाण म ही जर एक थाणाटार जायो दूजी की थाणदार
व्हियो ता काई व्हियो अक्ल न हुसियारी वठ सियाळया वद मिध
जलम्या जो म्ह वठ नी व्हेतो तो वापडी अधनाळ नीकरी छोड जावती । पण
म्ह उण न कह्यो, यू सोच क्यू कर भाई ! म्है थार साथ हों जितर थू परवा ई
मत कर । जठा ताई छोटूसिध जीवती है थन पट री पाणी ई हिलावण री काम
कानी । थू ती निरभ लटठ वजाव । अर जाप विसवास मानी पराय मूड
हुकारा देरावू हू पण जद उणरी वदळी व्ही ती उण म्हारा पग पकडधा
छाटजी, जा थे नी व्हेता ती म्है अठ वदे ई नी रय सकती । आप म्हने जो अपनापा
दियो म्है जि'दगी भर नी भूल सकू । अर उण पछ म्है वठ यू करयो—उठै यू
करियो अर आपरी रामायण सामलो जवाव दवती इज थाक ।

गाव री काई बात इसी नी व्हे जिण म छाटूसिध टाग नी जडाव । गाव र
भगडा री निरण छोटूसिध र 'कोरट' म व्हे । वी दाय थापा अर बार गाळां
काठ'र बात कर अर फसली देव । इण र अलावा वद वद लडावण भिडावण
रा काम ई वी करती रेव ।

गाय इज गो पूरा गलारा म बाद याग २ ता छोटूगिष आपरा गण राग ।

—ननजी ए गलगहो १ गादू जियो । मिंग यागो कर ।

पट छोटूगिष जावता—बाद ननजी ए हा याग ग्हाण गण जाया हा । म्हन कवता हा क गादू ग्वागा ।

भलाई छोटूगिष ननजी न जाण ता इ नो ह्यो पण हर यात म मुदन बीज जहर लायता । जाण सगळार्ई काम छोटूगिष रो गलाह मू इज व्हता व्हे ।

—आवा गठ । कय र दसावर मू आयोटा बाणिया र छारा मन मू च्याय, मिंगरट र अत्रावा यो कय कय रावठ रिगिया ई वसून कर सद ।

—आज तो सटा मिटाई तिलाय दो ।

—हमन ना घणा त्तिना मू मिळिया ।

—सावर हो बाई ?

—विण जय

—वैगलोर मू डोषा कय तो गारें दे बाद लावो । हमन पत्राणा चीज जहर तादजी ।

अर कद कद दूजी रूप

—कयूर बाणिया मू करहो उरडो विवर फिर है ?

—व्याव मे विनरोन माल लूटिया ?

—म्है मीठा मूडा मू इ गिया ठीक ठ आवण दा कलाई बल म गेग कढाय दूगा खादीडो घणा त्तिन व्हिया है घाट म भी रायता ।

अर इण तर मू उण रा तीर निसाण लागता ।

छोटूगिष म्हारो पडोसी होवण मू दिन म एजाध वार तो रामा सामा व इज जावता अर कद कद म्हन ई उण री वीरता री वाता मुणणी पडती ।

तीन वरसा ताई बी वठ रह्यो पण उण कदई आपर घरे धुजी काड र सीगन नी भागो ।

—बाई सा जीम लिया म्ह कदइ कदई उण नै घूमनी ।

—हा अर उण रा मूडा माथ देसी घी री चिगट चमक जावनी । माती सतवाळो गाम भाऊ पाडो व्हे जडो व्हियोडो छोटूगिष मूडा मू जिनगे पाटी बोलतो, मन रा उतरो इ भाळी अर भलो "हला जो म्है कद रे माथ ई ना मकती हा । वात वात म मा-वन मू सवध जोडणियो छोटूगिष जापर हिय म दरद रा भरघा समुदर लिया व्हता उपर मू मुळकणियो माम रा माथ रावतो व्हता आ वात म्हन ठा ई नो पडनी जा उण दिा बी म्हार पडासी रामसरण न इतरो काम नी आ जावती ।

वात यू द्दो व म्हार पडोस म रामसरण रा लुगाई आपर डिल माथ घामनल छिडक'र तुळी लगाय ली । माफ हत्या अथवा आत्म हत्या रा केस वणती । पण छोटूमिघ न ज्यू ई आ ठा पडो वो भट दौडती आयी । फटाफट स्टाव भगोली, चाय-गाड रा जिब्वा लाय'र अठी उठी विगेर निया अर धाणदार राव जितर ता इण तर री, रासो वर दिया जाण चाय वणावता वळी व्हे । रामसरण ता दुवान माथ हो उण न ना वापडा न ठा ई कोनी ही ।

धाणदार आय'र पूछनाछ वरी ती छाटूमिघ हर तर मू उणन पूरो विमवास दिरायो अर केस मुलभाय दियो ।

म्हन जद आ वात ठा पडो तो म्हन विमवास नी हि्या । म्ह साच्यो के छाटूमिघ खासा हाथ मारिया व्हला । अर आपिर एक दिन जद रामसरण री वात चाननी ही ता म्ह पूछ इज लियो—किर सा छाटजी रामसरण र वठ कितरो व हाथ मारियो ?

वात समभ र छाटूमिघ आपरा पीळा पीळा दात वाडता हस्यो—काई भाळी वात करो माडसा एक घर तो डावण ई टाळ । तव पार्द ई ली व्हे ता गऊ र रगत बराबर ।

—जा किर व्ह मव ? म्है ता ई पूछया ।

—जा ई व्हंगी बस म्हन ओ मत वूभा व आ व्ही किर । छाटूमिघ ठा नी काई ध्यान लगावण लाग्या । उण दिन प'ली वार म्है उणन गम्भीर व्हता देख्या ।

—ता इ ?

—म्हारी जुगाई ई एक दिन इणी तर सू घासतन छिडक न इज वळी हा । केवती केवती छोटूमिघ गळ गळा व्हैग्या । □

दायजै रो घाव

रामस्वरूप परेश

घाती रा टगडा पायचा मू पसीनू उपाडी पीडया ताणी पूगगा हो । अर डील मू चिपडी बडी माय सू मगर चिलकवा लागया । दोपार हुया पली, दज अ हेवाळ होगम्हा ता नाम पडयो साळा दिन कियाणी निसरसी ? केसू एक रुख र हेट रिक्त्या टाव न माथा र बधीजडी साफी सू नाड रा पमेव पूछया । सूवता गळा माय दाय घूट पाणी री राळवा सारू वन हाळी प्याऊ माथ घोवा वाटयो इज हा क उणन मुण्या-

रिक्त्या !'

वा दाय घूट वगा वगा गिट'र जापरा रिक्त्या कानी भाज्यो ।

लारला तीन वरसा माय इण महर माय उणरा आई नाव रयग्या । जर वा ण नाव म् आळसीज लागी । गाव माय हो जद विणी रा बावो हा ता विणी रा काका पण रिक्त्याळा नी हा । नारना तीन वरसा माय उणरी जिनग्यानी पहिया माथ भाजती रथी पण गाव री मुध उणरी लार नी झाडी ।

पाच वत्ती चाल हे काई ? एक मिनस देला लिया उणर स्यामी उवो हा ।

बठा । वा पाटळ माथ पग सावळ मेनता कया ।

वतरा पोसा लसी ?

तीन रिपिया'

तीन रिपिया ?' जातरी उण कानी जात्या फाड र वयो-'मी काई नूवा घाडा द जाया हू अठे जका तीन प्रताव, दाय रिपिया माय चाळणू ह काई ?'

केसू कया- जावा बठा ।

वो जाण हा क जिया जिया दिन चड ह लाय बवता जाय रयी ह । वळया वळया वी वमाने ता मून दज हे नी । पच्यामी टुळे मिनय मिळगती मडना माथ वतरा क दिन सक मने ।

मडक माथं घणी भीड भीङ्गी ही । बंद जीवणा पाइडळ हाळा पण ऊचा
 १ कणा बावा पण । उणर जीवन र घटना त्रम र दाई सिळगती सडक माथ
 गुडता रिक्म्या रो पहियो सहर माथ उणरी जातरा इण माथ इज समटीजगी
 ही । राजीना रो दाई वेसू आज भी आपरो रिक्स्यो भाग पाटया ऽ गाविन्न
 दवजी रं मिन्नर र वार ढाव दीनू । अत्यारा मिन्नर आगळा जावाळा माथ दो
 प्यार असवारी मिल इज मव । वा रिक्स्या माथ बठया वंठया इ वीडी मिलगाई ।
 सारना पहिया माथ डण्डो पडता इ वा लार जायो । मिपाइ नै देयता इज एवर तो
 वो डरपया पण फेर हाथ जाड १ कथा— बिराजा कोतवाळजी, बठे चालणू है ?

मिपाइ लाल लाल आभ्या वाडता व या—'बूढळा मरवा रा जूण कर है कई ?
 सारना दा दिना मू तू बठे दीरया इ वानी, सा हवडी भूल ज्वाव ला ज रिक्स्यो
 वातवाळी सेज्यावू लो ता ।'

वेसू हाथ जाडतो दीन गुर माथ कया—'आज भूळ नी होव साय । आज जरूर
 आपरी हाजरी माथ पूग ज्याम्यु । दा दिन मू रिक्स्या रा घणी रा भाडा भाडो इज
 द सकया हू । बुढापा माथ आप जाणा हाण भी तो कम इज काम कर । आप
 बिस्वाम रापो ।' मिपाइ आग बध न विणी दूजा न स्यारं लाग । वेसू जद आपर
 जीवन माथ पली पान रिक्स्या हाळा वणया सारू आपर भायल सागर कन सहर
 जाया हा वा पली अर काम री वात आइ कयी'क वेसू, रिक्म्या चलावा सारू
 सहर री आखी सडका न गळया री पिछाण इज माकळी कोनी । वा ता जी नै जाणू
 हाव वा जातरी इज वतादे पण ध-धा चलावण सारू पुलिम हाळा न राजी रायणा
 पणा जरूरी ह । अर उण न राजी रायण रो एक इज तरीका है वा अगूठा
 माथ आंगळी मळ'र कळदार रा इसारा करयो ।

सागर जरी वात पंलै दिन गुर मत्तर री दाई कयी ही वा आज भी वतरी
 इज माच ह ।

एक टुक मू बचवा ताई वा उतावळो सा ब्रेक लगायो । रिक्स्या माथ बठया
 जातरी र भी भटका लाग्यो । वा कयो—'बाबा इया काई कर है, मारसी के ।'

वेसू री विचार धारा तूटी । वा एकर लार जोया । वा फरमू एक हाथ
 सू वधडी डाडी रा पसीनू पूछया । सिपाई रा आखर उणर वाना माथ मूज रया ।
 सिंध्या ताणी उणरा मॅट पूजा करणी । दम रिपिया रिक्स्या रो भाडा अर रोटी,
 वीडी'—पाणी रा पीमा यारा चइज । घरा भी ता

गाव'र घर चेत आवता इज उण रा मन घणा उदास हाग्यो न । पाइडळ री
 या वातावळी साव होळ पडगी ।

पाळी र वार नीमडा री सीळी दया माथ बठन हुक्का गुडगुडावा अब वठे ?
 वा हरया भरया खेत माथ मू पमरती साळी पून तारा छायो आभो न एक दूजा

माय प्यार १ अण्णेत ।

सारासर नीमरी माटर साइविल रा पट्टाल री धूणी री वाम बसू रा काळजा माय उतरणी, नितकी इ पट्टाल गू घुटेडा बायामिडळ म वा जागं न सा पण पाइडळा माथ फिरता रव न पहिया सडक माय । अथ पूठा गाव जावण रा आसार उणा नी दीस एक पीडा उणरं नेणा माय उभर लागी ।

आभा माय बादळी घिरयाई अर गडन माथं भी छया हायगी ही । तार बठ्यो जातरी जवा अजेम चिप च्याप बठया हा कया-बावा, इ उमर माय रिक्स्या विद्याणी चलाव है ? आ ता राम राम बरमा री उमर है ।

बसू एकर मुड नै जाया अर एक निमामा राळता उदाम मुर माय धान्या बावूजी व स्याणा हा मजबूरी भी उमर दम्या कर है व ? राम राम बरवा री उमर उणारी हुव जिण र नानू जज री राटी रा जुगाड हुव । नी गाव छाडवा री विण न साख आव हूवे ?

जातरी न केसू रा हैवाळा माथ दया आयगी उणन लाग्या इण मिनख र हियारी डूगाई माय पीडा रा समदर हवकोळा लय रया ।

पण थार स्यामी जसी कार मजबूरी ह वाजा ?' जातरी बूच्या ।

बेसू कयो- लाडेसर डावडी रा ध्याव इज गाव सू म्हारा पज्या उपाड नारया । गाव माय म्हारी इज्जत ही बावूजी । खेत री ठाड खत भी हा । मस ही ऊट गाडा हा अर वा यू जून राटी भी । मिणत सू कमा लेव हो । मैं रिक्स्याळो ता लारला तीन बरमा सू बाजवा लाग्या हू इण सू पली तो मैं कदे सहर इज नी दरया हा ।' बेसू र उणियारा माथ पसरडी पीडा अर चिंता री बादळी री पतळी सी पडत लार बठ्या जातरी न नी दीस ही पण वा उण रा मुर सू उणरी पीड न आळख हा । केसू कया- वापडी चम्पा रा कई दास । अर आगला भी पली ता कयो म्हान की नी चइज पण पछ उण रें मन रो खाट भी आखरा माय बदलीजम्यो । खडी चोट एक मोटी रकम माग ली । म्हारी भी इज्जत रो सवाल हा जात बिरादरी माय । ज पली मन बेरो पड ज्याता ता करता साइ करता । पण मजबूरी ही बावूजी । छारी रा हाथ पीळा करणा हा । जे बिना व्याया जान चली जाती ता गाव मे म्हारी नाक कट ज्याती । फेरा हुया पण पती जमीन गण मिलीजी । चम्पा रा हाथ पीळा हुया पण बुढापा माय गाव छूटम्या । उट विवयो । एकला गाडा सू काई फायदा, वचणू पडया ।

आम माय घिरेडी घटा सू छाट ओसरगी । बसू रा मन पर खत माय पूगगो । पण अथ बरसा भळाई मता बरमा । वा आपरा आला मूडा न पूछवा रा भाना सू आली जारया पूछली । एक दिन हा क वाळी आभा माय दीली र हळमातिया रा सपना सजोया पण अथ ता वेटी र दायता री पीड रा धाव भरया

पलो बतराई मह वरमा बाई सपना ती ऊळ मक । अत्र ता जा चिंता ३१ व सिध्या
 सिपाई न बाई वस्यू न रिक्स्या रा धणी न दस रिपिया दिया पय भाप'र राटी
 सावा रा पीसा वचमी व ती

मह जार रो आसरग्या । आली सडव माथ पहिया अजस भी माग रूयोगे
 आला डोल'ग वायरा रो वटवारा-वसू रा डीन सीसू घूजवा लाग्यो । पाच वत्ती
 माथ लाल च्यानणा हा चिनक वेसू रा पग पाइडळ माथ देव्या । अच च्यानणा
 पीळा हुग्या हो । वेसू न लाग्या व आ च्यानणा नी चम्पा रा पीळा हाथु है । इण
 जज ज लार वंठया जातरी देग सवता ता वेसू ग उणियारा माथ सतास पसरंठी
 निजर आता । उणन लाग्या व सडवा माथ आग्या तिन रिक्स्या घीसयाळा आसा
 सांग दायजा रा धाव भरवा मारू भूक पट रिक्स्यो चलाव'र चोरावा रा पीळा
 च्यानणा न जोय न आपरी वट्या रा हाथ पीळा हावण रो सतास कर लव ।

वा राज मिनर काती मोड'र रिक्स्यो ढाव दीनू ।

□

भाग्योदय

पुष्पलता कश्यप

बी दिना मू उणरी ग्रहदसा साटी चाल । काई चाया ज्योतिपी मू ग्रहदसा सारू लुगाई नित उणरा वान गाव । पण वा वानगिनारी वर दव । उणन इण वाता माय जगाई विस्वास नी । छनापण दरदवाण । काम पडया मध न इ वाप वणावणी पड । मुमीवत री मारयी मिनय काई नी वर ? च्यारूमर सू हारया पछ आत्मसताप सारू कोई न काई सहारी माघणा ई पड । उठीन लुगाइ तार लाग्योडी ही । सवट उण ई मन न समभाय लियी—चानी जीई टोटका अजमाय ली सायत मामली थाळ पड जाव ।

अक दिन वा आपरी पत्नी साग नगर रा अक मानीता जर प्रतिष्ठित ज्यो तिपी र दपतर म पूगो । ज्योतिपी महाराज बुगल री पास जिसे सफेद-भक्क पोसाक पहरया आराम कुरसी माथ बिराजमान हा । मावल मवर लाव केसा साग गाळगट्ट गोर चेहर माथ लाल तिलक जणूती फाव ही । काच री अलभा रिया म माटी माटी पोथ्या सुधराई मू मजी थकी ही जर दा तीन मजा माथ भात भात रा जतर मतर पडया हा । वान आया दख र ज्योतिपीजी व्यस्तता री नाटक करता बोत्या—‘जाप मिळवा री वखत बुक करायो है के नी ?

नी सा म्हे ता यू इ जायग्या ।’

आपन पली म्हार सू टम त करणो हो । म्हार जठ मुलाकात री ओ इ नम है । यू म्हन फुरसत ई कठ । पण खर थे आ ई गया ही तो अब दख लेमू ।’

घणी लुगाई री हालत अपराधिया जिसे हायगी । व भेळा भळा हावण लाग्या ज्योतिपीजी घडी म टम देख र कागद माथ नाट करी अर पछ थाण्णार री मुद्रा म गरजता थका बाया—‘हारेस्कोप साग लाया के नी ?’

वो बोया—‘म्हारी ता जनमपतरी इ कानी वणी ।

ज्यातिपीजी उणर सामी रण भात भाक्यो जाण वा बोई साधारण कीडो मकोडी हाक । पछ उणन पूछ'र जनमतिथि निखी, कपूर बाळ'र अक पपरशीट बाळी करी, उण माथ उणरी दो यू हथाळिया रा छापा आगळिया जगूठा ममेत लिया । उणमू रोई जेव आक पूछ र तागत माथ नोट रिया अर वहधो— काल ठीक इणी ज वगत जा जाइजी ज्योतिपी फत्र त्यार मिळमी ।'

वा उठण लाग्यो तो जुगाई सुणी रो टुला दवता उणा इसारो रिया । वा ममन्या अर सकीजती घनी वान्यी—'पडतजी आपरी दिग्ग्या ?'

'म्हारी साधारण फीस दक्यावन रपिया है ।' पडतजी अविचल भाव सू बोल्या ।

वा यत्रार सू की घर सामाग तरीदण वाम्त जेव मे पच्चीमक रुपिया धालन आयो हो । इक्कीस रुपिया ज्यातिपीजी र चरणा म जरपण करती जेत्यो—'इण बखत ता फूल रो ठोड पाम्दी स्वीकार करा महाराज । ग्रहदमा चाखी आया भगळी कमी पूरी कर देमू । इजाजत होव ? फेरु हाजर होस्यू ।'

'आपर ग्रहदमा घणी सोटी आयोडी ही—' पडतजी गुरगभीर वाणी मे जेत्यो—'ऊपर बाळ रो मेहरवानी र थे बचग्या पण अब फिर री जरुरत कोनी । आगल भगलवार सू धारी भाग्योदय हावण बाळी है । जठ ताई थाडी भावचेती वरतण रो जरुरत है ।'

उण तिन गुन्वार हो ।

सामवार री रात सोन रा सुपना अर उज्जवल भविस री उडीव मे बीतगी, नूवी प्रभात भाग्योदय रें साग जावण बाळी हो, उणर स्वागत री सुसी म उणन रात भर गोट नी आई ।

मगळवार न वो भाकरक उठयो । निपट—निपटू न माळा फेरण न बढी तो घणी भगती—भावना अर श्रद्धा साग भगवान न याद कीनो ।

उणरा दो-यू टावरिया बबलू अर बटी रात भर सै स करन खासता रह्या । लारना की दिना मू वान जोरवी जुवाम हुयाडा हो । टावरिया रो मा उठता ई उणन चतायो के दोन् टाबरा न जोरवी बुखार चढयोडी है ।

घोडी क ताळ म उण दा-यू टाबरा न उन्टी करता देख्या ।

उणने वा र साग अस्पताळ जावणी पडयो ।

अस्पताळ म अणूती भोड ही । मौसम र बन्ळाव रें कारण घर घर विमारी फन्योडी होवण सू अस्पताळ म पम धरण न ई जागा नी ही । उठ डाक्टर न मिलता अर दवाई लेवता नव बजग्या । टावरिया न ठिरडतो, नाठतो—दोडतो वो घरा पूग्यो । अब राटी जीम जीतरी बखत नी हो । जे बस निवळणी तो पुर तिन री छुट्टी लेवणी पडमी । अपसर उण माथ यू ही नाराज हो । इण वास्त वा

ठमगर दपनर पूगणी चावती ।

घम र अट्ट माव पूगां टा पढी के पली रग ता निवळगी । दूजी घम बान्म उटीरण र अलावा दजी कोई मारग ई नी ही । टक्मी म जावण रा विचार करती तो पूरा पात्र रगिया री सरती ही । टावरा मारू दयार्ई अर फ७-पूल माव आत्र ताळीस-पताळीम रगिया सरत ह्यग्या हा अर हात्र म्हीन रा बीस दिन घात्रा हा ।

दूजोडी बग जाई ता काठा भर्याडी ही । ह्त्वी परड न पुत्राड माघ उभण री नीठ जग मिळी । रण उपरात्र ई जेव मुगापर मू भौह होयग्यो अर घमरा मुक्ती म नीठ पन्तो पन्ती वच्यो ।

जाफिम पूगता ई चपरामी उणत्र वतायो व पुत्रिम रा जेव आदमी सा'व र वमर म बठा उणत्र उडीक ।

डर अर वहम मू उणरी बाळजी घडकण लाग्यो । गगला उणर वानी ओपरी निजरा मू देव हा ।

सा व र चँवर म पूग्या उणरी मुत्राकात जेव पुत्रिम र मिपाही मू हुई ।

'जेव वारदात र वेम म पूछताछ मारू जाण म्हार माग थाण ताई चालणी पडमी । वो अेव भूर रग रा निपाफी पकडावतो वा'यो ही ।

वारदात? त्रिमी वारदात ?'

वा ता उठ चाल्या पती लाग जामी ।

पुत्रिम बाळ उणरी वात बीत्र म ई काट दी ही । थाण गया पती लाग्यो के वेसव उणत्र अेक भूठे मार कूट र रेम म फसावण री कोमिम करी ही । लारत्रा केई दिना मू विमन साग उणरी दुस्मणी चाल ही ।

गवाहिया अर वकील र चक्कर म पूरो त्रिन बीतग्यो । जास त्रिन म चाय पाणी छोडन पेमाव करण री ई फुरसत नी मित्री ।

वा थाकी थक्यो हैरान हुयोडी रात न आठ र लग टग घरा पूग्यो तो लुगाई वठी उणरी बाठ जोव ही अर टावग्या सुयग्या हा ।

जुगाई वानी—'जाज तो घणो जवेळी कर दियो ।

उणरा उतरयोडी मूढी देख र लुगाई पेह बोली—तयोयत ता ठीक है ? रोटी परूस दू ?'

'धू पली चाय बणाय ला ।' वी धीरेमीक त्रोयो ।

लुगाई गतागम मे पज्योडी त्रसोई कात्री गई । चाय माग उणत्र अेक भूर रग री लिपाफी ई मिळयो जिकी त्रिस्टट डाक मू आयो ही ।

वालन वाच्यो ता मकान मालिक री त्रोटिम हो । लारल च्यार महीना मू वा मकान किरायो नी देव सक्यो । बन र व्याव म उण पार मान जिकी करज लियो ही उण पेट जाधीक तत्रवा ता मू ई कट जावती ।

मोटो बगलो

मुहम्मद कुरेशी

देखो जी ! आज जीवन काका जी रे लटके जीवन काका जी न फेरू ठोकिया । डोकरो भरवि रडा कर देखण ही कोनी आव—ताजू री बाई जफसाम करती थकी बोली । अर फेरू कहयो वि भगवान री मरजी है उण घर री कमाई एहडी हीज व्हेला ।

भगवान रे घर री कमाई नी है आ भगवान ! आ ससार री हीज कमाई है । जीवन काको आपरी जवानी म जापरे पिण्ड सू आगे बाई सोचियो हीज नी, अर की न ही बाई नी गिणिया । वम रिपिया जोटिया अर भजान आद वणाय न एस मीज करी । छोरे र बात बात म जूता लात करी ।

ताजू री बाई बात काटती थकी वाली—तो काई ध्हे ? करिया ता मग औनाद वास्ते हीज । माइत हा ठोका पीजी करी ता काई टुयो ? ध्हे कोनी ठोका बाड ताजू ने ।

अरे ! म्हारा ठोकणा ने जीवन काका रा ठोकणा म घणो फरक है । ध्हेने काड ठा ? छोर न नी तो पढायो तिखाया नी छाका परायो आढायो बस आठू पीर बत्तीम घडी जो कर जो कर करतो ही ज रह्यो । जब है वार्ता पाछी लडणो साची सातरी देय रियो है । पान म धालता तो ए वाता नी ध्हेती—करीमो वग तरीक सू मोच साच'र ज वाता वही ।

वाता मती करी । घर रे घर यू है जामी पड ठा पडला—ताजू री बाई आगम विचार'र बोली ।

घर र घर आ कदी नी ध्हे सकेला । म्हार ताजू ने म्हें मिनव वणाय रिया हू । जीवन काका जी बाई लडके ने मिनख नी वणाय डाडा वणायो है ? काळ जेटजी रो भूरियो काई ज्यो है ? बी रे भी ता डाकरी राटी राती करती फिर । डाडा हीज बिगड रहयो है समार गो—ताजू री बाई ग वीतो देखी जैडी वताय गी ।

अँ वाम ता डाडा ही नी कर अर अ नदरा नर जण पछ काइ है ? मिनग वणावा म माँ वाप न थापर वास्त की नी नर टावरा र वास्त नरणा पड वाम करणा पड, कोरी वाची माय न टावरा न पटावो गुणावा करणा पड नार दावा धैरवा रा ध्यान रावणा पडे, मुन रा मुग छाड र टावर रा मुग दवणा पड घर री सुगई मू नी जाटी टाटी बात ता टावरा र सामी नी नरणी पछ इज्जत नू वात, ग्वारी, तू कारो नी कर आपरा माँ वाप रा विया कथन कर व्हारी नवा कर जण ज्यार कोई टावर मे मिनगवणा आपरा माँ वाप न करणा देव र वापर । वहा लोग नेवत कही है नी— बारह वरम रा जावन गाटा न एक टावर पाळा । मतनय एक टावर रे पाळवा म कम म तम माँ जण वाप न बारह वरम ताई जवानी रा नोवन रावणा पड जद ज्यार टावर मिनगी जमार रा ध्यात कर सक नर मिनग वण सक । करीमा आपरी माग मू नवता शेज गया ।

म्है काई कर लिया ताज र वास्त ? एग म्मूजल म काड घाल दियो कि माग ले रह्या हा । रहेवा रा ता टापरग ही गाना । बटाया मुनक री वरा—ताज री वार् ताता रागी करी ।

नरीमा घर आठी रा चूगटिया न जाता न नोत्रिया— व्हार रोनी पोढो हा गानी मा । जिम्या तिम्या मायता रा मरण भपडा है हीज । आछी व्हारी टाटी माऊ धी बाटी । वडरा ही टण म गळगा और आप ही गळ ज्यास्या । पाल न नाजिया पड गुण ने मिनग वणगिया तो वसूल हा जामी । जापा न ताज न मिनरा जणावा रा मूत करणा ह । जापा र वाक करणो टापर रा रो । म्मैल माळिय तो माटा राग रहव । व्हारा व्हैडा हीज भाग । जीवण वाका काई म्मैन म्हाळिया कोनी जणावा वा ? पण सुख कठ ? टण वाता म पुख ती ह । टावर मिनग वणमी तो म्मैग रा मुग टण टापरी म ही ज मिन जामी । नी तर नी खण्डया म्मल म ही कोनी मिल ? ताजिया री वाई रे की ममभ पडी अर की नी पडी । वहा ता दुनर दुकर आपर घर रा धणी रो मूडा जावनी हीज रहगी ।

जण ताज री वाई रे काड समभ म नी जाई ता कहेवण रागी— अँ ! जव जीवती रह्य ता म्मै ही देख हू के किणतर म्है व्हारा ताजिया न मिनग वणावो । 'घर म कानी अपत रा बीज नर व्हार नेले आया तीज' गाना तो मानी माटी करो हो । मात्र कित्ता कित्ता लिन हाय गिया है अर एगो ग्यारवी'री पीम माग रहचो है, हा ना वण कोनी पडी ?

हा 55 र 5 ! ताज री वाइ म्है ता वात ही विमरगियो । म्है अबार ज्यार व्होरा जी नू सी रुपिया ब्याजूणा नर जाऊ । म्है पिरमू गिया जद म्है आज रो वादा करिया । म्है ठीक याद निराया । जव व्हारा ब्याज बट्टा मम्मेत तीन हजार व्हे गिया है । मात्रिक करगी जो ठीक है ।

“याओ जिजाता ठीक है पण पाया देवण रा काइ उगाय करा हा ? ताज
री वाई डरती थरी पूछिया ।

अज भागवान ! धैरी री जिजा कानीगर री मंग मजूरी मू याज बुवाय
देम्या । जर ता हा र काइ है ? व्याज ता उनार ही देस्या । मूज मानिन ने
आमर रहैगी । म्हारा मानिन च्हाया ता म्हारा रिगिया रा फटा उनार दमी ।

आज पान रा छाग रा की भरोमो नी है । च्हाये रिगिया र फटा गोटा
ने जिजा ता काट पगला ? मजा दरसावती ताजू री वाई बोती ।

ऊमाय ने परीमा कथा—ताजिया म्हारा ताजू मू गाटा देवण रा मवात
ही कानी ! म्हन ठा कानी ना । पालनी मान दमवी म ही पटन सम्यरसू
पाम हुया । ताजू र माट मास्टर म्हन डम्बून म युनायन माधामी दीनी । ताजू
री वाई उ म्हारी छाती फूवगी । माट्टे मास्टर बनाया जि ताजू ताजू नी है
पना रा ताज है गिर माड है । जाग भी अकटा नम्बरा मू पाम हामी ।

व्हा व्हा घणा म्यारा मनी जाभ म धूकिया हवन म आप पड । पीम
रा उगाय करा । थाडी डपटनाडी ताजू री वाई लताड बतार्ई ।

धैरी छाउ म्हारा वगण करता पाच छ वरम बंद निबळ गिया ठा ही
कोनी पटी । नाग जुगाई रात दिन एन कर न मनत मजूरी वगता । ने ताजू रे
पटान रो वणेवस्त करता । “होरा जी रात दिन छाती फाडता तवाणा करता
पण रिगिया कठ हा जिवा भूकता ? हा दम्या हा नेस्या कर कर ने निणनर
ही टाउता । जिना थोडा दीधा दो दीधा क्यारा हा बहे ही “होरा जो ने मीठा
करणा पडिया । अज तो वण एक जाभ माथ घर धणी नाग गिया के मेनत मजूरी
कर ने पट काट काट ने बेट री वाट देयता । कट ताजियो डाक्टर वण ने आवता
ने अकटन कटेना । पण हिम्मत नी हारी ।

सम जावता वाई वार लाग अे पाच छ वरम ही निबळ गिया । आज ताजू
कास्टर री परीक्षा देर धरा आसी । धणी जुगाई स्वार रा ही बेटे ने उतीचे ।
म मजिया मू जागिया री मीट मिलिय म् अटक रही है पण मोटर तो डाड
मजिया आव जिनी टम माथ ही ज जासी । पण मा बाप रा जीब है, वाई कह्यो
नी जाव ? टेम हाना नी हाता करीमो तीन दार इस्टेन माथ जाय जाय ने आयगो ।
एक प्रजता वजता ता मनु स्टन माथ आय गिया । मोटर र आवता हीज पीडिया ने
ताजू र हाथ सू बीटा पती काम लिया । ताजू री बाइ ने तोकी जासाण ही नी
वधिया । हा तो पेटी पटक र ताजू ने माथ मे भर लिया । मा बाप र हरस रा
आमू रखन गिया । छाती ठण्ठी हावगी । ताजू ही मा बाप ने भुन भुन न सलाम
वरिया । ताजू मगर पच्चीमी री जोध जवान माथ सुधरा कपडा धैरिया सामी
ऊभा मा बाप ने खुमी म् रोवता देव ने आप ही हरस म् बावळा हाय न हीवडा

रा मोती गल्लावण हुको ।

ताजू डाक्टररी पाग वर ने आयो है जा बात मग पाग जाण गया । महिनो मवा महिनो हरस उमाव मे बीत गया । घणा ही पाग ताजू रा काना मू दबाया लीन पायदी उठायो । मळो लाग जावता । पाग जुगाया आमीस देवता नी थाकता कहेवता—व्हार करीमा रा जोध । ध्तारी ह्तारी उम्मर हात्र । ध्तारा जिम्या पून मरळ ममार रे हाव । करीमा न ताजू री बाई मुण मुण ने फूळिया फूळिया फिरता । गट्या वर वर ने वेटे री हाजरी म उभा रहैवता । ताजू ही आपरी वाई वाप् ग मान रावता नी थावता ।

आज तडके प्हेली ही ताजू आप री वाई व ने आय ने बालिया—बाई । म्है म्हैर जाऊं । आज म्हारा फन पाम रा परच्या मिनसी अर म्हारा मोटा गुग्जी डाक्टर साव ही म्हन बुलाया है ।

ताजू री वाड वाई कहेवती ? बानी—थू सीरावण वर र जा । सज्या जाणें थू वद आसी ? ध्तारा वापू तो तडके ही मजरी माथ गया । थू टम मू जायो रहीज । ध्तारा वापू माच करेता ।

म्है वाड टावर हूँ बाई । म्है मंग ममभू । म्है वाध ध्तारा वरजा मू उरिण हा मकू ? गट्टे नी हो मकू । गर जावण दे टावरवाई आगिया मू ताजू आपरी वाई ने ममभाई ।

मज्या करीमो जायो ता ताजू ने नी देस र बोनिया—ताजू री पाइ । ताजू कट गियो ?

‘म्हैर गिया है उण रा बडा टॉक्टर उण ने तुनायो बताव—ताजू री वाई पत्तर दिया ।

माट टॉक्टर बुलायो ह है ।। विणतर ही ताजू अब नौकरी माथ पाप ज्यात तो मंग मन री भुराटा पूरी हो ज्याव । नेख ताजू रा बाई । म्हारो ताजू म्हारा मपना रा ताजू म्हैन वणियो कि नी । ऊभो रहै जठ ही रिपिया परम । अब वता ध्तारे व्हये म्है मवान वणावता ता वाई आ ताजू म्हैन खडो हावता ? अर गटा रे मिनम नी वणावता तो जीवण वाके जडो ह्वात होवता कि नी । आ रिपिया रो रु खडो विणतर हाथ पागता ? वाप दाद रो नाव उजळ गिया ।

अ वाता घणी जुगार्ड वरता हीज हा कि ताजू हाथ म एक डबी ने एक कागल री भूगळी लिया लाडिया जाया न मामी आयोडा मा वाप ने वाथ म भर लिया । तुमी मू वावळो हुयाडा बोनिया—बाई । म्है पूरा रात म पटना खम्पर जायो । इण वान्त म्हन जाडिगरी पान न सोने रो वित्तो मिनियो । वान म्हन नौकरी माथ माट मफावान जावणा है । उठ म्हनै वगळो ही मिन गियो है । म्है वान जायने आय जाऊं । पछ अदीतवार र दिन वाप् न थूँ मग पाव्या ।

उठ बगळे र माय हीज रहम्या । नाग अब उण बगटा न म्हाग ताव मू पापर
ताजूरो बगटा रहेगी ।

करीमान ताजूरी बाई मद गद् हाथ गिया न मन म मालिक रा
मुपर परता टवडवाई आगिया मू दानू गवण माथ पोतिया—म्हाग ता माग
उगळा धू है ।

करीमा आपरी लुगावडी मू हरस मू बालिया—ल भागवात । ध्हार म्है 'माग
बगळा उणाय दिया है ।

ताजूरी बाइ ऊमाव र माग बहया—जाआ जाआ । माटा उगळा रा धणी उण
माटा धणी री मसीत म ता दिया कर जावा ।

हाँ अमली मोटा बगळो हाथ लागो है । अब उण देवणिया ने अधारा म बयू
रासू कहैवता दाडता ही ज करीमा मसीत पूगा । □

अधारो

मोठालाल तत्रो

रामनाल । हा रामलाल ईज ता । आ ईज नाय ता चाल रह्या ह उण रा कालज मे । कलाम अर कलिज रा मगळा मार दास्त उण न रामनाल' कय'र बतळाव है पण अठ गाव म सगळा लागवाग 'रामो कह न पुळाव है वाई बापा ई 'रामो' कव । 'रामलाल' नी मइ, रामो इ सर्द, की कानी । पण गाव रा की भाई ऊचा लाग उण'न 'रामत्रो' कव तो उण रा माया भनाट करण लाग जाव ह ।

वो उणा र गिलाफ की कानी कर मरता क्यू क वो खुद जाण क इया लोया री खिलाफत करण रा मतलब माथा भार करण सू ब्ह है । कई बार गाव म मामूली बात माथ माथा फाट ग्या ह । चाकू छरा तक निबळ ग्या ह सबट जा ममभ लिया ह क गाय म रणा ह ता सामंतवादी तत्वा रा जी हेजूरी करणी ब्हेला भळ ई ये दूजा र टावर न छारा कवे जर खुद र टावर र 'कवर सा क'राव मवट परक ता की कानी पड पण जा मन समभावण री बात है ।

देम री आजादी र बाद सामंतवादी तत्वा री ताकत की कम हुवणी चाइजती हा, पण अठ उन्टी गना चाल री है दिन दूणी जर रात चौगुणी आ ताकत बध री ह । मिणी नता रो चुनाव म जीतणा सारो कानी जद ताई वो नता गाव गाव रा ठाकरा सरपचा न राजी कानी रागे न अगर ठाकर सरपच राजी ब्हे ग्या ता समभ ला क उण गाव रा मगळा वोट नता रा है । अज गाव म ठाकरा जर उणा र भाई कदा रा रीव है अर उण रीव सू गाव री जनता आज ई उणा ग गुणगाव कर री ह ।

आज वो घर आया है । दीवाली री छुट्टिया गितावण रा मती कर'न अठ जाया है । यू उण रा मन गाव मे आवण रा नी हा पण मोच्या क तीनक साल सू गाव री शैवानी कानी मना है, अबक मना ई लन ।

यू दादा सा त जग सि है नम सात सात परा मता पर । करण म
 माग म्या है । गाव री साहिबा जर मुना-वा पर भा-ना सात सात परा
 गवण माग भग्ना र पार पार भा-दिव ताई त्राव परा है । कई कई साहिबा
 मा भा-दिव मूई मगा ज-पी त्राव त पाठा बाग मार है ।

उण र पर भावण म बा- बाग की मुग हुवना पा-त्रता हा, पर उण
 दादा र मूटा की उतरपाटा माग रहपा है । पर भावना द बा मावण माग म्या
 है क बा-बाग र मूटा उतरपाटा कय है ।

बवार पछ बा आहाग पाशाग र मागा म मितण त म्या ता उण न ठा पर
 म्या क उण र बा- बाग उण त त्रर वयू जा रहपा है ? बा माग र माग
 भावण र बीष मू उठ त पर भा म्या । भावनी ई बाग त भाद हाग तिसा—
 म्दन मगत म ना आ रहपा ६ क थ बाग कय ता म्या ? मियाट ता निगवाणा
 ई चाईजनी ही ?

' म बाग माग बाग कर रहपा । पुनिग बाग आग र भाई बाग ?
 पती ज-गाती कराय पछ बाग कर पंर हुवण त्रावण बाग की कानी २ ईज्जत
 भावकू माथ वट्टा लाग मवाई म बा अतपा ' बाग उण त मगवावण माग म्या ।

हुवण जावण बाग की कर कानी ? पुनिग बाग पूणापछ ता करनी ई ?
 एक रात ई बाग म राग निवा ता मगत ता क पर कर्द अडा हिम्मत जा गीगा
 रा टाविया कानी कर मवला । बा माग पीठा हुवण लाग है ।

यू तानी जाण रोमा आग त गाव म रणा है य गागरपर है
 पुनिग बाग द उणा मू धूज है पछ आग री काद है मियत ?

इण र मतभव आ विहवा क भाग अत्याचार र गिलाव यू ताना नी
 करा, ज्यू चान रहपा है, चानता रव । पला आग गुलाम हा पण जा
 आजाद हा आजाद दम म ई आग री जा मत । आग न आज ई जाय र बाग
 म रिपाट तिसवाणी चाईज ।

यू जिद मत कर रोमा उणा रा की कानी विगडला हालताई ता बात
 ठण्डी है, बाग म्या पछ आ बात हवा ज्यू फन जावला जर जिण न ठा नी है
 उण न ई ठा पड जावला जाग री ईज्जत रा मवात है ।

बाग मू मगजमारी करण रा की मतत्र कानी ! बा बाग कन मू उठ न
 एन ढालिय म जाय न मूज र माचा माथ जाडो वृ जाव है । सूता सूता इ बा
 की मनामम म पजम्या है ।

इण तरिया ता नीचल तत्रक रा लाग बाग माया ऊचा कर न चाल ई
 नी सक ला । आ कोई बात वही क एक चालती छारा री ईज्जत माथ बाई हाथ
 नास द उण री वन गवरी पाठा बीणण मारू आकड़िय मू अलधी म्यी परा

मुनमान जगै दल'र उण री इज्जत माथ जा नागा रा छारा हाथ नाम तिया
 ईज्जत लूट ली । जा काई मजाक ह । आजाद दम म मर्जा आय जद काइ
 विणी री ईज्जत आवर माथ टाकी डाल सक ॥

बा धाणै जावला आ नागा र छारा र गिलाफ एफ जाद आर दरज
 करावला आ काई दादागिरी माट राखी है एम र आजाद हुवना उणा री
 जागीरा उखड ग्यो जव काई हे । काई माग है । घर म जिका भी है उण
 माथ दारूडा पीवो अर मारूडा गाया । चानता बन बटी री ईज्जत लवणी ठीक
 कानी नीतर नीतर काई कर देवना वा । गाव म रणो है ता आ लागे अर
 उणा र दूध धावता टावरिया न जीकारा मान देवणा ई पडला ॥

उण न ठा है क आज ई गाव म नाइ भाजी मेहतर तवात उणा री बगार
 कर अर पाव है—दा टम री राटी । आज उ गावा म नीचल तबक रा लाग वाग
 आ नागा अर मेठा र घरै सामंडी है । व ई उणा'रा मारत है । उणा र गिलाफ
 चूतवात वरणो पाव है ॥

'पछै वा' अक्लो उणा र गिलाफ थाण जावला । थाण ग्या पछ काई
 बूला । अरे बूला जावणो'की'कोनी की पर्ना थाण वाता पटकाय लेवला
 अर कवला/सत्र ठीक कराना पछ । पछै काई ? गाव म हाको फूटला क
 रामन री बन गवरी साथ जा लागे रा छारा बलात्कार किया । बापा ठीक कव
 है क'हालताई जिण'नै'ठा नो'है, थाणै ग्या पछ उणो न इ ठा पड जावला'
 वा रा ता की भी हुवण घाला नी इ 'वाइ'री ईज्जत पराव हुवण री घात आजू
 वाजू रा मगळा गावा म 'पूग जावला । भाविस मे सगपण इ हुवणो दारा हा
 जावला समाज म जीवणा दोरा हो जावला सगळा गिनायत ठाला देवना ।

ता काई वा थाण नी जावना ? हा वो नी जावला पाता र घर अर
 धन र भविस खातर ना जावला ता काई आ ईण'ज तरिया चालता खला ?
 अघार सू जुमण वालो मरग्यो काई ? हा, मर इज ग्यो दीस है । उण र मन
 म अघार र गिलाफ एक गुगा गुंस्तो आकार लेवण लाग ह ॥ ११ ॥

माटी भयै जिनावरा

जनक राज पारीक

रक्मणी री पगधळी त पाछण सू टाँच'र मिरणार सीगडी बी'र ऊपर चढाइ अर सीगडी र दूज पाम न मूड माय घात र वाय री आँट मू नूसण लाग्या । पाछण री ताजादम शरीटा र बट सून माय मिचाव पडघो । रक्मणी पगधळा माय हुवती पीड नू सिसनाग भरघा, ता मिरणार बी न ध्यावस बेधावत क्या, 'ग'दा पाणी है, माड' चार मागडी म खीच के सणफकी बीमारी जड मैं रादूगा ।' यह'र जापरीवाळीसू दूसरी सीगडीदूदत सिरदार जियाँ वान न फेरूँ वघाइ मेरी माना ता माई पीडिया पर छ छ जावैँ और चढवाला । बाळा सून निवस जावगो, ता समभयो जस मणफ वभी चली ही नी थी ।'

सिरदार री बात सुण र रक्मणी बोली ना भाई, ना । जावा सू ता मनैँ बडी सूग जाव, मर ता आर नाम सू ई धडधडी छूट जावैँ । पीडी पर चढावा तो सगळ डील म रीळ चालण लाग ज्यावैँ ।'

ओ तो तरा वहम है माई । तू किसी अनाडी म चढवाई हागी जाव । मेरे पास वा जोहड-तलाब म पकडी हुई जाव नहीं ह । बाहर स मँगवायाडा जिनावर ह-अमली । आदमी सैँ बी ज्यादा समभदार । साफ खून कू मू नी टालेंगी, गद बी बूद नी छोडेंगी एव । पिडली कू पडडेंगी तो चीटी क काट जिली पीर नी हागी । बस थाडा वदन कू यू लगेगा जस कीडा रेंग रिया हा ।

के हिसाब सू लगाव, भया ?' रक्मणी बूझ्यो तो जाका माय बी री दिलचस्पी ओळखत सिरदार सहानुभूति जताई, बीमार जादमी स काहका माल भाव माई । मेर पास अगरेजी डाक्टरण वाली लूट खसाट तो ह नइ । जाठ आना जाक क हिसाब सैँ लूगो । दो आने कम द देगी ता यहा कौन ज्वाले न शाह हावणा है ।' कह र मिरणारा रक्मणी री दूजी पगधळी टाँचण ढक्यो ।

जाठ आना तो घणा है, भाई । बा रा जावा रा हुया छ रिपिया अर फेर

नामिया रा दा याग । आ ता बड़ी गणफ नी हई, गठिया री 'गंधि हुग्या' ।
 'दूगरा बी बीमारी कू पीन याग जिनावर है, माई तुरी गणफे पीवर
 पन शहनून सी गिर जाएंगी-अपने आप । जिता इनसे कसाता ह उससे वेती तो
 इनकी दख भाल म नग जाव ।' गिरदारो की सोचता सा फेरु वालो, रास्ता
 काम ता यो है माई, कि निमी ठगू कूचिय सें पिडली टुंवाकरे उदु कू सुले
 भरवा सती । मात दिन के लिए तो गणफें सतम, पर आठवें दिन जब चकिया-ता
 बाळी-पीळा आधी आवेगी ।'

घोडो यम'र गिरदारो रकमणी न समभावता सा फेरुं वाल्यो, वा चीज
 वामारी का दबाती ह माई, आर यह बीमारी का साती है । पन बस इता ही है ।
 जाग जग तुम्ह जेवे । गाहन के माथ माई जोर जबरदस्ती ता है नइ ।'

'ठीर ह माई, तू जे'र लगद चार चार जाव । सीगिया सण छ रिपिया
 द रेसू । गरीब रा हव रा'खर ता हू बी राजी कोनी ।' बहर रकमणी आपर
 घाघर री लावण पीडिया ताई सरवा लिधी । जाका चिपा'र सिरदारें आप री
 रानी सीगया भाळी माय घाती अर बीडी सिलगा र रकमणी सू मुखातिव हुया
 माई, तर परा म रून रह नी गया है । गदा पाणी निकसा ह । यू ता सर अपणे
 माय हा क्या है, आजकल । सफेद खात की सजिया और विलायती खात
 का नाज । पहिले के टेम म घर पर आलू का साग बनता था, ता पडासिया को पता
 लग जाता था क जालू छाने है । आजकल तो भिण्डी साओ या टिण्डी, स्वाट ता
 नमक मिच का ही खान' है ।' कबत कबत सिरदार रकमणी री पीडिया सू जाव
 उतारी अर अगूठ अर जागळो र बीचाळ दे र निचाडण ढूकयो । खून री पतळी
 पिचवारी आगण ऊपर मडगी । कुलडिय म जाका घात'र बी रकमणी रा दियोडा
 छ रिपिया आपरी बडी री गोज माय घात्या । भोळी लाठी माय घात'र खूब ऊपर
 टिकाई अर जाका रो कुलडियो उटावतो रकमणी न बोल्यो 'अच्छा चलता
 हू माई । मालिक प भरोमा खना, भली करगो ।'

चूतर मू उतर'र, गळी म आ'र वीं आपरो सागी हला फेरु पाडयो 'का 55 ट
 सींगी लवा, जाका लवा ।' आज बी री भेळी छ रिपिया री घ्याडी बण्याडी ही ।
 वा री बडी री जेव माय जिया काई सिलगत आरण छाण रो निवास हो । यम
 यम'र बी रो हाथ गोजी ऊपर जाव हो अर ज्यू आपू आप मूड सू हला नीसर हा,
 'का 55 ट सागी लवा, जोका लवा ।'

गळी गळी द्या ई हला पाडतो वो ढाई कोस रा मारग बीत'र सजिया
 जणा डेर पूग्या तो दो सर गोवा रा आटा, आध सर गुड अर चाय पत्ती बी
 साथ ई लग्या हा । टापर म बडताड सगळा सू पत्ती बी री निजर रावत ऊपर पडी, बा
 काटी छा माय बाजरी रो आटो घोळ'र गवडी ताई खाटो ओल हो । रोदया रा

माटी भखै जिनावरा

जनक राज पारीक

रुकमणी री पगथळी न पाछण सू टाच'र सिरदार सीगडी बी'र ऊपर चढाई अर सीगडी र दूज पाम न मूड माय घात र वोब री जाट सू चूसण लाग्या । पाछण री ताजादम झरीटा र बट खून माथ खिचाव पडघो । रुकमणी पगथळी माय हुवती पीड सू सिसकारा भरधा ता सिरदार री न ध्यावस बंधावत क्या 'ग दा पाणी है, माड' चार सीगडी मे खीच के सणफ की बीमारी जड मे रादूगा ।' वह'र जापरी थाळी सू दूसरी सीगडी दूढत सिरदार जिया वान न फेरें बवाई मरी माना ता माई, पीडिया पर छ-छ जाके और चढवाला । काळा खून निकस जावगा ता समभयो जस सणफ कभी चली ही नी थी ।'

सिरदार री बात सुण'र रुकमणी वाली ना भाई ना । जाका सू ता मन बडी सूग आव, मर तो आर नाम मू ई धडधडी छूट जाव । पीडी पर चढावा तो सगळ डील म रीळ चालण लाग ज्याव ।'

जो ता तरा वहम है माई । तू किसी जनाडी से चढवाइ हागी जाव । मर पास बा जोहड-तलाब म पकडी हुई जाव नही है । बाहर स भोगवायाडा जिनावर ह-जमली । आदमी मे बी ज्यादा समभदार । साफ खून कू मू नी डालेंगी गद की बूद नी छाडेंगी एक । पिडली कू पकडेंगी तो चीटी के काट जित्ती पीर नी हागी । बस थाडा वदन कू यू लगगा जस कीडा रग रिया हा ।'

के हिमाव सू लगाव, भया ?' रुकमणी बूझ्या ता जाका माय बी'री दिलचस्पी जाळखत सिरदार सहानुभूति जतार्द, 'बीमार आदमी से काह का माल भाव, माई । मर पास अणरजी टास्टरण वाली लूट मसाट ता ह नइ । जाठ आना जोव व हिमाव मे तूगा । दा आन कम द दगी तो यहा कीन जवाल न शाह हावणा है ।' वह र मिरदारा रुकमणी री दूजी पगथळी टाँचण तूकयो ।

जाठ आना ता घणा है, भाई । बा'रा जाना रा हुया छ रिपिया अर फेर

सौगिया रा दा न्यारा । आ ता बळी राणप 'ती हई, गठियाँ'री' बंधि हुआरा'।
 दूसरा की बीमारी कू पीन वाला जिनावर है 'माई' केरी, मणप' पीवर',
 पक् शहनूत सी गिर जाएंगी-अपन आप । जित्ता इनसे कमातु ह उमसे 'वेसी तो'
 इनकी देख भाल म लग जाव ।' सिरदारा की सौचतो सा फेरु बोतयो, सस्ता
 काम ता यो है माई, कि निसी ठगू कूचिय सें पिडली टचवापर उदव' कू, गुद
 भरवा लती । मात दिन क लिए तो मणपें सतम, पर आठवें दिन जब चबयाना
 काळी-पीळी आघो आवगी ।'

घोडा धम'र मिरदारा रक्मणी न समभावता सा फेरुँ बोतया वा चीज
 यामारी का दवाती ह माई और यह बीमारी का खाती है । फक् बस इत्ता ही है ।
 आग जम तुम्ह जेवे । गाहक के साथ काई जार-जबरदस्ती ता है नइ ।'

'ठीक है माई, तू जेव'र लगाद चार-चार जोक । सीगिया सण छ रिपिया
 द दस्पू । गरीब रा हक रा'खर ता हू बी राजी कोनी ।' कह'र रक्मणी आपर
 घाघर री लावण पीडिया ताई सरवा लिधी । जाका चिपा'र सिरदार आप री
 रीती मीगड्या भाळी माय घाती अर बीडी सिलगा'र रक्मणी सू मुखातिब हुया,
 'माई, तर परा म खून रह नी गया है । गदा पाणी निकसा है । यू ता खर अपणें
 माय हो क्या ह, आजकल । सफेद नात की सब्जिया और विलायती खात
 का नाज । पहले वे टम म घर पर आलू का साग बनता था, ता पडोसिया का पता
 लग जाता था क जालू छावे है । आजकल तो भिण्डी लाओ या टिण्डी, स्वाट ता
 नमक मिच का ही आना है ।' कवन कवने मिरदार रक्मणी री पीडिया सू जोक
 उतारी अर अगूठ अर आगळो र बीचाळ दे र निचोडण दूकयो । खून री पतळी
 पिचकारी आगण ऊपर मडगो । कुलडिय मे जोका घात'र बी रक्मणी रा दियोडा
 छ रिपिया जापरी बडी री गोज माय घात्या । भोळी लाठी माय घात'र खूब ऊपर
 टिकाई अर जोका रो कुलडियो उठावतो रक्मणी न बोतयो जच्छा चलता
 ह, माई । मालिक प भरोमा रखना, भली बरगो ।'

खूतर मू उतर'र, गळी म आ'र बी आपरो सागी हलो फेरु पाडचा, 'का 55 ट
 सीगी लवा, जोका लवा ।' आज बी री भेळी छ रिपिया री ध्याडी बण्योडी ही ।
 बी री बडी री जेव माय जिया काई सिलगत आरण छाण रो निवास हो । धम
 धम'र बी रो हाय गोजी ऊपर जाव हो जर ज्यू आपू-आप मूड सू हेलो नीसर हा,
 'को 55 ट सीगी लवा, जोका लवा ।

गळी गळी इया ई हला पाडता वो ढाई बोस रा मारग बीत'र सिज्या
 जणा डेर पुग्यो, ता दा सर गीवा रो आटो, आघ सर गुड अर चाय पत्ती बी
 साथ ई लग्यो हा । टापर म बडताइ सगला मू पली बी री निजर रावत ऊपर पडी, बो
 पाटो छा माय बाजरी रा आटो घोळ'र राबडी ताई खाटो ओल हो । रोटया रा

टिकवड वो गव तुनया ह। चून्ह वन बठघा बसरा गीग री जाउ ऊपर हल्ला गल री लूपरी बणावें हो । माँ एक दूटयोडी सी , माचली ऊपर, एवगानी निसामू पडी ही । भोळी उतार'र सिरदार सूटी ऊपर टागी, जोरा रो कुनडिया एकेखानी सम्भाळ'र धरघा जर रावत मू घाट्या, छ रपिया वा मान मत्ता लाया ह । जाटा चाटी म रय दे और गुड़ कुज्ज म इत्ली उतली मच्छर-मन्नी स बचाव'र । मगे टागें रह गई हैं—ग्यारह घटे की फेरी म ।'

एव लाम्बी उवासी ल र सिरदारा मा सू बोल्या रावता क्या कुछ बना लाया जाज ?'

मा रा हाठ की बघण न हाया ता सरी पण वात मूड मू नी नीमरी । वा माची ऊपर कूणिया टिका'र नियाई बठी। हुर्र अर निसामू सी । सिरदार रो मूडा जोबण लागी रावत की बहू न भादर वा चूडा पन निया आ' । माँ जा आळी जिया नीट्टू पूरी बरी अर स्वामी माय उलभगी ।

कुए म पडे गीदाडी और ऊपर म रावता, मेरा मन ता उमी दिन बट गया था जिम दिन वो घर छाड के निकसी थी । छिने'क चुप रह'र । मिरदार फेर ऊफण्या जब तरे वू बी क्या बहू माय ! पैतालीमाबरम वा तामें हो लिया । मेरा जागा पीछा ता कुछ किया नही तैन । ल-दे कर एक ओरत रावत के पीठ लगाइ बी ता उसन जाकर दाडियो वा चूडा प'न लिया । ऊपर सें । य चगीद एसा, कि वाम म मटठा और ग्यान कूपटठा ।' सिरदारो रावत कानी मुडवा ताँ मा बोली, किस कुए मे पडे, रावता ? सवर से साभ तक गला । पाडता, भटवता जाया ह पर कौन गादन गुटवाता ह जाजकल । वा टम रैया नी जब आरते हाथा पर अपन मर्दा के नाम और मद जाघाःपर मार गुदवात थ । आजकल की लडकिया ता विधान के दर से सून नाक और बूच कान चेंवरी पर बठती ह वे भला गोदने गुटवाएगी ?' बणी बोलण मू मा खासी माय उलभी, तो खासनी ग्यासती दोलडी हुगी बहत्तर बरस की ताम हो गइ पर न । नाती न पाता । मैं किस कुए म गिरू, किसके जी कू रोऊँ ?'

सिरदार वन बघण न जणा की नी रया तो वो राटिया बाळ छाबडिय कानी मुडवा । सास सुठभार मा फल बघण लागी रावता जाज बंमर, कू मिरदारो अस्पतान ले गया था । उडी बीमारी वा दमर, ब्रताया है डाक्टर न । हल्दी तेल की लापरी से ठाक नी हान वा । चीरा-फाडी हागी, और । लम्बी दवाई चलगी । अवर करणी ता ' मा थमी ता मिरदार र भुभळ ऊपडी , ता दुनिया गाली हो जायगी ।'

धूब मुह स कळजीभ, मा रा काळजा बाप्या , 'सुभ सुभ पाल सिरदार तरा छोटा, बीरा है । तरा जूठा दूध पिया है विसन ।

गिरकारी दवागान जायगो, तो कोई गिरकारी बामारी ही निवसगी । कम बड़ी कहा या छोटी, प्रदगाठ उठी है । नापरी म पक जायगी, ता नील धाग से बीधकर ऊपर आध पाव का बाट बांध दग । ढाई दिन म-है वही बठ जायगी । अग्रजी डाक्टरन के पास जान की अपनी औकात का है ? फिर मेरा ठरा चार सौ बीपी का धंधा । मूली गेलरी जग सागा के गलत रह गय है । गडासा मार दा, ता मून की बूद नी निवस । खासी सीगी मे मू म पानी भरता हू और गप्पे पानी के माफक निशालना हू, तो रपिया-अथेनी मिल जाव, बाकी रावत की आमदन तर म छुपी नी है ।'

'बल सवेरे ही मैं अपनी मगीन बच दूगा ।' रावता एग नहान र साथ बान्या ।

'मसीन बचेगा ?' सिरदारो, नेमगे जर बारी माँ इचरज दरसावता सा साथ ई बोल्या ।

वा मसीन, जिसे तन अपन हाया म मजाया-सेवारा था ?' माँ बंया अर कह'र खासी माय उठभगी ।

'जितकी चाबी निवाल के, रिजली मल डाल कर तन एटामटिक बनाया या ?' सिरदार बूझया ।

'ठाकुर जी की मूर्ती की तर जिमकी साफ सफाई तू राज कर था, भाया' मगगा मू छाटा केसरा बोल्या ।

'हाँ उसी मू, और ये जा मर पाव म पाँच भरी चौकी का बडा है दम कू बी बल बच दूगा मैं ।'

लेकिन क्या ?' सिरदार भाळ बळ'र बूझया ।

'मैं मूवीराम म बात बाली ह । डेढ सौ रपिया म वा पच्चीस थाली, बगारी, गिताम का मट दगा । मैं अपना धंधा बदलूगा । रावतो बोल्या, पुराने नपडे लीतरा के बाल पासन बेचूंगा । गोल डिग्गी ऊपर पुरानी धोतिपाँ तीन तीन रपिया म हँस हँस लेत हैं । फटे पूर और छोछरे चीयडे बचना ले लेगी । इस काम मे रोजाना छ मात की आमदनी है । पछी वाले पडत न बी इसम मुझे कमाई का जाग बताया है ।'

'पर प'ल केसर कू बचाना जरूरी ह ।' थाडा थम'र रावतो जिया काई अबूण भेर सू बोल्या, 'माय को बी मारा हुआ गलिया बच तक देत रहग ? सास की बामारी बिना दवा दाहू के टिकेगी नई ।'

'सिरदार केसर री बदगाठ ऊपर लूपरी बांधण लाग्या । माँ, जस्त र कचाळ माय धरयोड टिकडा अन चिटणी मू जूभ ही । रावता आपरी जिग्गा-हा जिगाई बठया हा-थिर, गाळ डिग्गी अन चिळकण बामणा री दुनिया माय गुम ।

मावण सू प ला माँ न कइ प्रारी तामी रा दारा पढ्या, पण बा जापरं सापरत दुग न ई जोळमा दीना बगर ती प्रीमारी और रात्रत की बहू मुझे त्वर जावेंगे । राम के घर से बुलावा जा गया है ।'

मिरदार न गहरी नींद जायगी ही, रावता चटाई ऊपर बठ्या हा— गुमगुम । बसर की गुनार थम थम'र गुण ही । टापर की गिनतमार सुनाड जिया माभ्यान निगळ्या जावें ही ।

गिणणिया गिणण की ममीन उठा'र मुहू जघार ई रात्रता टापर मू नीग रया ता सगळा मू प'ली भरया घडा लिया जावती मावतरी रा दरमण हुया । रात्रत मुण माभण त्रिया । वी की मारी पाजावा जिया गडमड हुवण लागी ही । कणाई वी त चिलपन बा णा ऊपर सूजीगम रा उणियारा मडता दीग हा, ता कणाई पूर लीनरा बाळी गाऽ डिगो जत करी आस्यावागो बचना रा घडं मा गा'ल । कणाई माँ अन केसर की वीमारी ऊपर पूरी की पूरी कमाई लाग जावती, ता बगता ई बा उदास हू ज्याव हा । चाणचन प्री र डार्व हाथ सेजड ऊपर बाचरा करळाई, ता वी र विचाररा रा ताता दूटया । प्री न सिरदार की याद आई । बा साचण दूया— प्रडा भाई मिर ऊपर हुव ता क्यागे चिता अर क्यागे किवर । किनो महारो है मिरदार रो घर म' वी सोच्या अर सगळा विचार भाड लिधा ।

प्राँदी रा कडा अन गिणणिया की ममीन रँ नाप तौल माल भाव अन हिमाव किताव माय खामा टम लागणा ही । पूरा एक सौ सत्तावत रिपिया ल र जणा बा बार नीमरया ता दिन दापाऽ हा । सूवीगम की दुवान जावण मू प ला वी जापर टापर जावणा ठीक समभया । प ना केसर की बदगाठ ने इलाज, माय की दुवाई, फेर बच्चोडी रकम रा भांडा बरतण ।

सूरज की चिलचिलाती तावती अन गाजी माय पीमा र निवास माय रायाड न वी न आपरी चाल की तजा अन रतन की तम्बाई न ध्यान इ नी रया । सिर ऊपर बरतणा रा टाकरा हुचैला अर कास माय पुराणै गात्रा की गठडी 'भांडे ले तो, बरतन भाडे ।' नई, वी साच्या—इण पुकार म न ता घो लय है और न बा मगीत, जा सिग्गार की काट सीगो लवा, जाका लवा' म है । हेनं मारू वी न जापर भाई मू सलासून करणी हुव ली । साचतो—विचारता बा टापर पुग्यो । टापर आग पांच मात जादमिया न भेजा देल'र वी रा पग पाठा पड या । फळस बडताड वी रो निजर केसर ऊपर पडी । उघाड डीन बा भदर हुयाडो बठ्या हो । वी'री पतली तम्बी मूछा की जिग्या अब फक्त सफाचट हाड हा । मा की माची एक काली मूदी पडी ही । आगण उतारघाडा माँ र पगाण सिरदारा बठ्या हा, सिर मु डायडा, उदाम । रावता आ सौ बिरतात दग र लड्या रा गड्या रह्या । केसर उठ्या, उठ र रात्रत र राय भरली अर पुबकारा मार'र कूचण नाग्या । भाय,

माय नइ रयी र माय हमे छाड कर चली गयी रे मा \$\$\$ य रावतो तो जिया
सूनो इ हुग्या हो । हरख-दुख, रावा वूकी वी न वी नई आवडयो । मिरटारो
बियू रो बियू बठघो हा—यिर ।

गळी र ई एक बुजरग रावत रो पूवो पाड'र हलाया सवर कर वेटा
सवर से काम ल । जाणा तो सवी वू है । बोइ आग काई पीछे ।' वह'र वी रावत
न नाई र आग पाटड ऊपर बिठा दिया ।

'माटी भग जिनावरा' डूबत स कठा दूज वह यो ।

'बहत्तर साल की नम्नी उमिर भोग ली । तीन तीन वेटा वा मुख भरा
पूरा परिवार छोडके गई है अणची । गने धान वागी बात नहीं ।

'स ग्यारम ने दिन मरीर छोडा है । मीधा बबु ठ म वास मिलेया तकनीर
वाली यी ।'

'पूरव जलम के अच्छे करम थे मया । त्यागा ता घडी भर म मरीर त्याग
दिया । बच्चा वू तालीफ नी दी कद—रती भर ।'

'बाते छोडो ले चलन की तैयारी करा । बेकूटी निवाला भजन गात हुए
और पीछे करो बटिया मीमर जिमम लोगू वू वी पता चले नि तीन तीन खाते
कमाते वेटा की मां मरी है ।'

रावत रो सिर मु डग्यो तो एक मिनख वी न खुवा पकड'र उठायो, 'मीमर-
भाज और किरिया करम के वास्ते हमार पाम यो ही कुछ है, ताऊ ।' वह'र
रावत एक मी मत्तावन रिपिया बूड र हस्तु कर दिया । रिपिया न गोजी म घात'र
पूढो बोन्यो, 'आखरी दरसन कन्ले, वेटा ।' वह'र वी कफन रो पलो ऊचायो—
अर अणची रो मू उघाड दियो । अणची रो उणियारो वदळग्यो हो । आन्या
पाटयोडी अर मुह खुलो हो । देख र रावता डरग्या । पाछो मिरक'र वी सिरलार
र बाध भर नि वी 'भाय, माय साल नो साल जीर जीती रह जाती रे माय
केसरे कू खा नई माय वा खुना मू केसरे कू बुलाता है भाय ।

सिरदारो गळगळो हुग्यो । रावत र घुघरियाळ बाळा री जिग्या मिर ऊपर
हाथ फेरता जिया वी र काटा सा गडया । वण रावत र बाय भर र छाती सू चेप
निघो, 'रो मत भाय । मद के बच्चे राया नइ करत । मद के जामू अकाम कू जाव
और घर ममाण हो जाव । वह'र सिरदारा वूबडी मार'र रोवण दूक्यो । कडियल
जुवान सिरदार न इयू फफक-फफक र रोवनो देख'र घोडी ताळ तो रावत न इयू
लाग्या ज्यू अव वो पूरी तरिया अनाथ हुग्या हुव । □

दूजौ ब्याव

रूपसिंघ राठौड

छोरा तो लगोटियो घन हुव । डील उघाड फिरा चाय पग उभाणा । कुबारा फिरो चाय ब्याया । काई बाड नी तोड । किणीज भात री चरचा भी नी चाल । पण डावडी र स्याणी होता पाण मा-बाप री नीट उड ज्याव । राटी पाणी छूट ज्याव । जाग्व दिन रात—एक ही वात । डावडी रा ब्याव नुव अबकी म्यात । टेम माथ डावडी रा पीळा हाथ करणा भोत जरूरी । डावड्या र ब्याव रा मामातो इण जमाने माथ घणा ररडो ।

भला मू भेटा हुजावै ता खर माना नी ता तरी मागगी तरा मूड हाता देर नी लाग । जाछा भला री स्यान टवा हुज्याव । करे कराय पर घणखरा ता पाणी फेर नाख । जूतम फाव होता गीम । जे किणी कुजीव मू पाळो पडज्याव तो उमर भरल रासो होज्याव । कई कई ता छारी न बाट नाख अर दूजा कई जीवती रर पनीतो ही लगायदे । घणा कसूता टम । नेज दज रा नाका नी । आव रा बावा माग । ओक मूड माथ नी माड र सीटा माथ ऊपर माट । रीता ता भरीज जाव पण नीचा सू लीक करणिया रा काई भरीज । खुद री छातो पर हाथ घर बदे नी मोच क— किणी री बेटी बाबल र घर नी र । बी नै गीवथे चढावणी पड । अर म्हारी नाडी किणीज री भू हुवला ।

घर मे चाये उदरा कलाबाजी साता फिर । कित्ताई टोटो हुव । पण बेटी रा बाप आपर वृत मू बार नगावण रो जतन कर । उपरला नाका किणीज र हाथ नी जावै । पण लोग बाग घणा हाथ पग मार । आ ठरी दुनिया री रीत ।

इणीज माथ सगलिया साम चरचा चाल ही री ही क—बाणवक दो डावड्या रा ब्याव माडणा पडग्या । खडे वेजडा वेज । च्यार गिन । भोत साकडा टेम । पण मरत रा किंज पग किंन सिर । बया तो—हू लीक रो फकीर नी । पण लाक लाज रबण मारु नाना मांगो ता करणा ही पड । धागे भाग दोड

करन दीप-गप करी । भानुमती रो धुणवा बणाय लीना ।

तम माथ जान जाई । माडा रापीज्या । वान बढाया । सामळा तारण,
फेरा पाटा सगळा तग तार हुया । जान री जाव भगत तरीजी । समधी ग ठरा
मोठा मान मुण्या । समठ्णी करी । जान जुहारी करीजी । जान आपर ठेड दूरी ।
जद जा'र ज्यान मे ज्यान आई । दूज तिन जय टटाली ता ठन ठन गोपान ।
भाई भूरा-लया पूरा । अडा तडा करणे जिता जोडया मारा रो मस निव म
रपीज्या । पगरती भडवाइ ता माटी नीसरी ।

अव लागे ने नि स-दे र जपावण री मानो । जिणी न पर्सा ता जिणीज
ने पर्सा नी बात । मगळी याना री जापड धापड कीती । हिवडे म दडी टोप
गीत रो ओट्या नीसरी—

“समधी मिन्या उमदगिष-राखी म्हारी लाज

हरि हरि चोखी करी-सार्या म्हारा वाज ।

तीत तिन च्युटी माथ स्तून पूग्यो ता साथी मगळिया बान्या— अव
मुणावो गा ।’

हू पडूतर दता घया कया — वाई मुणावा । मगळा काम मीज गोम मू
पूरा हया । डावडया तीवडी चढाय दी ।

‘मास्टर माय ! जिभत निवम प्रवासण सारू जिभा विभाग आपरी रचना
मगळी ह । बाई नवी नवीर रचना निव्या भेजा नी ।’ पण कानी गुमसुम बढया
दुडमास्टर माय बाया ।

‘म्हार हिवड म भट्ट उपजी—आ वाई । हू ठेरधो उण बयत रीत माव ।
दुनियादारी रा घधा म अळभेटो । घोळ घण्य ! म्हाने की साचण नै टेम चाहीजे ।
‘ण टम-यात्री माथ-माह रो हाया । पण आतूत मू ताचार । क उठया—अव
मच्या दूजा व्याव । सून माथ टीक नी ।’ मगळा नग चार करण खातर हू गुद्दी
नीची करी फेरू निवण न जाग्या । □

घामीराम गगाराम

अरविंद चूरवी

घामीराम जी माट माय घणा भेटाती हा । माट री वनामा भणावता । आघी तयारी करता । आपर विम रा जपरा पित्त हता । आपरा पीरियड वदई ती छोडता । कलाग व व धमक्षेत्र-बुधक्षेत्र नमभ ते टावरा र दानवी अना मू भक्तभेडी लेवता । टावरा री वतनी मुधागता । एमट्टा तनामा ताण्ण री रोगनी म वी खोड गाव म तगावता ।

घामीराम जी व टावरा म भगवान दीमती । व सात्र बागवान री ज्यु न्मवून री वगीची र आ पूना व गवारता । जादू वा जिरो मिर चत्न वान । विद्यार्थी जापर मूड मू ववता सा । आप पढावी जद रम घणो आव ।

टावरा न घामीराम जी अतरा चाग्या लागता व जिवी कलास म व जाव पठई टावर वणा री इजाजत लेय न वा री कलास वंठणा चाव । तारी लार नी थोड । गरला मनजी ववता 'घामीराम जी छारा माथ काई जादू तर ल्यी ?'

लारन वेई सात्रा मू वा रा परीणा परिणाम मी पी मद रवता आ र्यी न । विभाग जाई साल वा न प्रणमा पत्र पुगावतो ।

घामीराम जी माट सात्र लारल पनर वरसा स्यू इ गाव म हा । व वम भूमि म भूभता धका वणा री पनडा लडवा आपर नानाण माय वेचव री फेट रामारण हुम्ययी हा ।

एक ताण घामीराम जी र वाना माय तठात्र म नपाडी वरती न्म पाणी वडग्यी जिक सू वा र वान र परद माय वोजवा हुयग्या । एवग वा री वाइ टाग म वाळा-नारू रा तीन वीडा ई जलमिया । एक वळा व गाव म परिवार न ई लाया । व आप तो चुनाव करावण गियाडा हा । लार मू वा री जाडायत अ र ननिया हारोबुव माथ पाणी भरवा गिया । ननिय र बुव हठ रमती तेभ पण म पिरड डक ठाक व हाटी परी । पण भगवान राज रागी ।

घासीराम जी रा पिता श्री बै वारवी कलास म भणता जद ही रामशरण
धैगा हा । ई घटना सू वारी मा री दिमागी सतुलन विगड्ग्यी हा । घासीराम जी
इक्लौता लडका हा । शहर रा बामिदा हा । मा री सत्रा सारु शहर म तवादळी
चावता ।

एक गगाराम जी माट सात्र हा । व आषी उमर शहर म ही गाळ दीनी । आ
म घासीराम जी सू उलटा गुण हा । प्राईवेट प्रेक्टिस करता । कोचिंग कानेजा
म ही ज्ञान विक्रय करता । एकर गगाराम जी गळती स्यू तर्की र लोभ माय पाच
कोस छेडल गाव गिया परा । पण वा न एक परोपकारी डाक्टर साब मिल्या ।
अ डाक्टर साब फर्जी प्रमाण पत्र देणो जापरी फज मानता । आपरी 'फीस' लेयन
अ डाक्टर साब गगाराम जी न अडो 'राम बाण' प्रमाण पत्र दीधो जिक म वा न
दवामीर सू नक्सीर तक सार अगा री बीमार प्रमाणित कर दीनी ।

शहर म एक पद खाली हिह्यौ । गगाराम जी ज'र घासीराम जी अजिया
दीनी । गगाराम जी प्रमाण पत्र र रामबाण माथ विराज न शहर म वळ आया परा ।

घासीराम जी आप रा प्रशसा पत्र वाच वाच न फेर वाच्या । वारी
आस्या जळ जळी नैमी । पण ब गवणो मद री कमजोरी गिणता । □

विकलाग

माधव नागदा

‘धारी वेटी मुख म पडेगा । जेमन्तवान् रा माल गायगा । वम्वाई री हुण्डी चुवेगा । ते दे सेठ लगडा न र्प्या दा र्प्या ।’

सठ कुर्सी पे वठया प्रथया माइकल नजावणिया रो ताम रजिम्तर म च्त्ताय रत्ता रा । भिग्यारी री गुहार मुण माम लेग्या ।

वेटी रा त्राप नट्ट व्ह रिया है । कमाय न ग्यायाकर । भीग्य मागता शम कोनी जावे ?’

सठ थू भागमाळी ह र तारता जनम म जाच्छा करम कीदा है । गीटा करम तो म्हारा है । भगवान् जनमताई एउ टाग नी छीण लेतो ता म्हु भी जात धारी नात् कुरमी प वठया गज करतो ।’

सठ भिग्यारी न ज्यादा मु डे लगवणो ठीव नी समझ्यो । वो गुनव खात देवण जोग परचूणी दूढण तागा । भिग्यारी जागे वटिया ।

‘दे दे सठ भगवान् धागे वधो फळापगा ।

ल ते जा ।

भिग्यारी हाथ फता र नट गयो । पण जचाणचक हाथ लारे सीच लीणे जाणे आगे जगाग म्ह । कुरसी प वठ न ‘राज करणिया री दो यू टागा गायव ही ।

□

म्हारा पाँचलाल जी

श्रोमदत्त जोशी

घणी मुस्कन मू म्हारी बदनी इण भर री ओल्क नीची इस्कूल म हुई । भात भात री वानगी आळा गुर लाग अठे विराज । सबला जाप आप री यारी पिछाण राम, पण एक् घणी विमेमतावा रा धणी ह जो म्हारा मन मोह लिया वे है सरी पाँचू लाल जी मा । गोरो गिचाक मूटो पाकोडा लाल टमाटर री ज्यू, पाछे वाहडा अधपाका लाम्बा लाम्बा केम, ज्यान दिन म बीम वार वाव छोटयाक कथा मू जा उणा री बुसट री जेव म र्व चौपीस घणी । जाण्या रा हीरा काचा भूरा रंग रा, मूडा री मुळक आठू पर । मछा सफाचट राख लुगाया ज्यू । पट अर बुसट रा पहनाआ, बोलती टम त्रिनाट माथ तीन आडा सन पड ।

जापरा नाम अनन पण आपरी आतमा अर डील एक हीज है । आपने फिपतनाल कालीदास, चूलाल आद नामा उपनामा मू भाई लाग बुताव पण आप नाका सळ नी गाल । आप रा मूडा री मुळक मू दूजा न भी मत ही मुळकणा पड । आपरी बाता केवण रा लजी क्यो ह क पूणी तापती रावाजी भी हर्मण दूक जाव ।

हिमाव पाद पाई रो राखण री आछी टव है । तिनगा मिलण रा दम त्रिना पनी जर दम दिना पछे ताई आपरा मीना भर रा उजट वणा लेसी । उणा म एक परीस्यी भी अठी उठी नी तरच । पूरो हिसाब बिठानना, चाह उणा म जाठ तस कागज रा पाना तराज क्यू नी हो जाव । इण मे वारो गाँठ रो काई नी विगाड क्यू क कागज पानडा छारा री कापिया मू फाट फाट माँग लव जर पेन मिरकारी हीज हुव । हळदी लागी नी फिटकरी रंग पासा आग्या । जाप ही बताआ क या रा काई विगडचौ ? फागट रा चम्रण पिग म्हाग नाता, तू ही लगा अर धारा धर वाळा न जुता ना ।

उणा रा हाजमो बदही बदही विगड जाव अर उगी-दग्य माग ना पाव,

एण बळ ओकळ होवण रो एक हीज कारण है व पराया माल माथ दस्या दूट जाण गुड माय मारया । खावण टम आपरी सुद बुद भूल जाव व माल ता परायी है पण पेट ती जापणी हीज है । इण मू ही पट मार्थ पोट बाध लेव पेट भगूता ज्यू । वा ही बात—व मूरख राय मर व ऊचाय मर ।

पांचू लाल जी री तीन लोक मू मथुरा ही यारी है । थोधा चणा रो ज्वान बाज घणा । आप सू थाडी सी बात छेड र देगत्या पछ आप रो मत्फ स्टारटर टेप इम्पी चालसी व सुणण वाळा न ऐस्परो व न जनासीन री गोळिया गाठ मू मगाणीज पञ्सी । जाप री बाता इण इस्त्रूल म पली आळा हैडमास्टरा रा गुण-औगुण र जोळयू दाळयू चकरी ज्यू फिर । इण म्ह औगणा रा ही बखाण बत्ती हुव । हाथा रा लाम्बा लाम्बा भाला दे दे र मूडा माथ हाथ फेर फेर वाता री वानगी पुरम । जिणा र समत मित्ती नी लाग । वाता कता-कता आप हापू धापू ज्यू हो जाव जिण सू सुणण वाळा पूरा चेता मू नी सुण मव जर उणा रें आधी वात ही समभ म आव । बीच बीच म्हे कुदरती छेव भी लाग जाव । कदेही नदही म्हारें भी आधी वात ही समभ म्ह जाव पण जियाज रा वाचो हूँ इण मू म्हारे हा म हा मिला र गॅटकी न हिलाणी पडे । बोलण री टेम जापरा गला री जीमणा पसवाडे री नस म्हे रक्त रो वहाव तज हो जावण सू फूल र भोगली ज्यू निष्ण लाग जाव ।

कानीदास जी न आपरी इस्त्रूत रो घणा मोच फिर है । वा कुरसी कठ गी । वा दरी कठ है ? कागज रो दस्तो अवार ता ल्याया अर अवार हीज उपडग्यो ! कारपेपर इतरा क्या म्हे चाहिजे ? धानपीना रो पत्तो दतरो महगो किकर जायो ? आज फलाणा माटसाब छुट्टी पर है काई ? इतरी जांच पडताल करणी उणा र बवहार म्ह है कोई बूरी मानो तो मानो । म्हारा धके भी सक्डू समस्मावा री पोट खोलण लाग्या—'काई हैडमाटसाब ! म्हारी किलास र बाट माथे वारनिस तो करवा दा चाक हीज नी उघड ? काई सा म्हारी किलास म्हे चडण वाळो पगतियो तो लगवा दघो, छोरा-द्वोरी चत्ता उतरता हिवल्या नी रेव एक जाध पडग्यो ता फेर माथा फोडी हा जासी ! काई हैडमाटसाब ! डायरिया वायरिया सबला री देला कि नी ? एक काम तो हैडमाटसाब म्हारी किलास र क न वाळी नाळी को तो कग्वा हीज दयो । रात दिना री मगज मारी खतम हुव परी आगी ! म्हारी किलास म्हे दो दरिया कम पड दे दुजार नक्की करो आगी ? ओ पखा रो हुक तो रेह ग्यो दिख ? जोफिम म्हे रग तो कग्वा ल्यो ! इण किवाड न ठीक नी कराओ काई ? जापार इस्टोर रूम म्हे लाइट वाइट नी लगाओ काई ! इ नल रो भी काई नी हो सक् दिख ? जा पाणी री टुकी भी ठीक नी हा सके काई हैडमाटसाब ? आ जमवतमिह तो कने ही डायरा

नी भरे ।^१

उणा री इसी बाता सुणता सुणता म्हारा वान पाव भ्या । रयारी जुवान पाडी ज्यादा हीज चाल वतरनी ज्यू । सबला आप आप रा काम म्ह मसत है न उघो रो दणो अर न माघू रो लणा । पण इण भाई रा पट म्ह काई कुरकरी चाले व आखी परधी रा साच कर । आपरा हवाल म्ह मसत नी रव । मू जद भी उणा री किलास री डली माथ पग मलू नी जर उणा री जुवान चानी नी । राजा छुडावा जाऊँ अर नुवाज गळ पड जावँ । उणा री सिवायता-सुभावा सू पाछो छुडातो पाछ पगा ही बावड जाऊँ । पण इण सू ही काम नी चाल । भाई री किलास म्ह टागडी भी तो कम हीज टिके । भँवरी खाता खाता म्हारा दपतर म्ह ही आ जाव अर उठ ही बैठ र राता रा व्याळू करण दूक जावे । उणा न टेम रो कि ज्ञान नी रवे, जद पागती री त्रिनाम रा माटसाव कूटा मारा, रोवण घावण, हावा हुली री आवाजा सुण र हेलो मारे जद जार म्हारो पिंड छूट । मू म्हारा अतस रा हिवड सू, वृलावण वाळा माटमाव न घणा घणा घनवाद देऊ ।

मू पांचू लाल जी न वेई टेम समभावतो वेऊँ हू— देखा माटसाव । पराया दुख दुखली नी होणा चाहिज । राज वाज यू ही चालता रसी । आप तो आपरो काम बरो जर मस्त रेवो । आप आप रो काम आप-आप न सूक । इण इस्कूल रा काम वाज सबली विवस्था देखण खातिर सिरकार म्हने भेज्यो है इण रो सोच फिकर तो म्हन होणा चाहिजे । आप भी आप रो फिकर करो दूजा भल ही घड रा पीदा म जा पडो । साता बन जी ती म्हने वा री किलास रा पगतिवा री खातिर एक वार भी जुवान नी हिलायी एक थ हा जो धरती जावास एक कर दियो । ये साचा व हाथा री पाचू आगळिया बरोबर हुव की ? इण हीज भात सबला इग्यारा साथीडा भी आपरी ज्यान नी है । काई आप सू सवायो है तो काई जाघो पण म्हने ता सबला न माग लेर चालणो है । म्हारी निजर म सबला सरीसा हो—कुण काका रो अर कुण बाबा रो । जिण म जितरी छमता हुत्रली वा उतरा हीज काम बरसी अणूधो नी कर सकेलो ।

भाईडो मुळक मुळक र म्हारी बाता न सुणता जा रिया ह म्हने यान लसा रियो है जाणँ हिया म पाकी गाँठ बाँध ता जा रियो है क अब परायी पचायती नी बरणी है । मू मन ही मन घणो राजी हा रिया हू क्या वँ अब म्हारो दिमाग फालतू चाटण नी आसी ।

□

ताजू खाँ

अमोलक चन्द जागिड

गाँव म टीगरा सू ल'र बडा बूढा ताणी इस्या विरला'ई लाघ जका ताजू खाँ नै नी जाण अर ताजू खाँ सू कोई छानो नी क कुण आदमी क काम कर ह अर उण रो के नाव है । मै अक स्त्रूली छोरो हूँ इन बिन बाजार न फालतू नापतो फिरू । अक दिन गोपाल टी स्टान' पर ताजू खाँ न ठाठ सू बख्या देख'र मन घणा हफ आयो । इस्या बड डील डील वालो अर भात भतीली पासाक म सज्यो वज्या माटयार वारू सहरा मे नी लाघ ।

यू तो गाव रा लाग बीन बावळा बताव पणा वा री चरघा चाल जणा सवा पा'र निवड कानी । खास बात तो या है क ताजू खाँ र काम न, बी र नित र जीवण ब्यीवार न विरला'ई लख । कारण वो राजीना सुवार गोपाल टी स्टाल म आकर आपरी सागी सीट पर बठ जाव अर दिन छिपण र बाद मुळकती मस्ती मे उठ'र आपर घर न बहीर हा जाव । बी बखत री वा री धीरज धारणी चाल जाणी बढत अधार री पूछ मरोड दी हाव अर वा बिदक न वेग सू बगता हुव । गेल म की हलगल नी हुव । सा म न अचम्बा हाव क लाग बी न बावळा बीकर बताव ।

मन मर दादाजी सू मालम हुया क ताजू खाँ रा बडका घणा ठाढा बीर अर महनती हा मा बिसाऊ ठिकाणा रा ठाकुर बान काल्याळी सू त्या'र बिसाऊ बसाया । ताजू खाँ घणा सुदो । टावरपण म रेवड चरायो खेत म गध ज्यू खप्पा । आपरी मनीत मजूरी री नक कमाई सू परिवार रा पट पाळया पण खेत र भीभट अर झगड सू मानसिक तणाव तणता'ई गियो । आखर लामी टेम ताणी उदासीनता अर उपक्षा री अबखाई बी न बावळी ज्यू वणा दिया । आ मग घट नावा री जाणकारी मेरु हिरद न हिना दियो अर मर भीतर सू सबदना रा अण धाग मरदिया मिलग उठया अर नणा सू नीर निरभर ज्यू भरण लागग्या ।

गन री धीती बाता भेर माथ म उभूठिया पण धिरता मार लागो । मारी रात भर नीन मू निरवाळा रया । दिनूग रो आळम पवत अगडाई सू की कर टूटता । फेर ताजू साँ न आजू नजीक मू शरण री तावळ मनें आपू आप 'गापाल टी स्टॉन' पर ला पळ्या । म वा न स्टान री सागी सीट पर विराजमान दग'र वा'र मामी नजीक मू घणी देर ताणी निरग्या ।

लाम बंद पाठी रो मागीडो माटयार । भरवा डील । मित्र पर बडा भारी तापा वाई पाँन गाफावा रा अेवठ मागीश गणीड । वजन पाँच विना दा सा ग्राम । मरलार न पर चिठाव । नामी धवठी लाठी अर धवठी भररी मूछ्या चाड विनाड अर मलवटी शहर पर तार चाँद नगाव । दूर मू उभी हा'र दग तो अेक गतगनाक टाकू मू उमी रोय पड । वा री पागाव री वात आप वे करो । स्यात गिणती करता करता गिणती गात्र हा जावं ता गळती कानी आपरी । म मुद गिणती रं चक्कर म गिरणी चक्कर गाय्या । कठ टिका-छाटी वनियान रो खुणा लामी कमीज री फाटी बावा, जरमी रा लीरा ऊपर धारीदार बुमट बुमट र ऊपर वाट, वाट र ऊपर लामी गरम जरमी, जरमी र ऊपर जरमी, बी र ऊपर मजबूत माटी कमीज । वाह सा ! आ वाह ! आजू वाट अर वाट वाई ऊपर आवर वाट वाट कठ अत भी । नीच पाजामा अर पजाम ऊपर डबल धानी । पगा म गावड रा काठा जूत अर नीला लाल मटमळा माजा, वा र ऊपर फोजी उनी माटा माजा । म जाणगा पजगा वाजा । आपण वूत री बात कानी । लाग वावळ वेई कच-गाभा गर दिया ।' म कचू जठ तो गाभा रा निवड कानी । द्रापदी र अणत चीर न कुण देख्या । जठ मापरत ऊभा ताजू साँ र गाभा री नीर रो नाको नी लाध । चावा लाग जतन करा सिर पीटण र अलावा और की पल्ल ना पड । जे आप गाजा दलो तो ठमाठम भरघा ख सण झापट अर नोटा सू । नित लाखा रा लखा जाया कर ।

चाखा चाखा लाग गुसामद र साथ चाय नास्ता, पान, बीडी, सिगरटा रा लम्बर वाघ्या राख, पण इसी पान कठ क कसाई रो पीसणा बकरिया खाज्या । पूजा पर हाथ नी धरण देव । सवदा रं गारलधध म आप आप रा भाग परला अर सटट बाजार म जासर दडा लगाता रवा । टाँटकी पिलज्या जद ता पिलज्या । पण न पित्त जणा आपरा करम ठोक न रा ल । पाछ पछताव जरथ निवाड न रा गलती करा । पण ताजू साँ री बाणी पर बंद पाणी नी फिर सक ।

कदे बंद बट्या बट्या आखता हो जाव अर तळी बळ उठ जणा आपरी गादी पर सू उठ र दो चार बंदम उतावळ सू भर । बी बसत वा र बेहर पर जावळ वावळ अर तिलमिलाट रो मित्यो जुल्या भाव देवण जाग हाव । डाव हाथ म घाटा राख । हाँ मा, 'नगडिय धणी र घाट सू बम नी जाक सवा । तीन

छतग्या री डाडी मय ताटचा अर दा चिटिया भर अेक लाठी । सगळा पुराणी
 पूरा सू तदड पदड अर कस'र बाधियाडा ऊपर ताणी । फक्त आसर म छत्ता अर
 चिटिया री यारी यारी डाड्या दिस अर लाठी मूठ म आव जितरी चाली ।
 नीन मू भारी भरकम । ऊपर चूडी उतार होतां जाव । अयाला घाटो हाथ म
 ने'र ताजू खा आम्व गाव म आपरा घाटो घुमाव ।

जेक बात खास जोर । म्हार गांव म बावळा न टोंगर दळ दर नी टिकण
 दथ । भाठा, धूल और वचना री सूळ रो नाको नी, पण ताजू खां न फूल की नी
 आव । औठी रा घणो मान सनमान दरसाव । बडा बूढा तो वा न घणा पूचवान
 अर सत मान । जद ताजू खा गुदडी बाजार मा सू गुजर तद बडा बडा लोग
 आपरा काम छोड'र ऊभा हा जाव अर सलाम कर जाणी गाव रो घणी पध्यारयो
 होव । वा री चाल इसडी धीमी जाण जमी री अबसाई री पिछाण करता हुव ।
 इसडा हं सा ताजू खा ।

□

कागलावाद

त्रिलोक गोयल

राजनीति, साहित्य, समाज दशन जठी 'हालो बठी आज 'बादा' री बकवाद चाल री है, धीया सांच वूभो तो आँ बादा री बाढ म एक ही बाद नुवो नी है, जूना जमाना म आँ बादा रा खाली नाव हीज नी धरपीजा हा, यानी चिया फेर बदल रे सागे वाता सगली अ की ज ही ही क्यू के मिनख अर मिनख रा मायलो सरू सू या को बो ही है, थोडो घणो धारलो बदलाव न्यू विशेष अरथ न राखे । आधुनिक जुग मे कोई माध्यो जठी मूडो कर्यो बठी एक बाद रो भण्डो लेर चाल पड्या । ऊँ असैदा गला प चालणिया चमचा, लरड्या न मूरखा री ही कुमी नी री, ज कठ पूगेला आ राम ही जाणे । आधल्या आधल्या नै गेला बतार कश्ये वेरे वावडी पडसी कुण जाणे ।

तो बरसाती भीडका सा जा अणगिणत बादा म हूँ सिरे नाव कागलावाद ने मानू हूँ ! कागलावाद रा प्रवतक ऊँ रा नामी जामी माँ सुरसत रा लाडेसर काव्याचाय काग मुसुण्ड जी महाराज हा । व आपरा इ कागलावाद ने काळा कागला खवार अश्यो अमर कर्यो क ओ महताऊ वाद रामायण काल सू आज ती बरोबर बघतो जा रयो है, आपरा ऊजला आगोतर म आ जमरबेल जावास ती पूगसी क पताल ती जासी ई रो की अतो पतो नी है । जीया हाथी रा पग म सै रा पग बीया ही इ एक कागलावाद म बीजा सगलावाद आपू आप ही आ जावे है, ई बथन रा पुस्ता प्रमाण तो हूँ मोखला ही दे सकू हूँ पण लेख र लाँवो हो जाणे रे खतरे सू टळ र फकत थाडी सी वानग्या ही दिखार्यो हूँ ।

हर समाज म कागलावाद रा अश्यो ऊँडा प्रभाव है क जणवा, परणवा, मरवा रा ही काई खाटा चाखा, सड्या बूश्या, रुडिगत नासमभी रा अधविश्वासी समाज विगाडू कामा ती म लोग ईया पडे जाणे ऊँठ जूठ प कागला । सामाजिक सम्मलणा म दहेज दिखावा, मिरत्यु भाज, भेद-भाव मिटावा रा काव काव भापण

अर वसत पडया गाव गाव म आ बुरीत्या म वागला ज्यू भेना हार थाया सहयाग देणो वागलावाद रा हीज पोषण है, कृष्णगत साथक हुव व घणा श्याणा वागलो भिष्टा म चूच डुनाय । विणी भी ममाज म अश्या श्याणा वागला री कुमी नी है ।

साहित्य ता वागलावाद सू भरया पड या है । सरआत ससृत सू ही ल्यो— वाव चेष्टा वको ध्यानम, स्वान निद्रा तथवच ।

अल्पाहारी, ब्रह्मचारी, विचार्यो पचलक्षणम ॥

श्री गणेश ही वागला सू ब्हियो है । टावरा न जा पडाजाला न ही सीधेला । वागला रा लक्ष्मण लर साचाणी ही विद्या री अर्थी ब्हैनी । मुडदा, ममाण, हाडक्या अर गलीचखाना सुगलवाडा सू ही वागला रो सूधा सम्पद है वो वा वा असर हडताला, ताडफाड, गुण्डागदी जावारा पटालपण छात्रा म वडगो । आपरा रामचरित मानम म गुसाई तुलसीदासजी खाली वाग भुसुण्ड जी रो ही गुणगान नी करया है देवतावा रा राजा इंदर रा सपूत जयत रो कथा ही लिखी है जा वागला वण र सीताजी रे चरणा म चूच मारी अर करुणावतार राम बिना फर रे बाण सू ऊँ री जाख ने मालक बना दी, जी मे छेनला दो अर मणियो एक जठी हालणो हा जाख रो हीरा बठी घूम जाव—बोलो अश्या विशेषता जोर विणी जीव म है ? तुलमी रो ही वीजो उदाहरण है—

बठी सगुन मनावति माता, कव अइ है मेरे बाल कुसल घर कहहु वाग फुरि वाता । दूध भात की दौनी दहा, सान चोच मड ही ।

सूरा श्यामी लिरयो— वागहि कहा कपूर चुगाय, स्वान नहाय गग ।

भज मन हरि विमुखन को सग ॥

वाग रा भाग री बडाई करता कृष्ण भक्त मुसलमान कवि रसखान जी ही वागला वाद ने सीच्यो—

वाग के भाग कहा कहिय, हरि हाथ सा ल गयो माखन राटी ।

मुरधर री गीत गगा मा भीरा तो आपरा भीठा भजना म वागला न बोळा ही वाद करयो—

वागा मब तन खाइया, चुन चुन खइयो माम ।

दो नणा मत खावज, हरि दसन री आस ॥

काढ कतेजो म धरू कौवा तू ले जाय ।

जा देसा म्हारा पिब बसे, वाँ देखत तू खाय ॥

वागला बिना रससिद्ध कवि बिहारी री सतसई ही कीकर पूरण ब्हती । व लिख्यो—

दिन दम जादर पाइके, करल जाप बखानु ।

जब तगि बाग सराध पल तब तगि ता गामातु ॥

आदर दे दे घालियति वायमु बलि ती वरि ।

गत वृषाराम जी ही पाछ क्यू रहता ब ही बागला पर विरपा करी—

उपजावे अनुराग, कायल मन हरपत कर ।

कहवा मागे बाग, रगना र गुण राजिया ॥

रहीम, कबीर, दादू रदास, पीपा बाई गत अगत पल्लम धिम्मू बागना रा विडद
यगाण्या बिना न रह्या—नागा बागू जत है, कायन बागू देत ।

गीठे घचन गुनाई ब जग अपना कर लेत ॥

घाव वै धी ब ही बाता धुमा फिरा र कही ह्य पण बागला सू अछना न
रह्या । निचाड ओहीज है ब कायल रा गीत गावा रा जमाना कदी कालद चुम्या ।
कनजुग मे बागला रा ही हरजम माया जावला, आ का दिन पूरी तरा चढतीप
है, और ता और राम मारयां लुगाया ती न भीटयावे लाण्या महीना म चार दिना
ती की काम काज री ही न रहव ।

राजस्थानी भाषा रा माहिय म तां बागला पग पग प दीखेला—मयी चढ र
बाग उडावा, छाजा प बागला बालवा सू भाई स साईं र आवा रा सुगन विचार ।
अ परम्परागत वणन ही नी देस री दसा बताता जपर रा श्री बल्याण सिंह जी
राजावत लिखया 'साच री ता भूपडी प बागला पडे' । नागोर रा कवि कानदान
कपित गाया 'बागला ही हस री उडे उडाण सा' । जुद्ध रा निना म मे ही आपरा
एक गीत म बागला री आरती उतारी—

आज मुलक री सीमा माघे कर बागला काव काव ।

सडवा न चालण रा पीना चाँवल बाँटो गाँव गाँव ॥

हिन्दी साहित्य रा स्तम्भ प्रसाद जी रा सुप्रसिद्ध गीत—

बीती विभावरी जागरी ।

अम्बर पनघट म जुग रही तारा घट उपा नागरी ।

इ री परोडी करतां ठा नी कुण खुरापाती बागलो लिख्या—

बीती विभावरी जागरी

मिल का भौपू लगा बोलन, विस्कुट घाल लगे डालने

छप्पर पर बठे काँव काँव करते हैं कितने बाग री ।

खरी अर खारी साँच बहवण म वेजाड बावा नागाजु न जवाळ पछ आयाडी
विरला गू प्रकृति रा हरप परगट करता लिख्यो—

कौवे ने पाखें खुजलाई बहुत दिनों के बाद

पचतन, हितोपदेश आद री घणवरी बहाण्या म, लोक कथावा म बागला
रो भरपेट गोचक जिम्बर मिलेला—बागला रा भीठा सुरा री बडाई करता कवा

मगीताचाय बतार चालाक लामड रा राटी हडपवो, जधनर्या पडा म वाकरा हाकर वागला रो पाणी पीवो, अश्या पचासा बहाण्या आज भी पब्लिक स्मृता म पढहाला टावरा रो मनोरजन कर है। राजस्थानी लावगीता रा ता वागलो पिराण हीज है—कामण्या घणा वाड सू गाव—

उड उड रं म्हारा काळा र वागला, जद म्हारा पित्र जी घर आव'। वीजा ला प्रिय गीत है— वागळिया गहरो गहरा वाले नी र'। तीजो है 'धारी परणी उडावे काळा वाग वादीला घर आजा।'

धरम कहवो चावे दशन वागला रा शुभ दशण हर ठोड। जूना जमाना म ता वाग भुसुण्ड जी जश्या कागला ही रिसि मुनि ज्यू नानी जर पबित्तर हा पण जाजकाल तो मिनसा जूण म थार ही लाय कागला जश्या आचरण कररया है— धरम करम रा नाव पै जा वागलवाडा चालरयो है वो विणी सू अजाण्या नी है। कोई भी धरम विमस प आगली उठया विना सगला ही इ कादा कीच म भर्याडा है। ऊं गलीचवाडे न उलीचणे सू आवा पयावरण प्रदूषित, दुर्गंधित हा जावेलो— राम धारी गगा मली पजाव, आसाम, गुजरात, तमिल, कस्मीर एक ही आ नास पीटया वागला सू न बच्या।

राजनीति? राजनीति तो वागलावाद रा घर है, खान है। एक बार बादशा अक्बर भरे दरवार म पूछयो आगरे म कतरा वागला है?' जणा कोई सू क गूढ प्रश्न रो उत्तर न दीरीज्यो ता बीरबल जो मूडे आई वा अलटपू सख्या चेप दी— दो लाख, दस हजार नो सो तिनाणवें कागला है।' अश्या वावन तोला पाव रस्ती—वाटा का बूट रा मोल सा सही आकडा अर तुरता फुरत पडूत्तर सू स ही रचरज म रहगा। बादशा सलामत जाणगा क ओ भाटो आ सरया यू ही चप दी है। व हुकम दिया क राज मे जतरा भी चिडीमार है सै ने कहो क आगरा रा सगळा कागला मरया जीवता जीया भी हो भेळा करो, कमती वेसी नीसरया तो बीरबल री गदन मार दी जावेली।' बीरबल भुलक्यो 'मालक जतरा वेसी नीसर जा जाणजो क व अठे पावणा आयोडा है, जतरा कमती नीसरे तो जा मानजा क अतरा दिसावर गयाडा है।' स री बोलती वद।

काळा काळा वागला पण कहवो चावे क काइयापण जा अमोष गुण िहया विना कोई सफल राजनीतिज्ञ हा ही न सके। अ राजनीतिक कागला तन मन सू काळा र गाभा सू ऊजला हुवे है जाणे भावस पू-यू साथ, दीवा तले अंधारो, माय मू कागला र बार सू बुगला। एक औखाण है क 'हसा म वागला' पण राजनीति म गार आ कहणामत साव हा ऊधी होगी है—इ कागला री जमात म हस काई विरला ही चावे ता लाय। अ धरमखाऊ, मुडदाखाऊ, भिस्ट वमतलत्र ही काव काव कर र वापडी भूषी तिरसी जनता रा पिराण खाव, माथा खावे। कुडय्या

प वागना ज्यू पहणो, छन वपट, पूतता पूण आचरण गुणो ह्यो ही वागना मजे
तो आगा वागला रा भेलो हार पत्ता नवा ह्यो वरज हर वाजना से तनिना
टीय टाय विरस । अं सगला वाग वरित्तार आ राजतीतिवा सू मुठो मुठियाडा है ।

पहनां हर घर र वार बड पीपन या नीगधो होयो तो टण्णा वागत्या म
पड्या पह्या वागला मजे मू मीठी निरोल्यां कुतरता, वागला वारया र आया
गया पै बीटां वरता इय जदा मू वा महोत्सव वर वृष्णारापण रा नौटा हीना
साग्या है मगडा रा हरया वण्ठा प जारा चातरया है लाई तागला री जान न
गिरह होगी, 'जायें तो जायें वहाँ ?' पण वागलावाद रा हिमायती आ न दुकी
बीया देगता, व डागला टागला प टी बी रा जे टीना लगा र वागला ती सोवण
सिहासण वा दिया है । पोगर जी म एक वर एक टिप्पी मू मुतावात होगी
ऊ अमानुष वने एव पूठरो अेनवम हो । वाता ही वाता म बो मो आपरा खीचोडा
चितराम दिसावा नाग्या जीया ब्याव री फाटुआ म और वयू ही दरसाव आजो
पण फौवम बीद प ही रहव । मनीमा वाता रो लक्ष्य हीरा हिनोदेन रा पोज तेवा
ही हूवं है बीया ही ऊ नरमिह औतार रा हर चितराम म वागना री हीज परमु
मता ही, वठे ई मंस री पूठ प शहनगा जीया वठयो वागला वठे ई मिलेरो न
चिगदतो वागला, वठेई उजाड रा ठूठ ख्वडा री स सू ऊंची डाल प मच प माव
माथे मडा वचि ज्यू तात भाव वरतो वागलो, वठेई हुवा रे हय लारे वादळा म
तिरतो वागला तो वठेई बीनली व टेलीफू रा तारा प हीदो हीदता वागला री
जान जीया मवाम मिलनी प उस्तरो धिम बीया विणी चीज म चाच विसतो
वागलो । हें ऊ बडभागी वागला री मुद्रावा री प्रमसा वरता बीया जीया आपरो
वेंडो छुवायो । लान घाल मताल वरया ही म्हारे मूढ मगज म आ वात न घठी
व ओ अतरी दूर विदेस मू वागला रा चितराम लेबा न आपणा मुलक म ही वयू
आयो, अश्या प्रवृत्ति पूजक मुस्विल मू ही मिल ।

जतर भतर वामण वरणिग्या रे ताई ही वागला घणा मेहताऊ है, वागला रे
माध्यम मू मसाण सवे, मारव मथा रो प्रयोग करे, आत्मावा रो वदळाव करे ।
वरम फूटा वागला घुराफाती कागला वे ई ऊचा दरजा री नीची गान्या
रा जलमदाता ही वागना है—वेई औप्याण ही आं सू मुशोभित है, बी न की मिस
दिन म दो चार वर हरेव रा मूडा सू चावे रामनाम न नीमरे पण वागला रो
नांव तो नीसरे ही है । जे सरखार रा वम री वात हुवे ता भारत म एक वागि-
स्तान यारो ही घणा देणो चावे । सलीमा हाला ने भूल्या इ रोख री सदगति न
वहै सवे, व अश्या अश्या कागलावादी गीत लिख्या व जग चावा होगा—'भूठ बोले
बीवा वाटे, वाले बीवे से डरियो, म मीके चली जाऊगी तुम देखत रह्यो' । अब जाप
ही वही वूड बोल्णिग्या ने वागलो वाटे जो वश्यी किताब मे लिख्यो है सलीमा

हाना री ई सूभू भूभू, अर मिट्ठी पत्रड, जर नुवी वापना री जतरी बटाई करी जावे कम है ।

वाळा वाळा सयी किमन जी रा साळा, सूर्याम खल वाली कामरी चढत न द्जो रग, अ वाळा वागला अश्या पत्रवा रगहाळा है व लखम पीयम मनलाष्ट पचामा सात्रण रगड हाको टीनापोल म डवाळा दघो पण आ वो रग हळको न पडे । आज रा जन जीवण जग जीवण री मगरी सफरता वाळाधन, वाळामन, वाळा कारनामा अथात वागलापण न हीज है । म्हारी ई जतरी वाँव वाँव रा अतरा हीज सार ह व जा बीसवी सदी र जत जर इक्कीसवी सदी रे जलम रा सधि जुग वागलावाद रो हीज जुग ह जे आपन जमाना गल चाल र जिनगाणी म सफरता प्राप्त करणी हुव प्रगति करणो चावो तो वागलावाद रा समथक वणा, आ रा गुणा न अपणाओ द मे ही बह्याण है ई मे ही उत्थान । □

शिक्षा रो मारजा जुग

सावर दइया

भारत रा प्रधानमंत्री जद नुवी शिक्षा नीति लागू करण री बात करी तद म्हने की नुवादो कानी लखाया । शिक्षा म आमूळ चूळ बदळाव री बात वरमा मू चाल पण जोग री बात कें आता ताई मूळ अर चूळ ग पुरमोज ई बोनी लाघ्या । काई ठा लाड मवाल कुण सो जाळ मूथम्यो क आळा आछा विद्वान वरमा री उछळ कुद पछ ई बी जाळ मू मुगत नी हुय सक्या ।

नुवी शिक्षा नीति लागू करण आळा न म्है म्हार जुग री शिक्षा सम्बधी बेई बाता बतावणी चावू बदाच की काम री बात हाथ लाग । जून वगत री भूला भळ नी हुव ।

म्हार जमाने मे मास्टर बोनी हुवता । बी वगत मारजा हुया वरता । आपर देवण तातर म्है वान गुन्जी तया वरता । हर अेक मारजा रो आपरो यारो रानो । यारो ठसको ठरको । मंगा री आपो आप री पोसवाळ । म्हार जुग र मारजावा रा काम तो उल्लेखण जोग है ई, उणा रा ताव ई शिला लेग्ना री शोभा बधावण जोगा ई ममभो—भाड्या मारजा, लवरिया मारजा, छी छी मारजा पछिया मारजा, सप्त मारजा रोवणिया मारजा, विगतिया मारजा, भंसिया मारजा, घेटिया मारजा । पूरी फेहरिस्त लिखण नै बठू तो विष्णु सहस्रनाम दा अेक नुवो 'मारजा सहस्र नामो' ण सकै ।

म्है मग मू पत्नी रोवणिया मारजा री पोसवाळ गयो । उणा री भणावण गत देखता म्है अज ताई आ बोनी समझ सकयो क उणा रो ताव रोवणिया मारजा क्यू हो ? ब तो म्हा मंगा न दिन भर रोवाया वरता । बूट कूट र मूज कर न्हासता । विणी पट्टाड मे जे अेक गळती हुवती तो गुद्दी भाल र पूरा गिण र पाच ठोत्रा मारता । उणा र ठोला रो ई पुझ प्रताप है कें म्है छोटी मोटी गुणा अज ताई जवाती कर सकू । गिया क तीग गळत्या रा पद्रह टाता । तीग पाग पद्रह । गुणा

पुग्ना हुयगी । गणित र दूज सवालानां मे अेक मण रो लकडो, चीन रत्ती-रत्ती रोज खाव अेक मकडो बोलो, कित्त दिना म खासी पूरो लकडो । अडा सवाल ना ता वा दिना म्हार भेज मे वठवा अर ना अब वठ । वी मकड री हाजमा शक्ति जर दाता री मजवूती ई शोध खोज रो विषय है । इण र अलावा आ खोज भी जरूरी है क वा दिना कुण कुण सी कम्पनिया 'पचनाल' अर 'वज्जदती' बणाया बेच्या करती ।

रोवणिया मारजा म्हान जित्त रोवाया, जे वा आमुवा न भेळा करवा हुवता तो अेक छोटो-मोटो समदर वण जावतो । उणा र मुक्का अर लाता नू म्हा रा जाधिया जाला हो जावता । म्है धूजता रवता अर व आपरी मूछा फडकावता बोलता—'किसो'क मजो आयो वेटा ।

रोवणिया मारजा र मज री महिमा ई यारी ही । वा दिना री याद आवे तो जज ई ह खडा हुव । म्है दाव सू कह सकू क नुवी शिक्षा मे जडी रोमाचक वाता री कोई गुजाइश ई कोनी ।

भैसिया मारजा री पासवाळ मे मुक्का लात ठोला घण्पड कोनी हा । व दण्ड री दिशा मे नित्त नुवा प्रयोग करता । उणा री आग्या अर मूछा देख र चम्बळ घाटी रा वेताज चादशाह याद आद आव । व म्हान बुचकार र आपर वन बुलावता—जाव र लाडसर । पछ हाथ भालता । हाथ आपर हाथ मे लेव'र जोर नू पीचता । म्हारो जी निकळू निकळू हुवतो अर व मुळक वो करता । इ'न म्हारी जारया सू आसू भरता अर वि'न सू अ मीठा बोल सुणीजता—क्या अब ठा पडी नी ।

कदई कदई सागीटी ठा घालण खातर आगळ्या विच्च पेंसिल दाव र पछ हाथ पीचता । व म्हान मुर्गो बणावता । कुर्सी बणावता । हवाई जहाज बणावता । ओ तो म्हार वडेरा री पुत्र ई समभो क म्है अज ताई मिनखा जूण म हू । नीतर काई ठा कद रो ई मुर्गो का कुर्सी बणग्यो हुवतो ।

वी जमान र मारजावा रो जेक ई मूळ मत्र हो—चाटी कर चम चम विद्या आव घम घम । ई मत्र री घर गळी तकात मे इत्ती पठ ही क घर जाय र मारजा री चुगली करण री हिम्मत ई कोनी हुवती । जे कद ई आ भूल करता ता वात पूरी हुया पैली ज तडाक देणी थाप रो प्रमाद मिलतो । मूळ पोसवाळ म अर ब्याज घरा । ब्याज र डर सू चुसकारा ई कोनी करता ।

घेटिया मारजा आपर चेला न नीच कुना मघा दिना बुलावता ई कोनी । म्हारी गळती हुवती तो व दोलडा विशेषण वापरता । कवण री जरूरत कोनी क अ विशेषण मम्म चच्च सू शुरु हुवता । मूड म हुया व कवता—मारजा री गाळ लाडू रा घाळ । जित्त पासवाळ न छूटती अ लाडू थाल भर भर खावण न मिलता ।

म्हने आज आम्हो हुये वं अग्नेजा र जुम री कहाणी निगणिया इतिहास
 कार ठेठ जूने जुग र अघवार जुग अर पाम्माण जुग री वाता तो णाड हुमियारी साग
 वरी, पण गुरु प्रह्ला गुरु महेश्वरा रं मार जा' अर टायरा रं 'मार-ला' जुग
 यावत अंन नपज ई नयू बोनी निरया ?

म्हारं अंन भायल इण रा उषळा दिया ता ममगरी म ई हो पण म्हन माचो
 सागं । उण वयो-आ लागं रा जाणिया तो जापा मू ई रत्ता गीला हुयोडा है ।
 जे वाई आपा जिगो पीटो तिगण री काणिण वर ता पन री निव ठम जावै ।
 गौर ।

दश आजाद हुया । देशी रजवाडा दा ज मारजावा री पामवाळा रो
 मफायो हुयग्या । वेई लूठा राजा महाराजा अम जेल जे वा जेम पी वण र आपरी
 सत्ता भ्रम पूरो वरण लाग्या टीव बियाई ई कोई मारजा चुगला भगत वण र शिक्षा
 री नुची दुयाना गाल र बठग्या । इक्क दुक्कं मारजावा म आ अकरन बापरी ।
 बाकी घणगणत तो आपर जमान रा गीत गा गा र नय जमान न रो रो र
 गगावासी हुयग्या ।

चात रो निचोड निवाळा ता आ बात साम आये व मारजा जुग म मार' माथ
 अणूता ई जोर हो । ठण्ड दिमाग मू साचा गो परतव लतावै रं हाल आपा न मार
 मू मुगती मिनी बानी । मार रा रूप ता बदळघा जिवा बदळघा ई मार चौतरपी
 यारी हुयगी । मारजा ता चवड घाड मारता, अब मारणिया अदीठ रव । घरती
 माथ रवणिया न आगमान सू मारणिया मारजा पनपग्या । साम लेवता ई डर
 लाग । वाई टा ज मारगा वट वाई पुरस देव ।



ईरस्या

छाजू ताल जांगिड

दूगर मिनख री उन्नति रा परनाम रंग'र जो मिनख र काळज माय जळत रो बीज उग जल् ईरम्या री जल्म हुव । मिनख री कमजोरी रा जेक माचा तमूना ईरम्या है । अणादि काल म मिनख र हिरण्य र माय ईरम्या री जगती भक्वती रहैवती जाई है । राजा दगारथ जल् राम रा तिनत्र करण लाग्या जद मथरा री काळी वरतूता सै कवेयो र काळज म ईरम्या रा भिडवाव द्रुयो जिर कारण राम न बनवामी वणनू पडया । ना भाग राजा जद अम्बरीश री राज तिनत्र करण लाग्या जद राणी मुक्केशी कटारी ग्याय कर पछाड गायगी ।

कौरवा र माथ ईरम्या चढगी जद वापडा पाण्वा न सूई री नाज परावर जमी नी मिली । वान एवात वाम म रहणू पडयो । विद्या निधान होय कर राजा भाज जद उज्जन नगरी र माय प्रवेश करघा तो मुज दव राजा र हिरण्य म जळत हुई जिर कारण जल्लात नै राजा भोज र मारण हाळो दूकम दूयो । उतानपाट राजा री राणी र काळज म इरस्या बणी जल् ध्रुव न अळगाव मियो ।

जेक राजा रो परताप दूसरो राजा महण नी कर मक ता बीर खोनाश री घारया करण लाग ज्याव । विध्वंस र कारण सिरजणहार री रचेडी माया रा विनाश हा ज्याव । बादला री घटाटाप म जद मघ गरजना कर जद मिह जोर म गरजना कर । थो जगळ रो राजा या बात सोच—मेर म ठाडा राजा कुण है जो अतरी ठाडी गरजना कर । ई जमाना र माय एक देश रो विकास दूमरा देश न नी सुहाव । विकास री ईरस्या र कारण दूसर देश पर परमाणु बम गेरण री बात सोच ।

इरस्या रो दूमरो नाम डाह बोल्यो ज्याव । जद ईरम्या रो जलम हुव जद मिनख र काळज म दूमर मिनख र विनाश री बात साचीजे । बोटा मा मिनख पराया सुग हुबळा हुव । व जाप कमजोर हुव । जीवण म आग बढवा हाळी बात वा र उम कीनी हुव । व दूमरा रो सुख देख र पतळा हुव ।

येन मे खिलाइया रो ईरम्या रा रूप चीडे घाड टिय । एक धावन जल आग निवळ ज्याव जद दूमरो बीरी टाग पकड लव । फुटवान रा खल म एक मिनाडी दूमर खिलाडी न अटगी लगा देव ।

ई जमाना रें माय ईरम्या रा बिबगळ रूप देगण म जाव । उता न नेता, भाई नै भाई, सत्ताधागी न सत्ताधारी, विद्यार्थी न विद्यार्थी धरमाचारी न धरमाचारी गरीब न अमीर नी मुहाव । ई ईरम्या र कारण कुरमी री खातर खीवा ताणी हुव ।

ईरम्या मिनख री हिरद री गदगी रो नमूना ह । ईरम्या रासगिया मिनख भी सुख स नी जी सत्र । दूसरें मिनख न मात दण माग हजार बात सोचणी पड । जद बीर काळा वाग्नामा री पोल खुळ ज्याव जद नमाज र माय बीरी वदजती हुज्याव । जद ईरम्या रा परवदा मिनख म हा ज्याव ता मिनख क चान रो हरण हुज्याव । ईरम्या र कारण मिया आपरी प्रेमिका र कारण आपरी धमपत्नी रो भी सून कर देव । ईरम्या अपण आप भी उपज है अर दूमर मिनख र लमाण मिखाण से भी पदा हुव । मुद रो विवेक नी हुव बी जाल्मी पर दूमरा रा परभाव जती हुव ।

आदमी री उन्नति र खातर प्रतिस्पर्धा रा रास्तो धार्यो मायो ज्याव । उन्नति री लीड मे दूमर मे आग निवळणू चाहिये । हौड र तरीके मे आग बरणा चाहिये ।

ईरम्या रो जल करण सारू मिनख मिनख र माय प्रेम हुवणा चाहिये । सहण शीनता राखणी चाहिये । दूसरा री उन्नति देखार हुलसणू चाहिये । एक मिनख न दूसरा मिनख रो मदगार हुणा चाहिये । कपडा न जिया कीडो ला ज्याव बया आदमी न या ईरम्या ला ज्याव । ईरम्या र कारण जाल्मी रो पतन हो ज्याव । ईरम्या री जगनी म आल्मी भुज्म ज्याव । □

पिणघट

सोहनलाल प्रजापति

गाँवा म पिणघट रो घणा महत्त्व है । सरा मे पाणी त्याणन घरऊ बार का जाणू पड नी । टूटचा घर घर लागडी है । पण गावा मे तालाब ऊँ कुवै बाव डचा ऊँ अर मावजनिक टूटचा ऊँ घडा भर भर'र पाणी त्याणा पड । पिणघट गावाँ मे एक घणा महताऊ स्थान है । पाणी त्याणू गाव र जीवन रो एक महताऊ काम है । जक गाँव म मीठ पाणी नी व्यवस्था नी हुव या पाणी त्याणो दोरो हुव वी गाव म कोई आपरी वेटी ब्याणा को चावनी । गावा म पाणा त्याण रो काम तुगाया कर । पाणी त्याण वान्ते तुगाया न घणो कष्ट सणो पड । पाणी 'जीवन' हे । इ विद्या काम को चातनी । कई कई ठोडा कोसा ऊँ पाणी त्याणू पड । ईयावर ठोडा मिर घडिये ऊँ तगायेड पाणी न जीवण ऊँ प्यारा राखणू पड । घी दूध मिल ज्याय पण पाणी को मिलनी ?

कइ जग्या पाणी र वास्त लुगाया न घणा कष्ट सणो पड । पत्नी विरग्या हुता इ आदमी हल्लोतियो करण वास्त खेता म चत्या जाव । कई निना ताई खेता म ही रव । कुओ व द हुज्याय—कुओ वुण जोत ? टाबर टोली सगळा काम लाग ज्याय । खेत गाँव ऊँ दूर हुव । दिन उगताई लुगाया भातो लेर खेत जाव । आवे दिन खेत मे सूड अलसांठ कर । जाथण रा घर धिराणी सिर पर त्सारियो खाक म छोरो अर हाथ म टागडिये री जेवडी पकडचा खा ती खा ती घर आव । वा त्सारियो उतार'र पत्नीपोत पळीण्ड म जाव । घडा सगळा खाली । छोरो पाणी पाणी कर आप तीस्या मर । एक घड म थोडा पाणी छाड र गई ही । उपर परण्डियो दे र गई ही पण लार ऊँ बकरडचा पीगी । छोरे न रोवतो छोड'र घडो अर डोल ररी ले'र कुव पर जाव । साठी र कुव मे ऊँ मुडक्या मुडक्या डोल खींच । घणो दोरो घडो भरीज । भूण री चर् र चर र री उबाज सुण'र एक डोकरी रखाण्डो मगनियो ते र भागी जाव 'धीनणी डोल खोत्री मत । एव मगलिया म्हारो ही

भरो । गगळा ह्यातियो भरण र तया गया । तय वणाण । ही पाता कानी ? ह
ता उडीक ही क कोई आव ?'

बीनणी आप तीस्या भर, छारी गुवाड म गुडालपा चालता चालता राव,
टागडियो बायळ म अरडाव पण गाव रो मट्याग वगण जाग हुन । गाव म जपणायत
ह्य । बीनणी मुडवया मुडवया टाल गीच'र डावरी रो मगनिया भर र पली
कै'गाव । डावरी पण धीम धीम धरती 'गल'र राजी हुय र साच म न ह आशीप
दती जाव, 'जुग-जुग जोआ । सात घेटा री मा हुओ । धणी री गुग देगो ।

साधारण दिना पाणी न्याण वास्त लुगायाँ रा भूनरा पिणघट पर पूग ।
'यारी यारी जात्या रा यारा यारा भूलरा । पिणघट पर भू-प्रस्था न आजादी
कै वाता करण रो मौका मिल । म लुगायाँ गाम कै पाणी त्याण न पिणघट जाव ।
रग तिरगी वेग भूपा म लुगायाँ रा भूनरा देगण जाग अर वगण जाग हुव ।
पिणघट पर लुगायाँ पीर-सासर री, गण गाठरी, कपड नत्त री, अडीस पडोम
री सुल-दु म री आच्छी भूण्डो गुन र वाता कर । घर रा भेद पिणघट पर सुल ।
सामुआ र सुभाव री समीणा पिणघट पर हुव । नूवी बीनणघा नणदा र करड
सुभाव री चचा पिणघट पर कर । लडाई भगड, इस्व प्रेम री रामायण पिणघट
पर सुल ।

लुगायाँ र धीरज अर तिरोध री परीणा पिणघट पर ही हुव । एव लुगाई
आपर टावर न घर रोवता छोड'र आई है । वेगकै वगी घडो भर'र घर जाणू चाव ।
यारी आयाँ त्रिया ही स कै पेनी घडो भरणा चाव । आ वात दूसरी लुगाया कियाँ
मण कर ? आपरा इधकार छोडणा कुण चाव ? इ हाडा होड म कदई कदई
पिणघट पर जग मच जाव । घडा कै घडा टकराण कै घडा री ठीनरघाँ उछळ ।
घडा फूटणा तो साधारण वात ह । कणई कणई सिर फूटण री नीवत जा ज्याय ।
पिणघट पर लुगायाँ रा लडाई भगडो देखण अर सुणण जाग हुव है । लडाइ-भगड म
स पलमा चोड आ जाव । पीनिया तन वुरै कारनामा रो चिटठो सुणण जाग हुव है ।
लुगाया रा पाणा मण्ड ज्याय है । पिणघट री लुगायाँ री लडाई महाभारत कै कम
को हुवनी । महाभारत र जुध ह पली श्री कृष्ण भगवान कौरवाँ पाटवा न
समभाण री चेष्टा ता करी ही । पण पिणघट री लडाई म बीच वचाव अर समभाण-
बुभाण री चेष्टा करण री हिंमत कोई को करै नी । म वळती जाग म पूळा
नास'र समाशा देखणू चाव । पुराण जमान म लुगाया भूड वडरा रो काण कायणे
राख्या करती । पण आज काल भूडा वडरा बीनण्याँ रा काण कायदा राख ह ।
लडाई भगडा हुताई तिसकता दीव । लुगायाँ गाळ्या टिक्या पछ थक जणा ही रक
है । शरम आळी अर घर रा र आक्स कै टरण आळी लुगाया वगी हीज मदान
छोड'र भाजती दीस ।

पिणघट पर समाज रा कई रीति रिवाज सम्पन्न हुवै । मळा खळा पिणघट पर भरीज । मरवा पछ थद्धाजलि पिणघट पर ही दिरीज । जळवा पूजण रा एक महताऊ रिवाज है । पिणघट पर ही जळवा पूजीज । जकी लुगाई रँ गीगला हुव वा नाम करण सस्कार र वाड दिना पछ, जच्चा वण'र छोटी सो घडो सिर पर ऊच र सायण्या साग गाज वाज ऊँ जळवा पूजण वास्ते पिणघट पर जाव । जच्चा राणी नूवा कपडा पर र होळ हाळ बीच म चाल । जेड छडे दूसरी लुगायाँ गीत गावती चाल । गावा म जा रिवाज है क जच्चा जळवा पूजण र पछे ही घर रा दूजो काम करणू सरू कर ।

वूढ वऱ्णे र मरण र वाद वारवे तिन बीन पिणघट पर थद्धाजलि दिरीज । वारवें दिन औसर हुव । आसर मे मगळा र जीमण र वाद कोठयार वाद कर र भाई बधु वटा पोता सगा सम्ब धी मिल'र कुव पर जाव । सगळा मिल'र कुव ऊँ चडस खीच अर मृतात्मा र थद्धाजलि देव । गणगौर रो त्योहार मनाण र वाद छोरघा मिल र गणगौर न कुव म धमकावे ।

नूवी बीनणी मुक्ळावा लर आव । नूवी बीनणी न साग ले र नणटा पिणघट पाणी त्याण न जाणा एउ महताऊ काम समझ । नूवी बीनणा र आवता ही बास गुवाडी री ठारघा घेरा घालणा सरू कर दव । नणटा बीनणी ऊँ पाणी त्याण पिणघट पर चालण री मनुहार कर । नूवी बीनणी ई मिस वार निक्ळणू चाव । नूवी बीनणी आपरा बुगचिया साल र मात्या जडी भालरदार पळपळाट करती नूवी इंडूणी निक्ळा । मुक्ळाव म दूसरी चीजा र साथे साथे नूवी वणामडी इंडूणी जरूर त्याव । इंडूणी एव नही, भात भात री कई इंडूण्या त्याव । नितरा नूवी इंडूणी ल र पाणी न्यावण न जाव । मात्यारी भालरदार वणडी इंडूणी पर छोटा मा घटा मिर पर ल'र जद नूवी बीनणी नणदा र भूतर म चाल ता सुरग री अपमरा ही पाणी भर । भूतर रबीच म नूवी बीनणी र मिर र तार खान ताई बनारी अर मात्या जडी झालर पळपळाट कर । भालर र नीच छोटा छाटा रग बिरगा पूदा हालता घणा चागा लाग । इंडूणी री पळपळाट करती भालर ग रा ध्यान रीच लव । इंडूणी र पळक ऊँ टा पड जाय क आ मुक्ळाव आयडी नूवी बीनणी है । इयातर मौव कई छला विया वाम ही रडिया हाय म ल र पिणघट र आम पाग घूमण रो नाटक कर । ज तळाव हुवै ता तळाव री पाळ पर छता री जुगळी भूतर न मिरणण वास्त जरूर पूग जाय ।

कुव र पिणघट रो बात वारी हो हुव है । कई कई गाँव म कुव री घाट म घटा भरणा पड है । बारिया इयानर मौव न जडीक्या रव । नूवी बीनणी रा घटा नर बारिया वता भर । उदम कुव म पाछा उगार र भरयो घटा उठा र ताजा भरती, मू केर र जगी नूवा बीनणी र मिर पर ऊचा दव । नणटा रा घटा

आधा रं जावं । नणटा दूगर चडम न-जडीर । जन वीनणी घडो लियाँ उबी रवं । इयालर मौके पर जद कोई जोध-जुवान वीनणी दा घड त्याव ताँ और ही देवण जोग घात हुव । एक घडो या आप ऊँच लव । दूसरा घडा ऊँचाणा एक चुनौती रा रूप हुवं । घड महित ऊँची वीनणी र घड पर दूमरा घडो ऊँचाणा मड । दूसरा घडो ऊँचाणा आगान रा हुवनी । जाध-जुवान वीनणी एक घडो ऊँच'र उबी रवे । दूमरो घडो पहल घड पर रतवाण वास्त आपर देवर खानी इशारा कर । देवर अगर कमजार हुव तो वीरी हालत हारड जोधा सी हुज्याव । अगर तगडो जुवान हुव ताँ एक हाथ ऊँ घडो उठा र भाजाई र मिर पर ऊँचे ड घड पर भट धर दे । देवर दो घड जाण र तोरा ऊँचाव ताकि भाभी री कमर लचक । इयालर मौके भाभी देवर न तरी खाटी सुणण ऊँ को चुक नी । तो घड ल'र कमर लचकाती जावती जोध जुवान वीनणी पर सगळा री निजरा टिकणी स्वाभाविक ही है । वीनणी दा घड ले र घर पूग । जठजी न दख र मू फेर र ऊँची रवं । जठजी लपक र ऊपर रा घडा उतार । वणई वणई ऊपरलो घडो उतारण वास्त घर बोर्ड नो हुवनी । वीनणी अठीन उठीन देव । टिचवारना देव । पण काई का आवनी । वीनणी आपरा दानू हाथ ऊपर कर । ऊपरल घड न टटोळ । जागळया पर घड न ठरा'र सावधानी ऊँ उतार'र डोळी पर मेल देव । पछ दूसरा घडो उतार ।

पिणघट मेळरी जग्या हुव । दिन भर मेळी लाग्येडी रवे । त्याहारा रा मळा पिणघट पर ही लाग । सावण तीज, भादूड री तीज, गिणघौर, भलभूलणी प्यारस, रा मेळा पिणघट पर ही हुया कर । सावण तीज जर गिणघौर रे मळ म पिणघट पर प्रेम रस रमीला गीत सुणताइ प्रेमी जाडा र दिला र सागर मे प्रेम री हिनीरा उछाळा मारण नाग । इ मौके छारया छापराचा रा गीत यारा हुव । जुवान लुगाया रा गीत 'यारा हुव । यार यार भूलरा म भात भात रा गीत आस पाम र वातावरण म मस्ती जर सिणमार रस भर देव । यारी 'यारी जाति री लुगाया री गीता री राग, यारी 'यारी हुव । लोक गीता री धुन जाति री पहचाण हुव । आ परपरा आप आप री सस्वृति री घरोहर है ।

कई कई ठोडा सत्रात (मकर सत्राति) र तिन पिणघट पर लुगाया रो मळा मड । 'यार 'यार मोहन री वीनण्या आप आपरी सामुआ न साग ल र गीत गाती पिणघट पर जाव । पिणघट पर वीनण्या आप आप री सामुआ न नूवा वस (वस्त) पराय । इ दिन वूढी बडर्या री पूछ हुन । धनवान लागा र तबक म आ रिवाज घणा है ।

'पिणघट' नाम घणा प्यारा है । पिणघट रा सम्ब ध पाणी ऊ ह । पाणी ही 'जीवन है । जीवन' जठ मिल बी रा महत्त्व क्या का हुवनी ? □

मिनख रो वलतो समै

नानुराम सस्कर्ता

ससार रा परिवतनसीळ प्रजापत सम है। इय नें लोग काळ, सम, दिनमान, विरिया पुठ, जुम जमाना, वखत जिसा घणा नावा सू जाणें पचाण अर वतळाव। या चालतो चाको तथा अजली रा नीर वूर काळ कहीज। इय री छावली छटा जोरा सारा दौडती भाजती ऊपड। बदळत वखत साग लोगा री हरक चीज रो रग ढग बदळ ज्याव सम र साथ घारा री जगा ड'री अर डरया री जगा लूठा घोरा नजर जाव। दरियावा री जगा मदान बण भर नदयां र लाप ताल ललाव। जकी जगा कदेही गग्धर नदी वैवती उव जगा सफा सूकां वजड वजरी रणकासू बोढीज्योडो डाव देखीज्या तथा हमें बो खेतर गळे राज स्थान नहर सू ल लारयो है। सम एक सो नही जाव, भारी फोर बदळ कर जद ही तो कवणा पडै के सम वडो बळवान।

मिनख रा दिनमान सम र साथ चाल, बदळता हाल कदी खेव सो नी वीत। इय जगत म जलम्या है उव न सुत ही मिलसी अर दु ग ही भागणो हासी। जमार रा मग खारा मीठा फल बराबर खाणा पडसी। जे काई चावें के मन मदीव सुख ही सुग मिल अर दु र दाव कदी नी भागणा पड तो उवरी आ मनसा कदमनाळ पूरी हाव नहीं। सदीना टिक्या सुग मिलणो ता इण मसार म डाढो दारा नहा जावक असम्भव कारो ह। जलम र नार मोत, सजाग लग विजाग, जीत पाछ हार गुग तथा दु ग, फूल म काटा, सम्पनपणा विपनपणा अर मफ तता नार असफतता ममार री इधका बघकी बत्ताई है। जठ ब्याह ही हव अर अठ मोत ही। इय तिन दूहा बण बाराती, चट्टे दिग घुर निमाण इव तिन जाय जगत विच डेरा, काया जळे ममाण, मय तिन हुव न जेव समान। राग, रात्र बराबर र नडा मान। तिन नाच गाण हव मठ बूव कांम गय। अमीरा रा ठाठ है गरावा रा पाट है चढ़ाय उतार, दास्त-मुम्मण, नसी अर बनी तुनियां

म धनरा पागा रा पागा रंग । पादा-माया पावणी १ । न वाइ गूर १ वापर
 गैग काम सम र बदनन पाग ह्य । शि दगा पीडा डालर नी बठ । जे वाई
 मिनग चार्य के म्हारा मारा जमारी अेव ही जाणद धार म बीत-या उव री मोटी
 भूत ह । जगती एव तमागा जाणा । पलव म की अर पळन म वई । वदे मारी
 गडक माध सूना बडनू रगडणा वद निवार २ पळग सुग साथ पाडा । वद भूगडा
 मिन नी, वदे मीरो पुष्टी भार्ये त्ही । वद तीर पत्रका वदे सूना टुवडा । वने
 पाटपा पुराणा चीरडा पळेटा, वद मुहणी टरीवाटन रा वपडा परानही, पाछा
 वगावा । वद गुण्यारी ग्यान गाढी वाता गुणा वद वारू तारिया री गदी गाळया
 गुणा । वदे मीठी सितार री गूज रा रस वदे मारी हाहावार री गस । वद साणा
 छडछडीना जुवान वदे जूजळारा छाण्याश सा मूढा, सळ भरियाडा मद्दा मरीर ।
 वद चंवररी री तळ-पळ वद तित्तारी आग रा अडाळ जाग । वठ ही मगळ
 गीत गीरा, वठ ही रामनाम सत्त वाता । तिमि किसी वात मिणावा । दुनिया री
 दोलडी दसा चान । इय हालत माथ जापणा त्रिजू दिन अेनसा नी बीतता दस'र
 चुप रंवणा ही चांगो है । वारी चित्ता वाई काम री ? सैग वाता भगवान री
 मरजी मुजव चाल । वीरी ही जार तट नही । माटा माटा राजा-महाराजावा,
 सत मृता अर रिसि-मुया रा दिन ही सदीव सारीसा नी बीटया तो मामूली
 मिनग किम वाग री मूळी हव । सीता, साप्रती अर दमयति जडी देव्या तथा
 हरिश्चद्र मोरध्वज, रामचद्र जिता मोनळा म्हापुरसा री जिनडघा ही वपत री
 विपत्ता म घणी भूली ह ता साधारण लागी री विसात ही किसी । इय वास्त
 आदमी न आपतवान म वदे ही निरास नी हावणो चाय । दिनमान सुत-दु स
 रा चावा है । चाव रा अेन भाग ऊवा जाव जेद दूजो भाग हैठ आव । पण ऊपर
 नीच री चाल सू चावा चालता ही जाव । रूमीला वृत्त ठुरिय वग, राजाना दुस
 रा दिन ही नी रव, सुण जाणद रा अवमर ही तो भाज्या आव । फागण री उडती
 पाफ अर रितुराज, लूवारा लपका तथा वरसाळ री व्हार आग लार आव जाव ।
 तिल डूव पत्थर तिर जपणी अपणी वार' । मिनस री समभदारी रा सार या ही ह
 के सम वडा वळवान है, जका पळ भर ही ठम नही उचळ पुथळ उडतो दव्या
 जाव । इय चचळ चाळ वाळ सम वास्त ठीक ग्यान है के धीरज न वदे नी
 द्योडयो जाय । मिनस न आछ सम रो गुमान नी वरणा तथा भगवान न वदी नी
 मुनाथा । खाटा दिना म घणा दुस विमूरणा सू घत्रडाया नी जाव । सुख दु स
 चालता रव, वठ ही टिक नही । हर किसी हातत म आत्म मगन रवणा ही मिनस
 जमार रा सार है । जड'र चाल्या जका भादरा रा सदा हाथ पाधरा हुया ह ।

सम वडी, नर क्या वडा ? सम वडी वळवान
 वावा लूटी गोप-या, वे इ अरजणवे इ चाण ।

कवितावां

क्यू घाव हाचळा घालो हो

ए वो कमल

समभादयो मोट लागो न,
मत आळ करो थे माटी सू ।
क्यू घाव हाचळा घालो हो
दूध पियो जिण छाती सू ।

विज्ञानी रापस धरती रा
रजवट रो रगत निचोड है ।
सदिया सू निपजी मिनखा री
लाखीणी साख भिभोड है ।
अठ मानखो पट भरण न
कर लडाई बाटी सू ।
समभादया माट लोगा न,
मत आळ करो थे माटी सू ।

जठ दागला पूत धरा पर
कर दोगलो हेत धरा सू ।
वै वूस लजाव मायड री,
अर उजाडै, खेत धरा सू ।
व नाच नचाव मिनखा न
ई राजनीति री टाटी सू ।
समभादया मोट लोगा न,
मत आळ करो थे माटी सू ।

भूखो तिससो हीण बापडो,
मिनख हेत री आस पळ ।
मोटा मोटा पट आफर्या,
हीण मानखे आख वळ ।
व रोज मिटाव खोज मिनख रा,
लाय लडाई लाठी सू ।
समभादया मोट लोगा न
मत आळ करो थे माटी सू ।

वै राज मिटाव मुस्ताना,
 मागूस मुळातें हाठा री ।
 चीड धाड वर रग्याळी
 वारूद भर्याड वाठा री ।
 भै भीत वर व मिनरा न,
 राज मीत री घाटी मू ।
 समभादया भाटें लाग़ा न
 मत आळ वरो थ माटी सू ।
 वयू घाव हाचळा घाला हा
 दूध पिया जिण छाती मू ।



एक्कीसवो सैकौ नै म्हारी ढाणी

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

देख देख म्हारा मीत ।
 दौडती आय रहघो
 इक्कीसवा सैकौ है
 ग्यान विग्यान
 नै तकनीकी विकास रा
 जिण वनै

अणमाप ठेको है ।

फूलो, पोमावो
 कम्प्यूटर जुग है ।
 मिनख रोबाट तक बध है ।
 काई हुयो
 जो म्हारी ढाणी र मिनख न
 भीठ पाणी रो बडिघो
 न दा जूण रोटी ई
 कोनी सध है ।



सोरण लाग्या-
 आ वात बुण र सामे हे
 जान जात त पाळे
 गोमू मडगडा
 आपणी जमा लाग्या हे
 एव पूद्य रिताव
 दूजा ताट हिलायें
 एव भीने तो दूजो टांठ
 एव काटे तो दूजा डाटें
 अब बुण मू
 सावधान रणो
 बुण त वाई वेणो
 हाय भटको लाया
 जाण विजली रो तरत लाग्या
 पाछो मुठ अर
 जद जावण लाग्या
 अलसेसियन भोंवता पूछण लाग्यो
 बुण मू डर अर जावो हो
 वाई जकी मू या म्हारे मू
 म्है बोल्हो वाई परव नी पडे
 जकी व्हे या व्हे जनी रा वाप ।



गाँव

जितेद्र शकर बजाड

पणघट, ढाणी बाडा अर घर
 तुवां पुराणां छप्पर छप्पर
 अर पीपळ री छाँव ।
 हिये भावणो जग मुहावणा ओ छ म्हारो गाव ॥
 मायां बायां पाणी लाव ।

जिण री लाठी
 उण री भैस
 वेस
 वेम तो मीत गरघट प
 कवाम नी तर
 पण अमली हजामत ता
 दूवान की पडवा प हाव है
 कारज तो जेन दिन को
 जलम भर रात्र है ।
 म्हारा गाव
 जूनो ढान है
 नी गाडा की पोल है
 जूनी भीता है, जूनी रीता है
 जाग्या तीज प याव की भरमार है
 मा राप
 गोद मू तो नीचे कोनी उतारे
 पण फेरा देवण ने तयार है ।
 म्हारे गाव म
 वमती ने
 बालपणे परणाई
 पाच वरस पला जाणो आई
 चौथी वार जलवा' पूज री है
 भाव वानी जावे
 ठड मू लगभग घूज री है
 पतवा ने जावती तो
 हिमाल सरीखी मोठी
 हाथी मरीखी भारी
 गलतिया कोनी दुहरावती
 जद पलो मदरम जावतो
 ता-दूजो जावतो
 वसती
 अस्पताल की भीत पे लाग्या
 पोस्टर ने कदी क ता वाचनी

'एवज लालो लाडलो
 आगणिये जाणद'
 अर कदी तो विचारती
 जीवन मे उतारती ।
 म्है चावू
 म्हारे जूने गाव म
 नूवी रोगनी लावू
 लकीर पीटता म्हारा गाव न जगावू
 हर आगणिये जाणद मनावू ।



गाँव री याद

हुकम चाद कान्त

साथीडा धाज म्हारो निमगकार
 बहुत दिना मू याद कर्यो है
 पूछ्यो है गाँव रो हात ।
 काई-काई बदळ्यो गाव रो
 काई काँ हाल मुणाल
 बचपन बदळ जवानी बणयो
 जवानी बणी बुढापा
 ति बदळी तो वा है नन्ही
 जपणे मीठ जळ मू आज भी
 गाव ने सीर्च है ।
 सँ तिन याद कर'र
 मनडो हो जावँ है उदास
 जद गाँव रा छोरा गरी
 जाधी रात ताई
 चाद री चान्नी म मेरता रहन्ता
 चन्ल गया
 रहन-गहन, गाण पाण

चान बनण
 मडव मू जुड र गाव
 णहर ताई पूग्या है
 गुरज री विरणां मू पला
 गाव रो सारा दूध
 शहर पूग जाव है—
 जीर काळा पाणी पी र
 दिन निवळ ह
 शहर री हवा
 फलगी है गाव म
 गळी—घर अर पडीस
 होग्या दूर
 नजरा बदळ गई
 नो मयी भूखी
 गाव री बहू
 बटी अर वेटा
 म प्रल गया
 बदळ गया गीत—गीत
 अर सीम
 छारा—छोरी रा खेल
 डोना—माह रा मेळ
 मिनस अय मिनस नी रहघा
 गाव री भट्टी मू निवळयो मोम रम
 तें टूब्या है गांव न
 वाता ही वाता मे
 चाल जाव है बद्क
 पुलिस
 नो मू हाथा मू अपणो काम
 कर चली जाव है—
 बालू रो वेटा
 जायो गहर मू
 णर कीडर
 व यवा मजदूरा न

कर'ण आजाद
 और एव दिन
 खुद ही होंग्यो आजाद
 फटी—फटी आग्या मू
 देह्या हो गाँव नै
 लटकतो बीकर मू
 पुलिस अर डाक्टर
 गाव रा चौधरी
 कुण आजाद, कुण व धवा
 गाँव रा मिनल
 मिनल नी रह्या ।
 गेग्यो है गाँव न
 बलास्वार
 आगजनी
 लूट
 जर
 गून
 गाव जब गाव नी शहर बणग्या
 आज मिनल रो
 ईमान धम
 उणग्यो है
 पमा
 गुल चावू रा पग दाई
 होग्या है गाँव रा मिनल
 जानमखोर ।



गम्भीर ममन्दर

सुरेन्द्र अचल

पाव्यां म तिगिज—
 अर मानती तग केव—

व वडो वो हुव-
 जको लेव नी,
 पण देव ई देव ।
 जिया समदर ।
 वित्तो महान
 वित्तो गम्भीर हुव समदर ।
 घणा ज गरो
 अणगिणती री लैरा
 देव आठू पार परा ।
 पण,
 गराई काई इण न ई कवीज-
 व' डूज जाव काई काळी धार-
 तो नी लादे ल्हाम भी ?
 व ढडे भी कठा ताइ ?
 आयर जाव हार ।
 वडप्पण काई दण न ई कव ।
 व' इत्तो पाणी हुवता
 नी पिलाय सव
 जेक घूट पाणी-
 विणी तिरम्या मिनख ने ।
 कदास
 भूले भटक पी लेव घूट काई
 तो हुज्याव जीव दारो-
 जावळ-त्रावळ ।
 जर पड जाव खायो पिया मगळा ?



आज री कविता
 अशोक कुमार दवे

कोई कव ओधी है कविता
 काई कवे लाम्बी है कविता

आज रँ सदम-री कानी कविता
 आम आदमी रो कोनी कविता
 जनवादी अर प्रगतिवादी
 छायावादी अर कलावादी
 परखे आप-आपरी कविता
 कथ्य/प्रतिबद्ध/सम्प्रेषण

सिणगार बिना

काई खास मकसद रो कोनी कविता
 कलात्मक/सजनात्मक वशिष्ट रो
 मन माय भाव कविता ।
 शिरप रो लापरवाही
 अर भूण्डा दरमाण रो
 नी भाव मन माय कविता ।
 आप आप रँ पिट्टूरी
 चोखी लाग कविता
 आ हीज है आज रो कविता' ।



विकाऊ लोग

तारासिंह

हाट लगी बिणजारा हाड
 बणगा धणा विकाऊ लाग
 नजर पसारधा भी नी लहाद
 अब तो ठेठ टिकाऊ लाग ।

गळा बेचद, गीत बेचदे
 आळयू बेच, प्रीत बेचद
 भासा बेच, भाव बेचद ।
 जुगां जुगां रो रीत बेचदे,
 य चीजां भी बेचण नाग्या
 जो नही र'गी निरण जाग ।

आग बरु वाण अरुद
 माग्गतिर निमाण बरुद
 अग बरु भेग बरु
 पोटे मूछपी ताण वनद ।
 मिन्या न बरुई वरु तात्तिया
 जण जण म फत्था राग ।

मततव सार पाळा भाग
 वा बी र वा बी र जाग
 व—मततव वनटाव वानी
 वयू बणगा विदराउ ताग ।

□

रविता

मोट्टम्मदसादोष

मीठा/ममोली/ममता रो
 सागो सदा सदा वास्त
 छूट ग्यो ।
 जिया जिया जी ग्या ।
 आपणी गळी रा ही
 कुचमादी खुरमडिया
 जुगनू न डागरा भेळ
 भेळ दियो
 बळद बणतो बणतो
 वापडो जुगनू डामीजम्या
 नाथीज्यो वानी ।
 अणचा थाई र सफा रान मू
 फड बजार ताई—फड बजार स
 सवजी मडी—कोट गेट
 अ'र दा पीरां ताई र
 समूच—सालम हलवे रा
 लूठी हावम ।
 गाया रा गुवाळ
 वाछडिया रो बली
 भूम—सूदं सासरा रा रिछपाल
 म्हारो जुगनू—
 एवन—खोरो वानी
 हुडी करणो अ'र दूकणा
 सरावण जाग—
 ना जागे लोगा रा वूनणा ।
 मात मू पैली कुण मरणा चाव
 हिम्मत हास्या समूच मानधे री
 पत जाव ।
 आपती नद काठी रा धणी
 फूटरा—फररा—मातरा—सुरगा
 रोवम मतरी सा
 दो—सीग
 थाया म अणूता करार

जा सज्जीमडी/आ फड बजार
आपरा—आपर—वापरा ।



मार्गे धरती री पिछाण

भ्रमूर्तसिंह पवार

जिण वन भूल न जावता गद गवय गिडराज
तिण वन जनुत्र ताखडा उधम मड है आज ।'
आ वात साव साची ह
जिण धरती री पिछाण नारा री गजना सू व्हत्तो ही
जरजुन अ'र भीम री दवाल सू धरती घूजती ही
वा गगा ओर जमना री धरती
वा गोतम और गोविंदा री धरती
वा जडिग हिमालय री तपस्या री धरती
आज सियाल्या भरी कूकाड जर लपलपावती
जीव रा नजारो दरसाव ह ।
राणा प्रताप, भगतसिंह अर छत्रपति री देस
आज दिसा भ्रमित हैग्यी है ।
वा देस जठ—
बेटा बाप र प्रण खातर
घास री राटी न अन समभता हा
नक्ली दुरग न बचावण खातर सबक
आपरो जीव होम कर दता हा
धाय मा धरम र खातर
आप र बटा न मरवाती ही
तद वा जामण जायी माँ सू माटी व्हे जाती ही
वी वगत आन बान अर सान प मरणा
धरम री पली लकीर ही
पण आज—
निहत्या मिनखा री लाही बहावणा

शान अ'र मान री बात बणणी है ।
 जिण खेता म मूग मोठ अर गहू
 री सुगंध आवती ही
 उण खेता मे अब वाहद अर ब'दूका
 उगण लागी है ।
 जिण मन्दिरा म गुरु नानक अ'र गोवि तसिहजी
 री गुरुवाणी मू जती ही
 वठे अबे ब'दूका री धाय धाय
 अर निहत्था री चित्तारा मू मूज ह
 मन्दिर अब मुरदाघर बन गया हे ।
 कुण जाणै कुण गमा र उदगम सात म
 जर री पोटली घर दीती है
 मो सगली जर चारू खट
 फलता जा रीयो ह
 भारत माता र लिलाट प
 लाग्याडो लोई री दाग
 कुण जाणै, कुण धासी
 कुण धासी !



लोभ

द्वीपचन्द सुधार

जब डाकरी र
 आखरी जात्रा री तयारी
 बट रयी ही—
 सीडी मूयता घना
 लाग वाग
 आपम म बाती करता
 व निया हा, व—
 च' चाय म मिलावट कर

सूखा लाग ठूठ रवे ना जाणी जाणी
 भिनसपण र पाण रय ह ऊजळो पाणी ।
 मद छत्रिया मतवाळा वादळिया आभै मटरावै ह,
 तिरसी धरती टुक टुक जोव बी न क्यू तरसावै ह ।
 उमड घुमड जद मेह वरमना मोवळा
 प्यारा बुभावण धरती री वा मावण सरमावै है ।
 आप चाया वित्तरी करा आना वानी,
 आप चाया जितरी करा मन मानी ।
 म्हानै ता मानव मू संवट हत घणा
 दूध ता दूध टुव, पाणी आखर पाणी ।



गळगचिया

दीनदयाल शर्मा

कसम

उत्पादनता धरस न
 राफळ वणाण री
 वण अबरी कराम खाद
 ब्याव हायता'ई
 टावरा री
 लूठी लण लगई ।

सीस

घाटा सा'र
 सगळ घधा माय
 ज तू सुद घुट गया ह भूल
 ता भायला
 घाट रा क वाम
 जनमस्या खानी दस
 जर
 भट खाल इस्कूल ।



लखपति बहंग्या
 'म मसाला म माटी मिलाय'र
 कराडपति बहंग्या
 द' अर घ री बाता
 द्रापदी रो चीर बह रयी ही
 दाय दिना री जिदगाणी
 पण~
 काळ कारनामा री
 जाण
 लिस्ट आउण्ट बट रयी ही ।
 सुण सुण-
 कान हाथ माय आग्या
 मनड रें विचारा न
 वाली दर नाग डसग्या
 फेर भी माच्या—
 वठई—
 वाई रिमपत री तालवासा ह
 या पछ
 मिनला जूण म
 रिपिया पईसा रा ईज—
 रात र दिन ताता ह ।



चौपद्या

शिवराज छगाणी

मानसो तरमै मिनस र प्रेम र खातर
 पानडो खडवे बिरछ र नह र खातर ।
 मटदया दुख-दरद मुळगी लाय न
 बाळजो तरम ६ ठडी पून र खातर ।
 बधता जाव रुग, मिळ जद निरमळ पाणा,
 बधतो जाव माण बानिया मोठी बाणी ।

भूया लाग ठूठ, रव ना आणी जाणी
 मिनसपण र पाण रव है ऊजळा पाणी ।
 मद छत्रिया मतवाळा बादळिया आम मडराव ह,
 तिरमी धरती दुव दुव जोव वी न क्यू तरसाव ह ।
 उमड घुमड जद मह बरमला मोकळा
 प्यास बुभावण धरती री बा सावण सरसाव हे ।
 आप चावा जिनरी करा जाना चानी,
 आप चावो जितरी करा मन-मानी ।
 म्हान तो मान्य सू सवट हत घणा,
 दूध ता दूध दूब, पाणी आवर पाणी ।



गळगच्चिया

दीनदयाल शर्मा

कसम

उत्पादवना बरस न
 सफल वणाण री
 वण जबरी कराम छार
 ब्याव हायता'ई
 टाबरा री
 लूठी लण लगई ।

सीख

घाटा त्वा'र
 सगळ घधा माय
 जे तू सुद बुद गयो है भून
 ता भायला
 घाट रा क काम
 जनसख्या रानी देव
 जर
 भट त्वाल इस्कुल ।



गिदगिद्या

दीनदयाल शर्मा 'दिनेश्वर'

नेता बणगो

नेता र छारे ने
जणा माठर जी ठोऱ्या
नता जी दाकळ दी
अर टाक्यो
टीगर नै क्यू मार ।
माठर बोल्यो—
इण न मिनख बणावण खातर
सीख देव हा
पण आ कठ लव हा
बस धर दी ।
नेताजी जरडाया
मरा छारा मेरी तर
नेता बणगो
मिनख बण'र
तेरी तर भूख नी मरगो ।



नानक्या

श्रोम पुरोहित 'कागद'

काळ

धका दाणा
भूख मरण रा खन
मन्त्री रा पयटन ।

टोपी

महात्मा गांधी रो मजाक
राजनीति रा दही गडियो ।

समाजवाद

नतावा रा दाळ भात
ना मिज ना बन ई घाले
बरसा रो अपवाद ।

कानून

सरकारी साड
मार जब नै मार
छोडे जब न द्दाड ।

पढाई

अरारोट री मळाई
परत उतारता जावो र
मेवता जावा
ना वाम आय
ना उतारया मरे ।

सै'र

भूया मिनस भेळा वरण रो ठाव
म र रा म र'र गाव रा गांव ।

बजट

नीद माय सूत्यां धवा
ध्यायोडी भम
जकी पाडो इ त्याय पाडी नी ।

धुरसी

राजनीति री नूठी चाती
जकी
चिप्या पछ
मरया ई उतर ।

चुनाव

भूय रा वखाण
नतावा रा गगा मिनान
अर
जनता रो प्रियाकरम ।



क्षणिकावा

घनश्याम राकावत

बास

म्ह वास को
पूरो पूगे ध्यान राखू
भगी सू बात करता
नाक भीच अर
माम रोवया राखू ।

घन महोत्सव

उध रोपण र त्ति
खूव पीघा रोपे
पण जाकी रा त्तिना
आना लकडा री कटाई म
कायला कानून मामूदा लोप ।

मूंडो

टेम उटेम
ठानो भूना आता
माथो ढणव गावे ।
पण कटारा रा
मूंडो दगता
मूणे ही उरन जाव ।

□

अध्यापक

गरणपत सिंह

कवीर रवी र कस्यी हा
अध्यापन वो त्विवा ३
गा मुद्र ज ७ र

बीजा मिंगा १ उजागा देर ।
 जला ना मँ नी ही,
 रास्टर रा नाम प ।
 प्यादा मू फरती रण्वा
 साध्या री छनांग प ।
 मातहन मू उँचो प
 पायप रा कमात प ।
 पर मू कर'र म्
 उजाला बीजा मिंगा १
 देवण री बजाय,
 गुन र मूड माथ पेर तेयां हा ।
 अर वारां पजा मू
 आँन्यां मीन
 अधरा १ गूती तयां हा ।



अन्योक्ति

श्याम सुन्दर श्रीपत

चन्द्रमा री फिरणां माथ
 काळ रा रग चडं तीरी
 अयायी रावण र बल मू
 मतवादी राम मर वीनी
 उगताडे मूरज र आगळ
 रजती रो रोग र्व वीनी
 विण सावणिय मिय सकर १
 रामग रा जे र चर वीनी
 करणे वोई कासीसा गोडा
 मनसां रो मोन घट वीनी
 पापीडा गोवे पन सुद री
 वचन न वाट लग वीनी



आपने मिलने नू

मालचन्द्र कमल

मौसम का रक्त किया मय अरुण आपर मिलने नू
वीर्य का मिया उता मरुभ आपर मिलने नू ।
विजयानी म दायानी ही मरुदिमा ही बाह्यिया ,
नर मिया मुयरा रग आपर मिलने नू ।
रुच्य पुत्रता हा हा ता रक्त निरामा ही मरुत म
गुपता र रक्त मिया वग आपर मिलने नू ।
मिमरुयानी ही मरुदिमा रक्तया ही निरुरी म
मरुत मिया मय हा आपर मिलने नू ।
मरुते रक्तया मय रक्त मोटा मा मरुयान
रक्त मिया मय वग आपर मिलने नू ।

□

गजल

अर्जुन 'अरविन्द'

घेरा पर त्मक रहया रूप ग उजाळा
पण वाजळ री वीर सा मन होया वाळा ।
टावरा री फीज वधी मायड रोगनी
मूता रहव रात दन सड म हखाळा ।
जट जद दीठ उठ मनमा री भीड पर
दीसे जिनगाणी पर माकडी रा जाळा ।
रामनामी ओढ मुळव गुरडाता पाप
मत्ती चूतर हाव कुळटा रा चाळा ।
माच री रगत मिनम्यो रा रोज चाट
आम्बर माथ दुवें वेंम रा वटनाळा ।
अगन री गेल उणी मूम री प्रसाभ्या
कितणा पग चाल मव मिनम्या मतवाळा ।

□

कुण केव ?

श्री श्री घोष

कुण केव, क वे म्हान मिले कोयनी
मिले ता है पण वान हाव वायनी ।
कुण केव क वे साच बोले वायनी
साच बोल तो है, पण ताग मान कोयनी ।
कुण केव क व भणे गुणे कोयनी
भणे गुणे तो है, पण लक्षण आवे कोयनी ।
कुण केव, क वे लडाई लड कोयनी,
लडाई नड तो है पण लोका न दीस वायनी ।
कुण केव क व रिमवत लव कोयनी,
रिमवत लेव ता है पण हाथ माड वायनी ।

□

निरन्धेमा रा रगत रहावे
 जात पात रा भरमी नारा
 हाथ पांव री तास्त शाम
 अं आत्मग न पाळ पाग
 अं उम रीता गात्र प्रजावे
 तेव रहणा राम आराम
 म्हू पूछू जुग रा भागीरथ ।
 बद आय गगा नारा म ?
 तारां म बद निपज पमना,
 मीला कष्ट जान नारा म् ?

नारां न तज उठ नारायण
 नर रा भाग थन तडे है
 पाड पाळजा अधवार री
 तेग भाण कितरा नडे है ।

उठा युदानी मायळ भारी
 और आजमा तावत थारी
 पुम्मारथ र पाण बोसले
 दण दुविधा मू सुविधा मारी ।



हेलो दे धरती माता गेत मे

धनञ्जय वर्मा

भाभर'व री वला गूजी भरवी
 जागो रे बरसा हलो दे धरती माता खेत म ।
 पो—पाटी मुक्काव विरणा जागती,
 जागो रे बरसा, बीजडला हाँस उजळी रेत मे ।
 पून चल पुरवाई, गाव चानणो
 आज रेत म गीतडला रो माँडणा ।
 खडी खडी खेती री काया हुसर
 जाग पडी है धरती मच सच मान जो ।)

ताविन्हे वरमाव सोनो जिन उग्यां,
 वाळिया वरमाव चादी ऊमस्यां ।
 नाज नाज निपज धरती री बूम्यु,
 अत्र ता जुगत नुव जीवण री दूदस्यां ।
 भर भर धोवा वाट दिया मुप आस न
 भर भर भोळी प्यार दिया रिमवास न ।
 ब्राति ब्राति रा उणीयारा रद एक सा,
 मन पूछ धरती पर हुयें विनाम न ।
 टेम टम री बात बदळगी आ घरा
 महल कहावण जाग्या मूना टापरा ।
 धन दौलत र पट चट्यो है जाफरा
 पळ गरीबी रा अत्र छोरा छापरा ।
 भाँवर'व बळा गूजी भरबी
 जागा रे करमा हेला द धरती माता मत मे ।

बटाऊ चालतो रीज

रामनिवास सोनी

बटाऊ चालतो रीज,
 उगत री वेकळू मायें अमर मनाण घर दीज ।
 गरजता बायरा वाज
 समदर मीत सा गाज ।
 पळापळ बीज भपकारें
 मिनख मरजाट जद लाज ।
 अधार पथ पर जुग रा नुओ निरभाण थरपीज ।
 गिगन मू माग मत मोती
 जगा रे मायली जोती ।
 परखल प्रीत रो पाणी
 वळी री पाखडी राती ॥
 वण ता विरण आम री पलव इतिहास गरवीज ।

रगै ता मोस रर ज्यावे ।
 भुन तो नाड भुव ज्याव ।
 युभ तो प्रीतडी ताज ।
 थव सिणगार थर ज्यावे ॥
 जलम सू भीत रा गनी वठे बवार मत बीज ॥
 बटाऊ चालतो रीज ।
 बटाऊ चालतो रीज ।

माणम

कल्याण सिंह राजावत

माणस ! तू पारम गागाडो जीवण न गाना सू भर ल
 अवे ननी पाग्वर सरवर बे, तू तो सात ममदर तर ल
 धारा हेंसणी, मन हरवाई
 धारो भाणो गरव गमाई
 तू गुसिया रा बडो सजाना-
 धार हाथा घणी बमाई
 जीत सदा धारी अगवाणी, सातर पातर बमतर वर ल
 तू सौरभ री साल बधाई
 रगा री मफल महवाई
 धारी नासा मरगम रा सुर-
 पर सचा, परसव बहाई
 दूजा र हित जापा मटी, इतरी बात हिमा म धर ल
 तू हाभळजे हत' हताई
 साची साल सनह सगाई
 प्रीत पाळ परतख प्राणी सू-
 साग सरसी सत सवळाई
 गुण सू गरज, गरज गुणी जन सू, गिण गिण आगण सारा चर लै
 वाटा सू बळिया चुण त्यायी
 भाटा सू माणव विण त्याई

जहर भरो जगती रँ मातर
 मरत रा गो घर भर ल्याइ
 गुग रा साज नजावण भापी जण जण रा तू मरुट हर ल
 माणस ' तू पारस साचाडी, जीवण न साना तू भर ल ।



गीत

केशव पयिक

वाळी वाळी बकरघाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।

सगा स्नही मिलवा भाया ।

टावर टाळी लारा जाया ॥

मण जाटा रा राटा पाया ।

चट वरग्या मोटघार ॥

वाळी वाळी बकरघाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।

गळी गळी म घुसग्या चार ।

ल भाग नत ढाण्डा डार ॥

राव ह वरसाण चापडा ।

मचग्या हा हाकार ॥

वाळी वाळी बकरघाँ, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।

लकडी मूगी मूगा तल ।

टक्कराव नत मोटर रेल ।

वाड खेत न खावा चाली ।

मिनस जुण वकार ॥

काळी काळी बकरिया, दूधा धार, सौगन उतरधा गगा पार ।

सूना दीख जठ रावळा ।

मभ दुपरा पड कावळा ॥

हाकम नत दीडा जावें ॥

गाव — मगलाचार ॥

वाळी वाळी बकरघाँ दूधा धार सौगन उतरधा गगा पार ।

अठ मिनस न मिनस डराव ।

वात वात प धु
 बलजुग थारी तार
 ब्येगी तय जयकार

वाळी वाळी वकरधां, दूधा धार सीमन उतरधा मगा पार ।

□

अम्बर सू पसीनो वरसं रै

भवर लाल गूजर "छैल"

चम चम चमक बिजळया, अम्बर सू पसीना वरस र ।
 गड गड गरज वादळया, सुण बरसा री मन हरस र ॥
 बाध मयो हाल बीजणा, पाळा चाल पगडडी ।
 सन सन वर सनाटो मार खेता मे फुल्वा ठडी ॥
 गड गड गरज वादळया, सुण सारग बन म नाच र ।
 चम चम चमक बिजळया अम्बर सू पसीना वरस र ॥
 हाल सुरगो धरती चीर कोयल गाव गीतडली ।
 प्रीत बीज धरती न बीर, प्रेम पाग की प्रीतडली ॥
 नारा धुघरिया गाव, देश प्रेम की बोली र ।
 चम चम चमक बिजळया अम्बर सू पसीनो वरस र ॥
 गौरी हाथ कलवो आया, हाडी माही रावडी ।
 वाजरिया री रोटी खाता, प्यारी चाल जावडी ॥
 छम छम करती छमका मार, पायल म्हारी धरता र ।
 चम चम चमक बिजळया अम्बर सू पसीनो वरसं र ॥
 तज तावडां गौरी न करदी, कामल फूल सी बुमळघाडी ।
 रहटिया टकारा मार ज्या प्रेम वादळी उमडघोडी ॥
 पळ खळ खळक पाणीडो, खेजडली री छाया र ।
 चम चम चमक बिजळयो, अम्बर सू पसीना वरस र ॥
 गीत सुरगा गाव गोरी, लावण वरती खेत म ।
 घणो धान निपजायो धीणा, इं धरती री रेत म ॥
 छण छण छणक दादडली ज्या 'छल चमकणी चादी र ।
 चम चम चमक बिजळया, अम्बर सू पसीना वरस र ॥

कोयल स्यू

निशान्त

माया तू
बडा मीठी गाव्य है
पर थारी अवाज ग साथ
जाण जाळी
जमीदार ग वाग गी याद
साराकि गड बडा जाव ह
म्ह रेह जावा ह
उदास गा उदास
छाडता ठटी सास ।



म्ह अधेरे नै गळै लगाऊ

सत्य शकुन

दीर्घ री बापती जात
म्हन कई टुकडा म बाट द
ई खातर म्ह अधेरे न गळ लगाऊ
उजास न दूर राखू
मन री बात मूडा माथ नी लाऊ
जतस रा भाव, अतस मे राखू
सबदा न वार नी जावण दू
वयू क—म्ह जाणू हू
अ तम मू साच निकळ
जीकि धार बटी पनी हुव
वो ववण वाळ न
जर मुणण वाळ न
टुकडा टुकडा म बाट द

ट सातर म्ह अधेरे न गळ लगाऊ
 म्ह जाणू—जा वात साटी है
 पण हूँ इसी जु भार वाणी
 व साच मू—
 आपण लोगा मू—
 अर खुद मू—जुभ सवू
 वयू व इ जमान म
 लाग मगळीक वाता न पसद वर है
 अर वो साच म वठ है
 सो मम साम्
 म्ह अधेरे मू लगान रागू
 ई सातर म्ह अधर न गळ लगाऊ।



लिछमी

कमला जैन

लिछमी मुळक मुळक करती
 रणभुण चढगी तू महला म।
 या ऊची हत्या र बीचे
 टापरियो रहयो वगना म,
 अरिया नीची वर निसरी
 घर छट गयो हा गला म।

लिछमी

वे बाग माटा सठ घणा
 म्हावी गिणती ह वरसा मे
 दीखे धोळा बुगला जीस्या
 साट घणा पर मनसा म
 म्ह लोइ पसीना एव वरा
 थू भरगी वारा धेला न।
 लिछमी

वारा कानी ए दोस घणा,
 जा दास बायरा पाणी मे,
 सव पूछे कुरसी टवल न
 कुण धठे रीत आगण म,
 बायल रा भरता साग वागळा
 भरम जगाळे सावण म ।

लिच्छमी

म्हं ता इत्ती ही अरज करा
 तू जाया जा पर चावस म
 आवासा म चढती जा
 पण पगल्या रसी धरती म
 वाळा म वाळी हा जासी
 रग म नी पण लखणा मे ।
 लिच्छमी



नानजी डामोर

शशिकांत दशोरा

तलवाडा ना नानजी डामोर जमकुडी ले लोर
 नानजी ने तो वारह बईयर, जमकुडी ले लोर
 वारह म एक टुटी बईयर जमकुडी ले लोर
 टुटी बईयर कडल मागें, जमकुडी ले लोर
 वानकता जवातु नथी, कडल लवात नथी, टुटी ने म्हारो
 जिवडा लिपो, जमकुडी ले लोर

तलवाडा ना

वारह म एक बुसरी बईयर जमकुडी ले लोर
 बुसरी बईयर नथडी माग जमकुडी ले लोर
 नागपुर जवातु नथी नथडी लवाती नथी बुसरी न म्हारो
 जिवडा लिपो जमकुडी ले लोर

तलवाडा ना

धारह म एव वरी रईयर, जमनुडी ल सार
 वरी वईयर रेडिया मामें जमनुडी ले सार
 बम्बई जयातु नथी, रडिया लवातु नथी वरी ने म्हारा
 जिबटा लिदा जमनुडी ल सार
 तलवाटा ना



सपना सजोती म्हारी आंधळी इच्छावा

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

दनता गुरज री वळा ने
 समभा उगतडा परभात ता रामभा
 म्हाने वाई
 वगत री वात
 अर मम रा आसू
 गुण दत्ते
 सागळा धरम वरम न रामजी लेख
 गीता रा उपगशा म
 अणूता जरव बाचा तो बाचा
 म्हान काइ ।
 म्ह सजा री सळवटा ने
 सूनी आख्या सू निहारू ता निहारू बठे ताई
 ठा कोनी व
 वद हिया म वळती हुटाळ
 वण जावे
 वगत री वात
 जमाना री रामायण गीता
 वस्या तो
 म्ह आज भी वरू हूं
 अ धारा सू अरदास
 अर उजाला सू प्रीत

वारा कानी ए दोस घणा,
 जा दोस बायरा पाणी म,
 सब पूछे कुरसी टेवल ने,
 कुण वठे रीत जागण म,
 वीयल रा भरता साग वागळ
 भरम जगाळे सावण
 लिछमी

म्ह ता इती ही
 तू जाया जा पर
 जावासा म
 पण पगत्या
 वाळा म वा
 रग म नी
 लिछमी

□

नानजी डामोर

शशिकान्त दशोरा

तलवाडा ना नानजी डामा
 नानजी न ता बारह वईय
 बारह म एक टुटी
 टुटी वईयर वडल
 कलकता जवातु नथी वडल लवात
 जिवडो लिदा, जमकुडी ल लोर
 तलवाडा ना
 बारह म एक वुसरी वईय
 वुसरी वईयर नथडी माग
 नागपुर जवातु नथी नथडी लवाती नथी, ७
 जिवडो लिदा, जमकुडी ल लार
 तलवाडा ना

बारह म एत वरी वईयर, जमकुडी ल लोर
 वरी वईयर रगिया मार्गे जमकुडी ल लार
 बम्बई जवातु नधी रगिया लवातु नयी, वरी न म्हारी
 जिवडा लिदा जमकुडी ल लार
 तलवाडा ना



सपना सजोती म्हारी आंधळी इच्छावा

नन्दकिशोर चतुर्वेदी

ढनता मूरज री वळा ने
 ममभा उगतटा परभात ता ममभा
 म्हाने वाई
 वगत री वात
 अर मम रा आसू
 गुण दग
 समळा धरम करम त रामागी लग
 गीता रा उपदेश म
 अणूना अरथ वाचा तो वाचा
 म्हान वाइ ।
 म्ह मजा री सळवटा ने
 मूनी आम्या सू निहाए ता निहाए वठे ताइ
 टा वानी व
 मद हिया म वळती हळाळ
 वण जावं
 वगत री वात
 जमाना री रामायण गीता
 वस्या तो
 म्ह आज भी वर हूँ
 अंधारा सू अरदास
 अर उजाला सू प्रीत

पण

जम जावें वगत रा नावळा वायरिया
खुल जाव भरम री गाठ
ता आछयो'ज है
जाज तलक ती
सूती मेडचा री ताव म
बळता दीवला रा मँदरा प्रकाश म
सपना सजाती कामतण सी
म्हारी जाधली इच्छावा
भविष्य रा सपना म गळगळ हा जाय
जर दीवळा री पातळी लौ
आशा री आभा बिजळ वण जाव
पण वगत रा सरकटटा
कद गाबा वदळ आ जाव
इच्छावा रा घाडेती वण
यू तो च्याह मर
छम छमाट करे रात री राणी
कदया कदया ही'ज वाले
पाघट री ढाणी
पण घणी मीठी लाग
आज भी व्ह उचकता जाखर
भागता भागता व्ह जावे
हत री वाणी
पण पाउ'डे पाउ'डे ऊभी
जोखम री बाड ने
क्रिया उलाघू क्रिया उलाघू ।

□□

लेखका रा ठिकाणा

- 1 नसिह राजपुरोहित, खण्डप (वाडमेर)
- 2 भँवरलाल 'भ्रमर' भ्रमर निवृज ईदगाह बारी बीकानेर
- 3 शिव मृदुल, बी-8 मीरानगर चित्तौडगढ
- 4 हनुमानसिंह पूनिया शिक्षक रा उ प्रा वि ऊपनी (चूरू)
- 5 छगनलाल व्यास रा मा वि, खण्डप (वाडमेर)
- 6 वृष्ण कुमार कौशिक, पयवेशक, प्रौढ शिक्षा नोहर (गगानगर)
- 7 भीखालाल व्यास प्रधानाध्यापक रा मा वि, अजीत (वाडमेर)
- 8 रामस्वप पेशे पीरामल उच्च मा विद्यालय बगड (भु-भुनू)
- 9 पुष्पलता कश्यप हनुमान मन्दिर कचहरी पा आ वे पास जोधपुर
- 10 मुहम्मद कुरशी प्रधानाध्यापक, रा मा वि करवेडी (अजमेर)
- 11 मीठालाल खत्री प्रधानाध्यापक रा उ प्रा वि चौराऊ (जालौर)
- 12 जनक राज पारीक, प्रधानाचार्य, पानज्योति उ मा वि श्री करणपुर (गगानगर)
- 13 रूपसिंह राठौड, रा उ मा वि,, बास घासीराम, बाया अलसीसर (भु भुनू)
- 14 अरविंद चूरुवी रा उ मा वि रतननगर (चूरू)
- 15 माधव नागना, रा उ मा वि राजमम द (उदयपुर)
- 16 ओमदत्त जाशी, प्रधानाध्यापक रा प्रा वि, ओडान चौक ब्यावर (अजमेर)
- 17 अमोलकचंद जागिड, सेठ दु जटिया रा उ मा वि बिसाऊ (भुभुनू)
- 18 त्रिलोक गोयल, अग्रवाल उ मा वि, अजमेर
- 19 मावर दइया उप डाक घर के सामने जेल रा न बीकानेर
- 20 छाजूलाल जागिड, प्रधानाध्यापक, रा उ प्रा वि मण्डेला (भु-भुनू)
- 21 सोहनलाल प्रजापति, रा प्रा वि न 11 सुजानगड (चूरू)
- 22 नानूराम सस्कर्ता कालू (बीकानेर)
- 23 ए बी कमल, नेहरू चौक, शीतला गेट, बीकानेर
- 24 रामेश्वरदयाल श्रीमाली, प्रधानाध्यापक, रा मा वि माडवला (जालौर)
- 25 सुमेरसिंह शेखावत, सरवडी सदन, आनन्दनगर सीकर
- 26 वासुदेव चतुर्वेदी एस आई ई आर टी सहली माग, उदयपुर

- 27 जितेंद्रशंकर बजाड, भीचोर (चित्तौडगढ़)
- 28 रमेश 'मयक', प्रधानाध्यापक रा मा वि भियाड (वाडमेर)
- 29 हृदयचंद कांत 13 बी ब्लॉक, श्री वरुणपुर (गगानगर)
- 30 सुरेंद्र अचल वृष्ट्या कालोनी व्यावर (अजमेर)
- 31 जयोक कुमार त्वे द्वारा श्री नत्थूमिह वर्मा प्लॉट न 730 ए फ्लॉट 'सी राड सरदापुरा जोधपुर
- 32 तारामिह रा उ मा वि दूधवाखारा (चूरू)
- 33 मोहम्मद सलीक स प्रधान राज सादुन उ मा वि बीकानेर
- 34 जगन्नाथ सिंह पेंवार रा उ प्रा वि महिला बाग जाधपुर
- 35 दीपचंद सुथार भेडता सिटी (नागौर)
- 36 शिवराज छगणो नत्थूसर गट, बीकानेर
- 37 दीनन्याल शर्मा, रा मा वि, मकनासर (श्रीगगानगर)
- 38 ओम पुरोहित 'कागद', 24 दुगा कालोनी हनुमानगढ़ सगम (श्रीगगानगर)
- 39 धनश्याम राकावत प्रधानाध्यापक रा मा वि, गूलर (नागौर)
- 40 गणपतिमिह प्रधानाध्यापक रा मा वि गूगा (वाडमेर)
- 41 श्यामसुंदर श्रीपत प्रधानाचार्य, अ ग सा गोपा हा स, जसलमेर
- 42 मालचंद्र कमल, प्रधानाध्यापक रा मा वि, टसकोला (जयपुर)
- 43 गोविंद बल्लभ प्रधानाध्यापक रा उ प्रा वि सरदारपुरा जाधपुर
- 44 अजुन 'अरवि द', काली पल्टन रोड टाक
- 45 श्री श्री घाव भुग प गली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
- 46 विश्वम्भरप्रसाद शर्मा रा पी सी डी उ मा वि, मुजानगर (चूरू)
- 47 भगवतीनाथ व्यास, 35 फतेहपुरा, खारोल धमती उज्जयपुर
- 48 धनजय वमा नगर परिषद के मामले बीकानेर
- 49 रामनिवास सोनी काली जी का चौक, लाटनू (नागौर)
- 50 कल्याणसिंह राजावत 53 शिल्प कालोनी, भ्वाटवाडा जयपुर
- 51 केशव पथिक, रा उ प्रा वि (कचहरी) कपामन (चित्तौडगढ़)
- 52 नवरत्नलाल गूजर 'छल' सी 70, रामनगर कालोनी, शास्त्रीनगर जयपुर
- 53 निशांत द्वारा बसंतलाल हमराज पीलीबंगा (श्रीगगानगर)
- 54 सत्य शकुन, हनुमानहत्या, बीकानेर
- 55 कमला जन ग उ मा वि गिल्लूण्ड (उदयपुर)
- 56 शशिकांत दशोरा रा मा वि देवठ (डूंगरपुर)
- 57 नंद किशोर चतुर्वेदी पाछु दा बाया गेम (चित्तौडगढ़)

शिक्षक दिवस प्रकाशनो की सूची

वर्ष 1967 से 1973 तक दस योजना व अंतगत 31 मकलन प्रकाशित किये गये हैं। व 31 प्रकाशन शिक्षा निदेशालय व प्रकाशन अनुभाग ने सम्पादित किये हैं। 1974 में सक्लना का सम्पादन भारतीय रयाति के लरका से करवाया गया। बाद के सम्पूण मकलना का विवरण इस प्रकार है—

- 1974 राशनी बाँट दो' (कविता) म रामदेव आचाय, अपने जास पाम' (कहानी) म मणि मधुकर, रम रम बहुरग' (कहानी) म डॉ राजाजद 'अधी अर आस्था' व 'भगवान महावीर' (राजस्थानी उपयास) म यादवेन्द्र शर्मा 'चंद्र' 'वारमडी (राजस्थानी विविधा) म वेद व्याम।
- 1975 'अपन मे बाहर अपन म (कविता) म मगल मबमाता, 'एक जीर अत रिश (कहानी) म डॉ नवतविशोर मभाळ (राजस्थानी कहानी) म विजयदान देषा 'स्वर्ग भष्ट' (उपयास) व भगवती प्रसाद व्याम स डॉ रामनरेश मिश्र, विविधा' म राजे द्र शमा।
- 1976 'इस बार' (कविता) म नद चतुर्वेणी, 'मकल्प स्वरा के (कविता) स हरीश भागनी, 'बरगद की छाया' (कहानी) म डा विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, 'चेहरा के बीच' (कहानी व नाटक) म योगेन्द्र किसलय, 'माध्यम' (विविधा) स विश्वनाथ सचदेव।
- 1977 'मृजन के आयाम' (त्रिव घ) म डॉ देवीप्रसाद गुप्त 'क्या (कहानी व लघु उपयास) स श्रवणकुमार 'चेते रा चितराम (राजस्थानी विविधा) म डॉ नारायणसिंह भाटी समय के सलम' (कविता) स जुगमदिरतापल, 'रग वितान' (नाटक) म सुधा राजहस।
- 1978 'अंधेरे के नाम सधि पत्र नही' (कहानी सक्लन) स हिमाशु जोशी लम्बाण' (राजस्थानी विविधा) स रावल सारस्वत 'रचेगा मगीत' (कविता मकलन) म नदविशोर आचाय, 'दो गाँव (उपयास) लेखक मुकारब खान आजाद, स डॉ आलण मससेना, 'अभि यक्ति की तलाश' (निबन्ध) स डा रामगोपाल गोयन।
- 1979 एक कदम आगे (कहानी मकलन) स ममता कालिया, 'लगभग जीवन' (कविता सक्लन) म लीलाधर जगूडी, 'जीवन यात्रा का कोलाज न ?'

(हिन्दी विविधा) म डा जगदीश जोशी 'कीरणी मलमरी' (राजस्थानी विविधा) स जनाराम मुदामा यह किताब बच्चा की' (बाल साहित्य) स डा हरिकृष्ण देवसरे ।

- 1980 'पानी की लकीर (कवितासकलन) म अमृता प्रीतम, 'प्रयाम (रत्नी सकलन) स शिवानी, मजूपा (हिंदी विविधा) म राकेश जन 'जतस रा जाखर (राजस्थानी विविधा) म नसिंह राजपुरोहित 'गिलत रह गुलाब' (बाल साहित्य) म जयप्रकाश भारती ।
- 1981 'जधेरा का हिसाब (कवितासकलन) म सर्वेश्वर दयाल मन्मोना, 'अपने से परे (कहानी सकलन) म मन् भण्डारी 'एक दुनिया बच्चों की (बाल साहित्य) स पुष्पा भारती 'सिरजण' (राजस्थानी विविधा) म तेजसिंह जोधा, बंदे मातरम्' (हिंदी विविधा) म विवेकी राय ।
- 1982 'धमक्षेत्रे कुम्भक्षेत्रे' (कहानी सकलन) म मृणाल पाण्डे, 'कौमी एकता की तनाश और अय रचनायें' (हिंदी विविधा) म शिवरतन थानवी, 'अपना अपना आकाश' (कविता सकलन) म जगदीश चतुर्वेदी 'बूपळ (राजस्थानी विविधा) म कल्याण सिंह शेषावत 'फूला के य रंग' (बाल साहित्य) लक्ष्मीचंद्र गुप्त ।
- 1983 'भीतर बाहर' (कहानी सकलन) म मृदुला गग 'रेती के रात दिन' (हिन्दी विविधा) म प्रभाकर माचवे घायल मुठ्ठी का दद (कविता सकलन) स डा प्रकाश जातुर 'पाखुरिया माटी की' (बाल साहित्य) स बहेयाताल 7 दन हिवड रोडजास' (राजस्थानी विविधा) म श्रीनाल नथमल जाशी ।
- 1984 'अपना अपना दामन (कहानी सकलन) म मजुल भगत, 'घस्तुमिति' (कवितासकलन) म गिरर राठी सचयनिका (विविधा) स यानवल्लभ गुरु 'फूल सारू पागडी (राजस्थानी) स शक्तिदान कविद्या 'सार फूल तुम्हार ह' (बाल साहित्य) म स्नेह अग्रवाल ।
- 1985 रास्त अपने अपन (कहानी संग्रह) स राजेन्द्र जवन्वी 'सुनो ओ ननी रेत नी' (कविता संग्रह) म बलदेव बशी 'बबूत की महक' (बाल साहित्य) स मस्तराम कपूर मह अचन के फूल' (हिंदी विविधा) म कमल विशोर गायनका 'माणक चौक' (राजस्थानी विविधा) म मनोहर शर्मा ।
- 1986 'ढाई अक्कर' (कहानी संग्रह) म आनमशाह खान, रेत का घर (कविता संग्रह) म प्रकाश जन 'रेत के रेत' (बाल साहित्य) स मनोहर प्रभाकर 'बूद बूद स्याही (हिंदी विविधा) स पुष्पात्मलाल तिवारी, रेत रा रेत' (राजस्थानी विविधा) म हीरालाल माहेश्वरी । □

10479

5-5-89

